9

रैवा

कक्षा 9 के लिए

हिंदी की अधिगम-सामग्री (R3)

R3HIND

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

9306 – रेवा
कक्षा 9 के लिए अधिगम-सामग्री (R3)

ISBN 978-93-5729-079-1

प्रथम संस्करण
जून 2026 ज्येष्ठ 1948

PD 50T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2026

₹ 75.00

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा सालासर इमेजिंग सिस्टम बी-19, सेक्टर-88, फेज़-2, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश-201305 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108 ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. वी. श्रीनिवासन*

मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी): *दीपक जैसवाल*

आवरण, चित्रांकन एवं ले-आउट
ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो भारतीय परिवेश पर आधारित हो और जिसमें देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा ज्ञान की परंपराओं को सीखने के सभी क्षेत्रों में सम्मिलित किया गया हो। भाषाओं, विशेषकर भारत की मूल भाषाओं का सुदृढ़ आधार, शिक्षार्थियों को समग्र भाषाई दक्षता विकसित करने में सहायता प्रदान करता है तथा उन्हें इक्कीसवीं सदी के अवसरों और चुनौतियों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने में सक्षम बनाता है। यह नीति पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों में शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने के लिए भाषा शिक्षा की केंद्रीय भूमिका को भी स्वीकार करती है।

इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023)* त्रिभाषा सूत्र की अनुशंसाओं के अनुसार भाषा-अधिगम के महत्व पर बल देती है। यह इस बात को रेखांकित करती है कि भारत की मूल भाषाओं को विद्यालयी पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षार्थियों के लिए सुलभ बनाया जाना चाहिए। ऐसा दृष्टिकोण संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करता है, सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाता है तथा शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य हमारे सभी विद्यार्थियों को कम-से-कम तीन भाषाएँ सीखने का अवसर प्रदान करना है, जिससे हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और संसाधनों का पूर्णतः लाभ उठाया जा सके। हमारी भाषाएँ हमारी मूल्यवान धरोहरों में से एक हैं। ये शिक्षा व्यवस्था के सहयोग से हमारे विद्यार्थियों को बहुभाषिक बनने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी कहा गया है कि इन तीन भाषाओं—R1, R2 और R3—में से कम-से-कम दो भाषाएँ भारत की मूल भाषाएँ होनी चाहिए। विद्यार्थियों को R1, R2 अथवा R3 के रूप में किन भाषाओं का विकल्प प्रदान किया जाएगा, इसका निर्णय राज्य सरकार या अन्य संबंधित संस्थाएँ करेंगी।

सभी विद्यार्थियों की रुचियों और आवश्यकताओं की पूर्ति करने, पठन की आदतों को प्रोत्साहित करने तथा R1, R2 और R3 के अंतर्गत सार्थक शैक्षणिक सहयोग प्रदान करने के लिए विविध प्रकार की स्रोत-सामग्री की आवश्यकता होती है।

कक्षा 9 के लिए प्रस्तुत यह अधिगम-सामग्री R3 भाषाओं के शिक्षण और अधिगम को सहयोग प्रदान करने हेतु विकसित की गई है। इसमें संबंधित भाषाओं की अद्वितीय विशेषताओं को सम्मिलित किया गया है तथा विभिन्न साहित्यिक विधाओं में परिलक्षित भारतीय संदर्भों की झलक प्रस्तुत की गई है। शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इस सामग्री के माध्यम से ज्ञान अर्जित करें, सृजनात्मक और समालोचनात्मक चिंतन का विकास करें तथा भारत की संस्कृति और विरासत के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करें। यह सामग्री, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023* की परिकल्पना तथा पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्यों के अनुरूप, समावेशी और बहुभाषिक शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से भी विकसित की गई है।

R3 स्तरीय भाषा-अधिगम के लिए निर्धारित विशिष्ट पाठ्यचर्या के लक्ष्य संप्रेषणीय दक्षता तथा भाषा एवं साहित्य की समझ विकसित करने पर केंद्रित हैं। माध्यमिक स्तर पर R3 के लिए अनुशंसित शिक्षण-पद्धतियों का उद्देश्य मौखिक अभिव्यक्ति, पठन तथा लेखन कौशलों को सुदृढ़ बनाना है। इस अधिगम-सामग्री से यह अपेक्षा की जाती है कि वह यथासंभव R1 और R2 की तरह आवश्यक भाषाई तथा साहित्यिक कौशलों के अनुरूप हों।

हम विद्यार्थियों की परिस्थितियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए R1, R2 और R3 के अंतर्गत विविध प्रकार की स्रोत-सामग्री उपलब्ध कराने की अपनी यात्रा को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

अधिगम-सामग्री R3 के विकास में शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित उच्च अधिकार प्राप्त कार्यबल (हाई-पावर्ड टास्क फोर्स) के सदस्यों द्वारा प्रदान किए गए अमूल्य सहयोग और मार्गदर्शन के लिए हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

हम उन सभी व्यक्तियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होंने R3 स्तरीय भाषाओं हेतु कक्षा 9 की अधिगम-सामग्री के विकास में योगदान दिया है। हमें आशा है कि यह सामग्री शिक्षार्थियों के भाषाई ज्ञान-भंडार को समृद्ध करने में सहायक सिद्ध होगी। शिक्षक और अभिभावक भी इसे शिक्षार्थियों को भारत की मूल भाषाओं से परिचित कराने के लिए एक उपयोगी स्रोत के रूप में पाएँगे।

हम आने वाले वर्षों में इस सामग्री को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सभी उपयोगकर्ताओं के सुझावों का स्वागत करते हैं।

दिनेश प्रसाद सकलानी

नई दिल्ली — *निदेशक*

जून 2026 — राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

अधिगम-सामग्री के विषय में

यह अधिगम-सामग्री कक्षा 9 में R3 स्तर की भाषा के शिक्षण एवं अधिगम को समर्थन प्रदान करने के लिए विकसित की गई है। इसके विकास का उद्देश्य शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए एक शैक्षिक स्रोत तैयार करना है, जिसका प्रयोग करके वे भाषा में संप्रेषणीय दक्षता, पठन-बोध, लेखन क्षमता, साहित्यिक सराहना, भाषिक जागरूकता तथा भाषा की सांस्कृतिक विशेषताओं से परिचित होने की क्षमता का विकास कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषी शिक्षा, भारत की मातृ एवं देशज भाषाओं के संवर्धन, शिक्षार्थियों के समग्र विकास तथा पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों में सार्थक भाषा-अधिगम पर विशेष बल देती है। यह बहुभाषिकता, राष्ट्रीय एकता और भारत की भाषाई विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए त्रिभाषा सूत्र के महत्व को भी पुनः रेखांकित करती है। इसी दृष्टिकोण के अनुरूप, *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023)* विभिन्न स्तरों में भाषाओं के अध्ययन के महत्व को उजागर करती है तथा भाषा-अधिगम के लिए पाठ्यचर्या लक्ष्य और दक्षताएँ निर्धारित करती है, जिनमें मध्य एवं माध्यमिक स्तर पर R1, R2 और R3 भाषाएँ भी सम्मिलित हैं। विद्यालयी पाठ्यचर्या में R1, R2 और R3 मिलकर शिक्षार्थियों के बहुभाषिक विकास में योगदान देती हैं। भाषा शिक्षा तथा तीन भाषाओं के अध्ययन के बारे में अधिक जानकारी के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित *एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023* के अध्याय 2–'भाषा शिक्षा' (पृष्ठ 215–247) का संदर्भ लें, जो निम्नलिखित वेबलिंक पर उपलब्ध है— https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE2023_May2026.pdf

अतः R3 भाषा के अध्ययन को पृथकता में नहीं देखा जाना चाहिए। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023* की व्यापक बहुभाषी दृष्टि का एक अभिन्न हिस्सा है, जिसके अंतर्गत शिक्षार्थियों को विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और ज्ञान-परंपराओं के प्रति सम्मान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। एक अतिरिक्त भारतीय भाषा का अध्ययन शिक्षार्थियों को देश के विविध क्षेत्रों, समुदायों, मौखिक परंपराओं, साहित्यिक विधाओं और जीवन-शैलियों से जुड़ने में सहायता कर सकता है। यह उनकी भाषाओं की तुलना करने, भाषाई संरचनाओं और प्रतिरूपों को समझने तथा भारत की बहुभाषिक विरासत की सराहना करने की क्षमता को भी सुदृढ़ बनाता है।

माध्यमिक स्तर पर R3 हेतु निर्धारित पाठ्यचर्या लक्ष्य और दक्षताएँ शिक्षार्थियों के पाठों को समझने और उनका सार प्रस्तुत करने की क्षमता, मौखिक एवं लिखित रूप में प्रभावी संप्रेषण कौशल, साहित्य की विभिन्न विधाओं की सराहना करने की क्षमता तथा सार्थक संदर्भों में भाषा की मूलभूत विशेषताओं को पहचानने और उनका प्रयोग करने की योग्यता के विकास पर केंद्रित हैं। इसी उद्देश्य से यह अधिगम-सामग्री तैयार की गई है, ताकि शिक्षार्थियों को श्रवण, वाचन, पठन, लेखन, साहित्यिक सराहना, शब्दावली विकास, संदर्भानुकूल व्याकरण प्रयोग तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त हो सकें।

भाषा-अधिगम शिक्षार्थियों के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह उन्हें संवाद करने, चिंतन करने, अपने विचारों को अभिव्यक्त करने, साहित्य की सराहना करने, संस्कृति को समझने तथा समाज में सार्थक रूप से सहभागिता करने में सक्षम बनाता है। प्रत्येक भाषा उपयोग करने वाले के विश्व-दृष्टिकोण, जीवन-अनुभवों, ज्ञान-परंपराओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करती है। भारत का बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश शिक्षार्थियों को भाषाई विविधता के प्रति सम्मान विकसित करने तथा विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और अभिव्यक्ति के विविध रूपों से जुड़ने के समृद्ध अवसर प्रदान करता है।

इस सामग्री का उपयोग कक्षा में सुगम तथा संदर्भ-संवेदनशील विधि से किया जा सकता है। शिक्षक मौखिक संवाद, परिचित शब्दों, सरल अभिव्यक्तियों, गीतों, कहानियों, कविताओं, संवादों, चित्रों तथा स्थानीय संदर्भों से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से शिक्षण की शुरुआत कर सकते हैं। शिक्षार्थियों को रटंत अधिगम की बजाय सार्थक गतिविधियों के माध्यम से सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह सामग्री चर्चा, भूमिका-अभिनय, कविता-पाठ, नाट्य-रूपांतरण, चित्र-वाचन, शब्दावली निर्माण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, सस्वर वाचन तथा संक्षिप्त संदेश, पत्र, वर्णन और सरल कथाएँ लिखने जैसी गतिविधियों के अवसर प्रदान करती है।

इस सामग्री में सम्मिलित पाठ शिक्षार्थियों को कहानियों, कविताओं, गद्य रचनाओं, संवादों और लेखन के अन्य रूपों जैसे विभिन्न साहित्यिक रूपों से परिचित होने में सहायता करते हैं। ये पाठ भाषा से जुड़े सामाजिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय जीवन की झलक भी प्रदान कर करते हैं। शिक्षक पाठों के विषयों से संबंधित प्रामाणिक चित्रों, स्थानीय गीतों, लोक साहित्य, मौखिक कथाओं, मानचित्रों, कला, शिल्प, दृश्य-श्रव्य सामग्री और अन्य विश्वसनीय संसाधनों का उपयोग करके कक्षा में होने वाली बातचीत को समृद्ध बनाते हैं।

अधिगम-सामग्री बहुभाषी सीखने का अवसर भी प्रदान करती है। शिक्षार्थियों को R3 भाषा और उन भाषाओं के बीच संबंध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है

Prelims.indd 6 25-06-2026 16:41:21

जिन्हें वे पहले से जानते हैं, जिनमें R1 और R2 सम्मिलित हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की मातृभाषा या अन्य परिचित भाषाओं का उपयोग उनकी समझ, शब्दावली विकास, लिपि से परिचित होने और अभिव्यक्ति में सहायता के लिए कर सकते हैं। बहुभाषी शब्दकोश, संदर्भ सामग्री, शब्द चार्ट और सरल तुलनात्मक भाषा गतिविधियों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

सामग्री में मौजूद चित्रों और दृश्य तत्वों का उपयोग शिक्षण उपकरणों के रूप में किया जाना चाहिए। ये बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने के कार्यों में सहायक हो सकते हैं, विशेष रूप से तब जब शिक्षार्थी किसी नई भाषा या लिपि से परिचित हो रहे हों। शिक्षक शिक्षार्थियों से चित्रों का वर्णन करने, वस्तुओं की पहचान करने, संवाद बनाने, घटनाओं का वर्णन करने, कहानी की रूपरेखा का अनुमान लगाने या चित्रों के आधार पर संक्षिप्त उत्तर लिखने के लिए कह सकते हैं।

कक्षा की गतिविधियाँ समावेशी और सहभागी होनी चाहिए। भाषाई परिचय के विभिन्न स्तरों वाले, सीखने की विभिन्न गति वाले और सीखने की भिन्न-भिन्न अवश्यकता वाले शिक्षार्थियों को सार्थक रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। विशेष ध्यान की आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों को अतिरिक्त सहायता प्रदान की जा सकती है। शिक्षक गतिविधियों को अनुकूलित कर सकते हैं, विद्यार्थियों को एक-दूसरे का सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, दृश्य साधनों का उपयोग कर सकते हैं, निर्देशों को दोहरा सकते हैं और शिक्षार्थियों को प्रतिक्रिया देने की कई विधियाँ प्रदान कर सकते हैं।

कक्षा की गतिविधियों के साथ आकलन का निर्धारण किया जाना चाहिए और यह आकलन संबंधित पाठ्यचर्या के लक्ष्यों और दक्षताओं के अनुरूप होना चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों की भाषा को सरल बनाने और सार्थक संदर्भों में समझने, संवाद करने और उपयोग करने की क्षमता पर केंद्रित होना चाहिए। आकलन गतिविधियों में मौखिक उत्तर, कहानी सुनाना, चित्र वर्णन, पठन बोध, लघु लेखन कार्य, भूमिका निर्वाह, समूह कार्य, प्रस्तुतियाँ, रचनात्मक लेखन और पोर्टफोलियो सम्मिलित हो सकते हैं। व्याकरण और शब्दावली का आकलन अलग-अलग रूप से करने के बजाय संदर्भ में किया जा सकता है। तथ्यात्मक और निष्कर्षात्मक प्रश्नों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा इस सामग्री का उपयोग एक प्रस्थान बिन्दु के रूप में किया जा सकता है। वे भाषा, साहित्य और संस्कृति से संबंधित आयु-उपयुक्त और प्रामाणिक संसाधनों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस सामग्री का उपयोग रुचिकर, समावेशी, बहुभाषी और विद्यार्थी-केंद्रित कक्षा वातावरण बनाने के लिए किया जा सकता है।

Prelims.indd 7 25-06-2026 16:41:21

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

अधिगम-सामग्री विकास दल

अंकित कुमार श्रीवास्तव, *व्याख्याता,* हिंदी, कोर एकेडमिक यूनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

अंजना, *अनुवादक*, हिंदी प्रकोष्ठ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

अक्षय कुमार दीक्षित, *टी.जी.टी.*, हिंदी, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अरविन्द कुमार झा, *पी.जी.टी.*, हिंदी, विभागाध्यक्ष, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली

गिरीश कुमार तिवारी, *सहायक आचार्य,* हिंदी, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

निशा जैन, *प्रवक्ता,* हिंदी, राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, स्कूल ब्लॉक शकरपुर, दिल्ली

विनोद 'प्रसून', *विभागाध्यक्ष*, हिंदी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा

सुनीता जोशी, सेवानिवृत्त *शिक्षिका*, हिंदी, केंद्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक

नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य,* हिंदी, भाषा शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

समीक्षक

सुरेंद्र दुबे, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उच्च अधिकार प्राप्त कार्यदल के प्रति इस पाठ्यपुस्तक में *एन.सी.एफ.एस.ई. 2023* के परिप्रेक्ष्यों के समावेशन हेतु मार्गदर्शन एवं योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद् सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

परिषद्, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के प्रति भी प्रशासनिक एवं अकादमिक सहयोग हेतु आभार प्रकट करती है। परिषद् पुस्तक में सहयोग प्रदान करने के लिए भाषा शिक्षा विभाग के सत्यम सिंह, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* (संविदा) और योगेश प्रताप सिंह वर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) को भी धन्यवाद देती है।

इस अधिगम-सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); राहुल सेमवाल, *सहायक संपादक* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है। इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* बिट्टू कुमार महतो और मनोज कुमार के प्रति भी आभार व्यक्त करती हैं।

संभव है कि आभार व्यक्त करने में किसी व्यक्ति अथवा प्रकाशन का नाम सम्मिलित न हो पाया हो। भविष्य में सुधार के लिए हमें उनकी ओर से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

Prelims.indd 11 25-06-2026 16:41:22

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)
(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)
द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात् श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

विषय-सूची

आमुख			*iii*
अधिगम-सामग्री के विषय में			*v*
1.	मेरी भी आभा है इसमें (कविता)	– *नागार्जुन*	1
2.	कंजूस और सोना (लघुकथा)	– *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*	10
	केवल पठन हेतु – दो घड़े	– *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*	21
3.	साङकेन	– *निर्माण समिति*	22
4.	बसंती हवा (कविता)	– *केदारनाथ अग्रवाल*	33
	केवल पठन हेतु – *वह चली हवा*	– *सुदर्शन*	41
5.	न्याय की कुर्सी (लोककथा)	– *लीलावती भागवत*	42
6.	हमारे ये कलामंदिर (यात्रा वृतांत)	– *निर्माण समिति*	58
7.	चंद्रशेखर वेंकटरमन (संस्मरण)	– *विष्णु प्रभाकर*	68
	केवल पठन हेतु – *मुरलीकांत राजाराम पेटकर*		80
8.	कबीर के दोहे	– *कबीर*	81
9.	टिकट-अलबम (कहानी)	– *सुंदरा रामस्वामी*	91
10.	हमारा आदित्य (वार्तालाप)	– *निर्माण समिति*	104

Prelims.indd 13 25-06-2026 16:41:23

Prelims.indd 14 25-06-2026 16:41:23

Step-by-step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the top corner of every chapter is called Quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

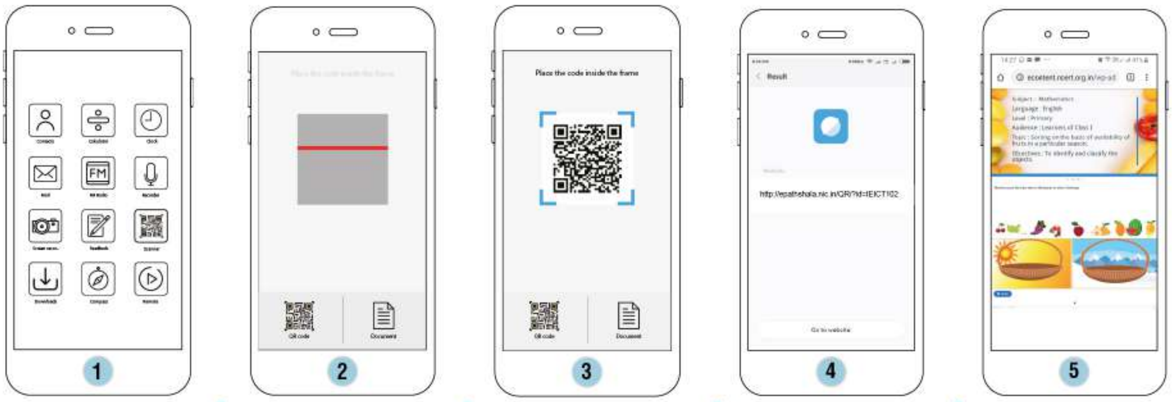

1. Install QR Code Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using ePathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to http://epathshala.ncert.org.in/topics.php and enter the alphanumeric code given under the QR code

Download DIKSHA app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using DIKSHA

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/ncert/get and enter the alphanumeric code given under the QR code

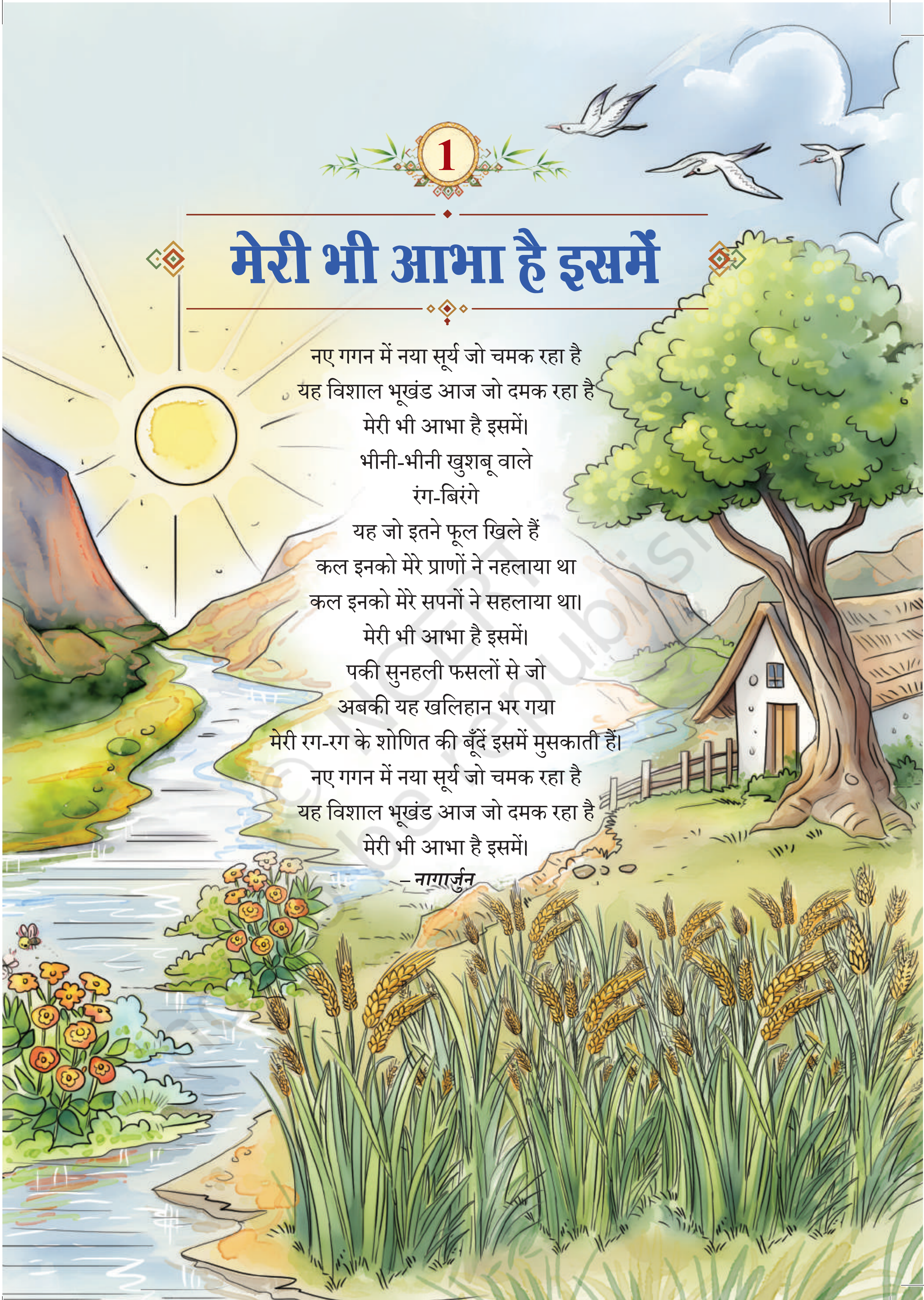

1

मेरी भी आभा है इसमें

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।
भीनी-भीनी खुशबू वाले
रंग-बिरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था।
मेरी भी आभा है इसमें।
पकी सुनहली फसलों से जो
अबकी यह खलिहान भर गया
मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें इसमें मुसकाती हैं।
नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।

– नागार्जुन

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 1 25-06-2026 16:37:36

कवि परिचय

नागार्जुन का जन्म सन् 1911 में बिहार के दरभंगा जिले में हुआ था। इनका नाम वैद्यनाथ मिश्र था। ये साहित्य जगत में नागार्जुन के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये हिंदी और मैथिली, दोनों भाषाओं के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इन्होंने अपनी कविताओं में किसान, मजदूर और आम आदमी के जीवन को बड़ी सरलता और सच्चाई से व्यक्त किया है। इनकी भाषा सीधी, सरल और दिल को छू लेने वाली है।

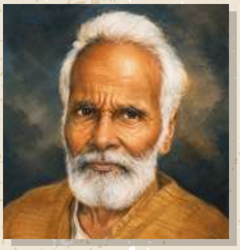

बातचीत के लिए

1. इस कविता को सुनकर या पढ़कर आपके मन में सबसे पहले क्या विचार आया?
2. क्या आपका भी कोई ऐसा सपना है जिसे आप पूरा करना चाहते हैं?
3. आपको आकाश किस मौसम में सबसे अच्छा लगता है? आप उसमें क्या-क्या देखते हैं?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. "मेरी भी आभा है इसमें" पंक्ति में 'आभा' शब्द का भाव है—

   (क) तेज   (ख) चमक

   (ग) योगदान   (घ) श्रम

2. फूलों के सौंदर्य के पीछे किसका प्रमुख योगदान है?

   (क) प्रकृति का   (ख) माली का

   (ग) पानी का   (घ) किसान का

© NCERT not to be republished

3. कविता का मुख्य संदेश क्या है?
   (क) प्रकृति का सौंदर्य सबसे महत्वपूर्ण है।
   (ख) सफलता केवल भाग्य से मिलती है।
   (ग) राष्ट्र की प्रगति में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान होता है।
   (घ) फूल और फसलें जीवन का आधार हैं।

4. कथन– *खलिहान पकी सुनहली फसलों से भर गया है।*

   कारण– इसके लिए किसान ने अथक परिश्रम किया है।
   (क) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।
   (ख) कथन गलत है, किंतु कारण सही है।
   (ग) कथन और कारण, दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन और कारण, दोनों सही हैं।

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

© NCERT not to be republished

सोचिए और लिखिए

1. कवि "मेरी भी आभा है इसमें" कहकर किस भावना को व्यक्त करना चाहता है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. कवि ने फसलों में अपने 'शोणित की बूँदें' मुसकाने की बात क्यों कही है?
3. कवि ने फसलों को सुनहली क्यों कहा है?
4. गगन और सूर्य को कवि ने नया क्यों कहा है?

भाषा की ओर

उलझे शब्द सुलझाएँ

1. कविता के शब्दों के अक्षर उलझ गए हैं, आइए मिलकर सुलझाते हैं—

उलझे अक्षर	सही शब्द	संकेत	आपकी भाषा में
न ग ग	....	आसमान	
लि हा ख न	....	फसल रखने की जगह	
भा आ	....	चमक/रोशनी	
णि शो त	....	रक्त	
ल वि शा	....	बहुत बड़ा	

'पर्याय' शब्द का अर्थ होता है 'समान'। प्रत्येक भाषा में समान अर्थ देने वाले अनेक शब्द होते हैं। इन्हीं समान अर्थ देने वाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' अथवा 'समानार्थी शब्द' कहा जाता है; जैसे– 'पानी' शब्द के लिए हिंदी में 'जल', 'नीर', 'वारि' आदि पर्यायवाची शब्द हैं। किंतु ध्यान देने वाली बात यह है कि इनका प्रयोग 'संदर्भ' पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, "मैंने सूर्य को **पानी** चढ़ाया" वाक्य में 'पानी' शब्द का प्रयोग संदर्भ की दृष्टि से उचित नहीं है। इस वाक्य में हमें 'पानी' के स्थान पर 'जल' शब्द का प्रयोग करना होगा, तभी वाक्य उचित और सार्थक होगा। इस प्रकार सही वाक्य होगा— मैंने सूर्य को **जल** चढ़ाया।

© NCERT not to be republished

2. **आपकी मातृभाषा में पानी को क्या कहते हैं? लिखिए।**

....

3. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों को दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्दों से भरिए—**

- **गगन**: आसमान, ..., ..., ...
- **सूर्य**: रवि, ..., ..., ...
- **फूल**: सुमन, ..., ..., ...
- **शोणित**: लहू, ..., ..., ...

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 5 25-06-2026 16:37:40

भाव समझें

4. **कविता में प्रयुक्त पंक्तियों में कुछ गहरे भाव छुपे हुए हैं। आप कविता की पंक्तियों को उनके सही भाव से मिलाइए और बताइए कि कवि क्या कहना चाहता है—**

	कविता की पंक्ति	भाव
(i)	मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें	नई आशा और नया आरंभ
(ii)	मेरी भी आभा है इसमें	प्यार और उम्मीद से पाला
(iii)	सपनों ने सहलाया था	मैंने भी योगदान दिया है
(iv)	नया सूर्य जो चमक रहा है	मेरी कड़ी मेहनत का फल
(v)	खलिहान भर गया	मेरे परिश्रम और बलिदान का अंश

© NCERT not to be republished

पाठ से आगे

1. क्या सच में फूलों को सपनों से सहलाया जा सकता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. यदि आप एक किसान होते और आपका खलिहान सुनहली फसलों से भर जाता, तो उस समय आपके मन में क्या भावनाएँ होतीं? कल्पना करके बताइए।
3. यदि इस कविता में सूर्य और फूल बोल सकते, तो वे कवि से क्या संवाद करते? अपनी कल्पना से निम्नलिखित संवाद को पूरा कीजिए—

Final Chapters Final.indd 6 25-06-2026 16:37:40

(सुबह का समय है। आकाश में सूर्य चमक रहा है। बगीचे में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। कवि खेत की मेड़ पर बैठा है।)

सूर्य – मैं हर रोज उगता हूँ, पर आज कुछ अलग लग रहा है।

फूल – हाँ, कुछ ऐसा ही मैं भी महसूस कर रहा हूँ।

कवि – ....

सूर्य – ....

फूल – ....

कवि – ....

फूल – ....

परियोजना

1. एक सप्ताह तक प्रकृति से जुड़ी चीजों को ध्यान से देखिए। प्रतिदिन अपने अवलोकनों को लिखिए। अब इन्हें चित्र सहित कक्षा में प्रस्तुत कीजिए—

जैसे–

- आज आकाश कैसा था?
- कौन-सा फूल देखा? उसका रंग, उसकी बनावट और सुगंध कैसी थी?
- कहीं कोई पेड़, बगीचा या खेत दिखा? उसमें आपने क्या देखा? कोई चिड़िया, कोई जीव-जंतु या कुछ अन्य?

2. आप अपने परिवार के जिन कार्यों में सहयोग करते हैं, उनकी सूची बनाइए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 7 25-06-2026 16:37:41

आज की पहेली

नीचे दिए अक्षर-जाल में कविता के छुपे हुए पाँच शब्दों को ढूँढ़कर उन पर गोला लगाइए—

स	ब	र्य	हा	न	प	र	ख
क	स	प	नों	फू	य	आ	भा
शो	णि	य	आ	ग	तू	फू	च
खु	श	बू	बा	व	ग	ग	नों
फ	छ	र्य	शि	ज	लि	न	णि
चा	सू	ड	ख	लि	हा	न	त
जा	भा	काँ	च	ढाँ	ट	दू	आ
प	ख	नी	शो	णि	त	ब	प

खोजबीन

1. पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोतों से इस कविता के कवि नागार्जुन तथा उनकी रचनाओं के बारे में और अधिक जानकारी एकत्र कीजिए तथा कक्षा में साझा कीजिए।
2. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ी (लिंक) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।
   https://youtu.be/ydeDMPnnzec?si=TUuHV0RBIqgnT4mR

Final Chapters Final.indd 8 25-06-2026 16:37:44

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
गगन	आसमान	
दमक	आकर्षण युक्त चमक	
आभा	चमक, योगदान, भागीदारी	
खलिहान	कटी फसल को इकट्ठा रखने का स्थान	
शोणित	रक्त	
भूखंड	धरती का भाग	

© NCERT not to be republished

2

कंजूस और सोना

एक आदमी था, जिसके पास काफी जमींदारी थी, मगर दुनिया की किसी दूसरी चीज से सोने की उसे अधिक चाह थी। इसलिए पास जितनी जमीन थी, कुल उसने बेच डाली और उसे कई सोने के टुकड़ों में बदला। सोने के इन टुकड़ों को गलाकर उसने बड़ा गोला बनाया और उसे बड़ी हिफाजत से जमीन में गाड़ दिया। उस गोले की उसे जितनी परवाह थी, उतनी न बीवी की थी, न बच्चे की, न खुद अपनी जान की। हर सुबह वह उस गोले को देखने के लिए जाता था और यह मालूम करने के लिए कि किसी ने उसमें हाथ नहीं लगाया! वह देर तक नजर गड़ाए उसे देखा करता था।

कंजूस की इस आदत पर किसी दूसरे की निगाह गई। जिस जगह वह सोना गड़ा था, धीरे-धीरे वह ढूँढ़ निकाली गई। आखिर में एक रात किसी ने वह सोना निकाल लिया।

दूसरे रोज सुबह को कंजूस अपनी आदत के अनुसार सोना देखने के लिए गया, मगर जब उसे वह गोला दिखाई न पड़ा, तब वह गम और गुस्से में जामे से बाहर हो गया।

Final Chapters Final.indd 10 25-06-2026 16:37:48

उसके एक पड़ोसी ने उससे पूछा, "इतना मन क्यों मारे हुए हो? असल में तुम्हारे पास कोई पूँजी नहीं थी, फिर कैसे वह तुम्हारे हाथ से चली गई? तुम सिर्फ एक शौक ताजा किए हुए थे कि तुम्हारे पास पूँजी थी। तुम अब भी खयाल में लिए रह सकते हो कि वह माल तुम्हारे पास है। सोने के उस पीले गोले की जगह उतना ही बड़ा पत्थर का एक टुकड़ा रख दो और सोचते रहो कि वह गोला अब भी मौजूद है। पत्थर का वह टुकड़ा तुम्हारे लिए सोने का गोला ही होगा, क्योंकि उस सोने से तुमने सोने वाला काम नहीं लिया। अब तक वह गोला तुम्हारे काम नहीं आया। उससे आँखें सेंकने के सिवा काम लेने की कभी तुमने सोची ही नहीं।"

यदि आदमी धन का सदुपयोग न करे, तो उस धन की कोई कीमत नहीं।

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

लेखक परिचय

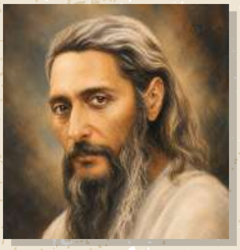

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1961 में पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम सूर्य कुमार था। निराला की विधिवत स्कूली शिक्षा नवीं कक्षा तक ही हुई। उन्होंने भारत की प्रकृति और संस्कृति के विभिन्न रूपों का चित्रण अपनी कविताओं में किया है। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक कहानियाँ भी लिखी हैं, जैसे– रामायण, महाभारत, महाराणा प्रताप, भक्त ध्रुव, प्रह्लाद की कहानियाँ आदि।

Final Chapters Final.indd 11 25-06-2026 16:37:50

बातचीत के लिए

1. कंजूस को सबसे अधिक परवाह सोने की थी। आप सबसे अधिक किसकी परवाह करते हैं और क्यों?
2. आप कंजूस की जगह होते तो सोने का क्या करते?
3. क्या धन को जमा करना सही है? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।
4. यदि आपको 100 रुपये मिलें, तो उनका 'सदुपयोग' करने के लिए आप क्या-क्या करेंगे?
5. कंजूस सोना खरीदकर प्रसन्न था। क्या धन से 'प्रसन्नता' खरीदी जा सकती है? आप ऐसा क्यों मानते हैं?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. कंजूस ने सोने से कुछ क्यों नहीं खरीदा?
   (क) उसे खरीदारी करना अच्छा नहीं लगता था।
   (ख) वह सोने को खो देना नहीं चाहता था।
   (ग) बाजार में उसकी मनपसंद चीजें नहीं थीं।
   (घ) उसे प्रतिदिन सोना देखने की आदत थी।

2. कहानी के अनुसार धन का महत्व कब होता है?
   (क) जब उसे जमीन में गाड़ दिया जाए।
   (ख) जब वह बहुत पुराना हो जाए।
   (ग) जब उसका सदुपयोग किया जाए।
   (घ) जब वह सोने में बदल दिया जाए।

3. कहानी के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सटीक है?
   (क) धन को किसी उपाय से सुरक्षित रखना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।
   (ख) धन का मूल्य उसके उपयोग में है, केवल उसके पास होने में नहीं।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 12 25-06-2026 16:37:50

(ग) अपना सारा धन समाज की भलाई के लिए दान कर देना चाहिए।

(घ) सोने से बेहतर भूमि है क्योंकि उसका उपयोग किया जा सकता है।

4. "उस गोले की उसे जितनी परवाह थी, उतनी न बीवी की थी, न बच्चे की, न खुद अपनी जान की।" इस वाक्य से कंजूस के व्यक्तित्व के बारे में क्या पता चलता है?

(क) वह अपने परिवार से दूर रहता था।

(ख) उसे सबसे अधिक लगाव सोने से था।

(ग) उसकी पत्नी और बच्चे भी उतने ही कंजूस थे।

(घ) उसके लिए सोने से भी अधिक कीमती उसका परिवार था।

5. "यदि आदमी धन का सदुपयोग न करे, तो उस धन की कोई कीमत नहीं।"
इस कहानी के अनुसार धन का 'सदुपयोग' करने का सही अर्थ क्या है?

(क) धन को सुरक्षित और गोपनीय स्थान पर रखना।

(ख) धन से वे काम लेना जो जीवन को सार्थक बनाएँ।

(ग) धन को प्रतिदिन देखकर मानसिक शांति प्राप्त करना।

(घ) धन को केवल आपातकाल के लिए बचाकर रखना।

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

सोचिए और लिखिए

1. कंजूस के पास सोने का गोला कैसे आया?
2. कंजूस ने सोने का कोई उपयोग क्यों नहीं किया?
3. पड़ोसी ने कंजूस को पत्थर का टुकड़ा रखने की सलाह क्यों दी?
4. क्या कंजूस को अपने परिवार से प्यार था? कहानी से यह कैसे पता चलता है?

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 13 25-06-2026 16:37:51

भाषा की ओर

आपके शब्द

1. नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों को आपकी भाषा में क्या कहते हैं? लिखिए—

	पाठ से शब्द	आपकी भाषा में शब्द	इसके लिए कोई अन्य शब्द
(क)	किसी ने उसमें हाथ नहीं लगाया।		
(ख)	एक रात किसी ने वह सोना निकाल लिया।		
(ग)	पत्थर का एक टुकड़ा रख दो।		
(घ)	जमीन में गाड़ दिया।		
(ङ)	वह सोना गड़ा था।		

संकेत– दिए गए वाक्य पढ़िए। वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ समझिए। उसे आपकी भाषा में क्या कहते हैं, लिखिए। यदि आपके किसी सहपाठी की कोई अन्य भाषा है, तो उसकी भाषा में इस शब्द को क्या कहते हैं, लिखिए। यदि आपकी भाषा में इसके लिए कोई अन्य शब्द है, तो उसे भी लिखा जा सकता है।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 14 25-06-2026 16:37:51

समान अर्थ वाले शब्द

2. नीचे दिए गए शब्दों के लिए कहानी में किन शब्दों का प्रयोग किया गया है? कहानी से ढूँढ़कर लिखिए—

शब्द	पाठ में से शब्द
• क्रोध	• गुस्सा
• चिंता	
• प्रतिदिन	
• धरती	
• दुख	
• सुरक्षा	

मिलते-जुलते अर्थ

नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

- उस धन की कोई कीमत नहीं।
- तुम्हारे पास कोई पूँजी नहीं थी।
- वह माल तुम्हारे पास है।

इन तीनों रेखांकित शब्दों का प्रयोग 'रुपये-पैसे' या 'दौलत' के लिए किया गया है।

3. अब नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के लिए कोई अन्य शब्द लिखिए—

- एक आदमी था।
- दुनिया की किसी दूसरी चीज से सोने की उसे अधिक चाह थी।
- उस गोले की उसे जितनी परवाह थी, उतनी न बीवी की थी, न बच्चे की, न खुद अपनी जान की।

not to be republished © NCERT

एक और अनेक

4. नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों का वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए—

उदाहरण– *वह देर तक नजर गड़ाए उसे देखा करता था।*

वह देर तक नजरें गड़ाए उसे देखा करता था।

(क) अब तक वह गोला तुम्हारे काम नहीं आया।

(ख) कंजूस की इस आदत पर किसी दूसरे की निगाह गई।

(ग) वह देर तक नजर गड़ाए उसे देखा करता था।

(घ) उसके पड़ोसी ने उससे पूछा।

(ङ) धीरे-धीरे वह ढूँढ़ निकाली गई।

भविष्य की अभिव्यक्ति

नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए—

"वह उस गोले को देखने के लिए जाता था।" (भूतकाल)

"वह उस गोले को देखने के लिए जाएगा।" (भविष्यत काल)

5. अब नीचे दिए गए वाक्यों को भविष्यत काल में बदलकर लिखिए—

(क) वह गोला तुम्हारे काम नहीं आया।

(ख) वह देर तक नजर गड़ाए उसे देखा करता था।

(ग) तुम्हारे पास कोई पूँजी नहीं थी।

(घ) धीरे-धीरे वह ढूँढ़ निकाली गई।

(ङ) किसी ने वह सोना निकाल लिया।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 16 25-06-2026 16:37:51

फिर से लिखें

नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए—

"असल में तुम्हारे पास कोई पूँजी नहीं थी।"

"असल में तुम्हारे पास कोई धन नहीं था।'

आप समझते ही होंगे कि 'पूँजी' एक **स्त्रीलिंग** शब्द है। 'धन' एक **पुल्लिंग** शब्द है।

6. नीचे कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग करके वाक्यों को बदलकर लिखिए—

उदाहरण– एक आदमी था। (औरत) → एक औरत थी।

(क) तुम्हारे पास पूँजी थी। (रुपया-पैसा) →

(ख) उस धन की कोई कीमत नहीं। (मूल्य) →

(ग) कंजूस की इस आदत पर किसी दूसरे की निगाह गई। (ध्यान) →

(घ) जिस जगह वह सोना गड़ा था, धीरे-धीरे वह ढूँढ़ निकाली गई। (स्थान पर) →

(ङ) एक रात किसी ने वह सोना निकाल लिया। (धातु) →

मेरे वाक्य

नीचे दिए गए वाक्य को ध्यान से पढ़िए—

"यदि आदमी धन का सदुपयोग न करे, तो उस धन की कोई कीमत नहीं।"

7. अब 'यदि' और 'तो' वाले कुछ अन्य वाक्य लिखिए—

(क) यदि ....वर्षा न हुई.......... तो ....

(ख) यदि .... तो ....

(ग) यदि .... तो ....

(घ) यदि .... तो ....

(ङ) यदि .... तो ....

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 17 25-06-2026 16:37:51

कहानी से मुहावरे

"वह देर तक <u>नजर गड़ाए</u> उसे देखा करता था।"

'नजर गड़ाना' का अर्थ है— ध्यान से देखना, टकटकी लगाकर देखना।

(क) कहानी में निम्नलिखित मुहावरों वाले वाक्यों को रेखांकित कीजिए और इनके प्रयोग समझिए।

हाथ लगाना	–	छूना, स्पर्श करना
मन मारना	–	उदास होना, इच्छा को दबाना
जामे से बाहर होना	–	आपे से बाहर होना, अत्यंत क्रोध करना
ताजा करना	–	स्मरण करना, याद करना, फिर चित्त में लाना
हाथ से निकल जाना	–	अपने अधिकार में न रहना, वश में न रह जाना
ख्याल करना	–	सोचना, याद करना
आँख सेंकना	–	दर्शन का सुख उठाना, सुंदर रूप देखना
निगाह पड़ना	–	दिखाई पड़ना, दिखाई देना

(ख) इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए अपने वाक्य बनाइए।

(ग) इन मुहावरों के भाव से मिलते-जुलते अपनी भाषा के मुहावरों को लिखिए।

पाठ से आगे

अनुमान और कल्पना

1. कहानी में कंजूस और पड़ोसी का कोई नाम नहीं है। यदि आप उन्हें कोई नाम देना चाहें, तो क्या नाम देंगे और क्यों?
2. पड़ोसी ने कंजूस को सलाह दी लेकिन क्या कंजूस ने वह सलाह मानी होगी? आपको ऐसा क्यों लगता है?
3. यदि आप कंजूस के पड़ोसी होते, तो उसे क्या सलाह देते?

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 18 25-06-2026 16:37:51

4. क्या आपने कभी कोई ऐसी वस्तु देखी है जिसे किसी ने केवल दिखावे के लिए रखा है, उपयोग के लिए नहीं? उस वस्तु के बारे में बताइए।

सृजन

1. यदि सोना निकालने वाले को पकड़ लिया जाता और सोना वापस मिल जाता, तो कंजूस अब क्या करता? आगे की कहानी कल्पना से बढ़ाइए।
2. मान लीजिए कि जिस व्यक्ति ने सोना निकाल लिया था, उसने कंजूस को एक पत्र लिखा है। उसने पत्र में बताया है कि उसने सोना क्यों निकाल लिया। अपनी कल्पना से वह पत्र लिखिए।

परियोजना

1. पोस्टर – सोना या पत्थर?

समूह में मिलकर एक 'पोस्टर' बनाएँ। आधा पोस्टर सोने के गोले से भरा हो, आधा पत्थर से। बीच में यह प्रश्न लिखें— 'क्या अंतर है?' फिर सब अपने-अपने विचार 1-1 पंक्ति में पोस्टर पर लिखें/लिखकर चिपका दें। यह पोस्टर कक्षा की दीवार पर लटकाया जा सकता है।

2. साक्षात्कार – 'आज का कंजूस'

एक सदस्य 'आज के जमाने का कंजूस' बनेगा जिसके पास लाखों रुपये हैं मगर वह उन्हें खर्च नहीं करता। बाकी सदस्य उसका साक्षात्कार लेंगे और प्रश्न पूछेंगे, जैसे– "आप पैसा क्यों नहीं खर्च करते? उसके रोचक उत्तर सुनकर उसे समझाएँगे कि पैसा बिना उपयोग के व्यर्थ है।

3. 'पत्थर बनाम सोना'

दो समूह बनाएँ, एक समूह कंजूस के पक्ष में तर्क देगा, जैसे– "कंजूस सही था, क्योंकि सोना कभी भी काम आ सकता था, वह सुरक्षित था।" दूसरा समूह कंजूस के विरोध में तर्क देगा जैसे– "पड़ोसी सही था, क्योंकि बिना उपयोग का धन बेकार है।" अन्य समूह इसे सुनकर अपना निर्णय देंगे।

not to be republished © NCERT

Final Chapters Final.indd 19 25-06-2026 16:37:51

4. नाट्य प्रस्तुति

समूह के 4–5 सदस्य मिलकर इस कहानी पर 2 मिनट का एक लघु नाटक बनाएँ। एक कंजूस बनेगा, एक सोना निकालने वाला, एक पड़ोसी और दो-तीन लोग गोला बनाने और गाड़ने के दृश्य में सहायता करेंगे।

आज की पहेली

नीचे दी गई पहेली में पाठ से जुड़े शब्द ढूँढ़कर लिखिए—

1. कहानी का मुख्य पात्र जिसके पास बहुत जमीन थी। (3 अक्षर)
2. सोने को गलाकर कंजूस ने जो आकार दिया था। (2 अक्षर)
3. वह व्यक्ति जिसने कंजूस को सलाह दी। (3 अक्षर)
4. वह बहुमूल्य धातु जिसे कंजूस ने जमीन में गाड़ा था। (2 अक्षर)
5. कंजूस की संपत्ति जिसे उसने बेच दिया था। (3 अक्षर)

खोजबीन

1. पुस्तकालय से सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की अन्य रचनाएँ पुस्तकालय और अन्य स्रोतों से खोजकर पढ़िए।
2. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं तथा कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं का आनंद ले सकते हैं—

   https://www.youtube.com/watch?v=w28KpRF4Awc

   https://www.youtube.com/watch?v=xY8Yo-HDdio

   https://www.youtube.com/watch?v=BwA05AtwDFo

© NCERT not to be republished

केवल पठन हेतु

आपने 'निराला' की एक नीतिकथा पढ़ी। अब पढ़िए एक अन्य नीतिकथा–

दो घड़े

एक घड़ा मिट्टी का बना था, दूसरा पीतल का। दोनों नदी के किनारे रखे थे। इसी समय नदी में बाढ़ आ गई, बहाव में दोनों घड़े बह चले। बहते समय मिट्टी के घड़े ने अपने को पीतल वाले घड़े से काफी फासले पर रखना चाहा।

पीतल वाले घड़े ने कहा, "तुम डरो नहीं दोस्त, मैं तुम्हें धक्के न लगाऊँगा।"

मिट्टी वाले घड़े ने जवाब दिया, "तुम जान-बूझकर मुझे धक्के न लगाओगे, सही है; मगर बहाव की वजह से हम दोनों जरूर टकराएँगे। अगर ऐसा हुआ, तो तुम्हारे बचाने पर भी मैं तुम्हारे धक्कों से न बच सकूँगा और मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। इसलिए अच्छा है कि हम दोनों अलग-अलग रहें।"

जिससे तुम्हारा नुकसान हो रहा हो उससे अलग रहना ही अच्छा है, चाहे वह उस समय के लिए तुम्हारा दोस्त भी क्यों न हो।

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

Final Chapters Final.indd 21 25-06-2026 16:37:53

3

साङ्केन

अरुणाचल प्रदेश में चौखाम के मंडल कार्यालय में वल्लरी के पिताजी एक अधिकारी हैं। इस बार उन्होंने दिल्ली से अपने परिवार को भी अपने पास बुला लिया है। कहाँ दिल्ली की भीड़भरी सड़कें, हॉर्न बजाती हुई कारें और बसें, आदमियों की लंबी-लंबी कतारें और कहाँ चौखाम का खुला और शांत वातावरण। जिधर देखो, हरियाली ही हरियाली और फूल ही फूल। यहाँ के लोगों के मुखों पर सदैव मुसकान बनी रहती है। एक दिन वल्लरी को उसके मित्र चाऊतान ने अपने घर बुलाया। वल्लरी अपने पिताजी के साथ चाऊतान के घर गई। उस समय चाऊतान के पिताजी घर की सफाई कर रहे थे। वल्लरी और उसके पिताजी को देखकर उन्होंने सफाई का काम छोड़ दिया और उन दोनों का स्वागत किया। चाऊतान की माताजी कई प्रकार के पकवान ले आईं। ये पकवान बहुत स्वादिष्ट थे। वल्लरी और उसके पिताजी पकवान खाने लगे। तभी वल्लरी ने देखा कि सड़क पर एक शोभायात्रा निकल रही है। शोभायात्रा में बहुत-से लोग थे।

© NCERT not to be republished

कुछ लोगों के कंधों पर पालकियाँ थीं। इन पालकियों में बड़ी-बड़ी और सुंदर-सुंदर मूर्तियाँ रखी हुई थीं। शोभायात्रा में सब लोग नाचते-गाते हुए जा रहे थे। लोगों में बहुत उत्साह था।

वल्लरी ने चाऊतान से पूछा, "ये लोग कहाँ जा रहे हैं? बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं।" चाऊतान ने बताया, "अभी एक-दो दिन पहले ही हमारे गाँव के लोगों ने नदी के किनारे एक मंदिर बनाया है। ये लोग बौद्ध-विहार से भगवान बुद्ध और उनके शिष्यों की मूर्तियाँ लाए हैं और इन्हें मंदिर ले जा रहे हैं। ये मूर्तियाँ तीन दिन तक उस मंदिर में रखी रहेंगी। गाँव के लोग इन मूर्तियों पर प्रतिदिन जल चढ़ाएँगे और इनकी पूजा करेंगे।"

"क्या हम लोग भी शोभायात्रा में सम्मिलित हो सकते हैं?" वल्लरी के पिताजी ने पूछा। "हाँ-हाँ, अवश्य। चलिए, हम सब शोभायात्रा में चलते हैं।" चाऊतान के पिताजी बोले। सब लोग शोभायात्रा में सम्मिलित हो गए। शोभायात्रा में लोग गाते-बजाते हुए और नाचते-कूदते हुए चले जा रहे थे। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।

थोड़ी देर में शोभायात्रा मंदिर के पास पहुँची। मंदिर की जालीदार दीवारें बाँस और बाँस की खपच्चियों से बनी हुई थीं। बीच-बीच में पेड़ों की हरी-भरी टहनियाँ लगाई गई थीं और खोंस-खोंसकर उन पर रंग-बिरंगे फूल सजा दिए गए थे। इतना सादा और सुंदर मंदिर वल्लरी ने पहले कभी नहीं देखा था।

देखते-देखते भीड़ मंदिर के द्वार पर एकत्रित होने लगी। बौद्ध भिक्षुओं ने मंत्र पढ़ते हुए इन मूर्तियों को पालकियों से उतारा और इन्हें मंदिर में रख दिया। अब वे इन मूर्तियों की पूजा करने लगे और इन पर जल चढ़ाने लगे।

हँसी-खुशी के इस वातावरण में वल्लरी ने देखा कि लोग एक-दूसरे पर बालटियाँ भर-भरकर पानी डाल रहे हैं। वे एक-दूसरे के चेहरों पर चावल का आटा भी लगा रहे हैं। वल्लरी को होली की याद आ गई। उसने चाऊतान से कहा, "चाऊतान भाई, लगता है कि लोग होली का त्योहार मना रहे हैं।"

Final Chapters Final.indd 23 25-06-2026 16:37:59

चाऊतान बोला, "तुम्हें मालूम नहीं, आज हमारे यहाँ साङ्केन का त्योहार है। आज से हमारा नया वर्ष आरंभ होता है।" वल्लरी ने बताया, "हमारे यहाँ भी होली से ही नया वर्ष आरंभ होता है। होली के दिन हम लोग भी एक-दूसरे के ऊपर रंगीन पानी फेंकते हैं और मुँह पर गुलाल लगाते हैं। होली के दूसरे दिन लोग एक-दूसरे से मिलने जाते हैं। उस दिन लोग घरों में कई प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन बनाते हैं और अतिथियों का स्वागत करते हैं।" चाऊतान ने बताया, "आज शाम को हम लोग भी अपने ताऊजी के यहाँ जाएँगे। हमारी ताईजी ने भी विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए होंगे। हम उन्हें प्रणाम करेंगे। वे हमें आशीर्वाद देंगे। कल मेरी बुआजी और मेरे फूफाजी भी हमारे यहाँ आएँगे।" इतने में किसी ने वल्लरी और उसके पिताजी पर एक बालटी पानी डाल दिया। वे भीग गए। फिर तो लोग बहुत देर तक एक-दूसरे पर पानी डालते रहे और साङ्केन मनाते रहे। "तीन दिन तक इसी तरह साङ्केन मनाया जाता है।" चाऊतान ने बताया। "तीसरे दिन बौद्ध भिक्षु इन मूर्तियों को पुनः पालकियों में रखकर बौद्ध-विहार ले जाएँगे। वहाँ वे मंत्र पढ़-पढ़कर इन मूर्तियों को इनके स्थान पर रख देंगे।" चाऊतान के पिताजी ने बताया, "गाँव के लोग फिर बौद्ध-विहार जाएँगे और भिक्षुओं को बार-बार दंडवत प्रणाम करेंगे। भिक्षु लोग हमें आशीर्वाद देंगे— "खेती फूले-फले तुम्हारी, तुम्हें न हो कोई बीमारी। हिल-मिलकर सब नाचें-गाएँ, नए साल में खुशी मनाएँ।"

Final Chapters Final.indd 24 25-06-2026 16:38:01

बातचीत के लिए

1. आप कौन-कौन से त्योहार मनाते हैं? उनमें से आपका प्रिय त्योहार कौन-सा है और क्यों?
2. आपके घर में किसी विशेष त्योहार पर कौन-कौन से पकवान बनाए जाते हैं? उनमें से किसी एक पकवान को बनाने की विधि बताइए।
3. यदि आपके घर पर आपका कोई मित्र आए, तो आप हिंदी भाषा का प्रयोग करते हुए अपने मित्र का अभिवादन कैसे करेंगे?
4. आप अपने मित्र को अपने राज्य या गाँव के किसी विशेष त्योहार और संस्कृति के बारे में क्या-क्या बताएँगे?
5. क्या आपने कभी किसी ऐसे त्योहार को मनाया है जो आपके राज्य या संस्कृति से अलग हो? अनुभव साझा कीजिए।

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. साङकेन का त्योहार मुख्य रूप से भारत के किस राज्य से संबंधित है?
   (क) सिक्किम　　(ख) असम
   (ग) मेघालय　　(घ) अरुणाचल प्रदेश

2. वल्लरी को साङकेन त्योहार देखकर होली की याद क्यों आ गई?
   (क) साङकेन और होली पर एक जैसे पकवान बनते हैं।
   (ख) होली और साङकेन एक ही महीने में आते हैं।
   (ग) होली और साङकेन दोनों पानी और रंग/आटे से खेले जाते हैं।
   (घ) होली और साङकेन दोनों में ही होलिका दहन होता है।

3. साङकेन के दौरान एक-दूसरे पर पानी डालने के पीछे क्या भावना होगी?
   (क) केवल मनोरंजन करना　　(ख) गर्मी से राहत पाना

© NCERT not to be republished

(ग) बुराइयों को समाप्त करना (घ) नदी को स्वच्छ रखना

4. वल्लरी ने दिल्ली और चौखाम के वातावरण के बीच क्या अंतर बताया है?
   (क) दिल्ली शांत है और चौखाम बहुत शोर वाला
   (ख) दोनों जगह के वातावरण में कोई अंतर नहीं है
   (ग) दिल्ली में हरियाली अधिक है, चौखाम में नहीं
   (घ) दिल्ली भीड़-भाड़ वाली है, चौखाम शांत और हरा-भरा

5. "यहाँ के लोगों के मुखों पर सदैव मुसकान बनी रहती है।" इस कथन से लेखक का क्या आशय है?
   (क) ये लोग बहुत कम काम करते हैं।
   (ख) ये लोग सदैव हँसने का अभिनय करते हैं।
   (ग) ये लोग प्रसन्नचित्त और संतोषी स्वभाव के हैं।
   (घ) इन लोगों को ऐसा करने के लिए कहा गया है।

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

सोचिए और लिखिए

1. अरुणाचल प्रदेश के चौखाम में साङकेन त्योहार मनाया जा रहा था। यह त्योहार कितने दिन तक और कैसे मनाया जाता है?
2. यदि आपको किसी भीड़-भाड़ वाले शहर से किसी शांत और हरे-भरे स्थान पर घूमने का अवसर मिले तो आप वहाँ क्या-क्या करना पसंद करेंगे?
3. चाऊतान के घर में उनके आतिथ्य को देखकर वल्लरी को कैसा लगा होगा और क्यों?
4. साङकेन के त्योहार को मनाने के तरीके में आपको सबसे अच्छा क्या लगा और क्यों?

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 26 25-06-2026 16:38:01

भाषा की ओर

विपरीत अर्थ वाले शब्द

1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द के विपरीत शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) साङकेन के दिन लोग <u>पुराने</u> झगड़े भूलकर .... साल की शुरुआत करते हैं।

(ख) त्योहार का <u>आरंभ</u> पूजा से होता है और मेले से इसका .... होता है।

(ग) यह कपड़ा बहुत <u>कोमल</u> है और वह पत्थर बहुत ....।

(घ) सूर्य के उगते ही <u>अंधकार</u> मिट जाता है और चारों तरफ .... फैल जाता है।

विशेषण-विशेष्य

सुंदर मूर्तियाँ *लंबी कतारें*

इन शब्द-युग्मों में पहला शब्द दूसरे शब्द की विशेषता बता रहा है, जैसे **मूर्तियों** की विशेषता **सुंदर** है और **कतारों** की विशेषता **लंबी** है।

जिस शब्द की विशेषता बताई जाए, वह **विशेष्य** कहलाता है एवं जो शब्द विशेषता बताए, वह **विशेषण** कहलाता है।

2. निम्नलिखित विशेषण शब्दों का मिलान उपयुक्त विशेष्य से कीजिए—

विशेषण	विशेष्य
पवित्र	वस्त्र
पारंपरिक	जल
नए	पकवान
स्वादिष्ट	नृत्य

© NCERT not to be republished

काल

वर्तमान काल– लोगों में बहुत उत्साह है।

भूतकाल– लोगों में बहुत उत्साह था।

भविष्यत काल– लोगों में बहुत उत्साह होगा।

उदाहरण–

लोग एक-दूसरे पर पानी छिड़कते हैं। (भूतकाल में बदलिए)

उत्तर-1 *लोगों ने एक-दूसरे पर पानी छिड़का।*

उत्तर-2 *लोग एक-दूसरे पर पानी छिड़क रहे थे।*

3. (क) भिक्षु नए वर्ष की प्रार्थना करेंगे। (वर्तमान काल में बदलिए)

....

....

(ख) वे एक-दूसरे के चेहरे पर चावल का आटा लगा रहे हैं। (भविष्यत काल में बदलिए)

....

....

(ग) चाऊतान के पिताजी घर की सफाई कर रहे थे। (वर्तमान काल में बदलिए)

....

....

वाक्य

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ें—

लोग एक-दूसरे पर पानी डाल रहे हैं।

लोग एक-दूसरे पर पानी नहीं डाल रहे हैं।

क्या लोग एक-दूसरे पर पानी डाल रहे हैं?

अरे! लोग एक-दूसरे पर पानी डाल रहे हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में कुछ शब्दों और विराम चिह्नों में बदलाव किया गया है। इनसे वाक्यों के अर्थ में बदलाव आ गया है।

© NCERT not to be republished

1. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देश के अनुसार बदलिए—

    (क) लोगों में बहुत उत्साह था। (प्रश्न वाला वाक्य बनाइए)

    (ख) शोभायात्रा मंदिर के पास पहुँची। (निषेध/नहीं वाला वाक्य बनाइए)

    (ग) आज से हमारा नया वर्ष आरंभ होता है। (आश्चर्य/विस्मय वाला वाक्य बनाइए)

    (घ) क्या तुम मंदिर जा रहे हो? (निषेध/नहीं वाला वाक्य बनाइए)

अब समझिए—

- जो वाक्य सीधा/साधारण हो, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।
- जिस वाक्य में 'नहीं' अथवा निषेध का भाव हो, वह निषेधवाचक वाक्य कहलाता है।
- जिस वाक्य में प्रश्न हो, वह प्रश्नवाचक वाक्य कहलाता है।
- जिस वाक्य में आश्चर्य/विस्मय का भाव हो, वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।

© NCERT not to be republished

पाठ से आगे

समझ और अनुभव

1. आज के आधुनिक और व्यस्त जीवन में लोग अचानक आए मेहमानों के लिए समय नहीं निकाल पाते। पाठ में वर्णित चौखाम के लोगों के व्यवहार से हमें अपने सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए क्या सीख मिलती है?
2. वर्तमान समय में त्योहारों और आयोजनों में प्लास्टिक, कृत्रिम लाइटों और तड़क-भड़क का उपयोग बढ़ गया है, जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है। चौखाम के मंदिर की सजावट को ध्यान में रखते हुए आप अपने स्कूल या घर के उत्सवों को पर्यावरण-अनुकूल और सादगीपूर्ण कैसे बना सकते हैं?
3. मान लीजिए, साङकेन त्योहार बीतने के बाद, वल्लरी और चाऊतान के बीच स्कूल में फिर से बातचीत होती है। वल्लरी चाऊतान को बताती है कि उसे साङकेन मनाकर कैसा लगा। दोनों के बीच होने वाले इस संवाद को लिखिए।

Final Chapters Final.indd 29 25-06-2026 16:38:02

वल्लरी : चाऊतान, आनंद आ गया साङकेन मनाकर।

चाऊतान : अच्छा! सबसे अच्छा क्या लगा तुम्हें?

वल्लरी : ....

चाऊतान : ....

वल्लरी : ....

चाऊतान : ....

वल्लरी : ....

चाऊतान : ....

4. कल्पना कीजिए कि आप वल्लरी हैं। दिल्ली की भीड़-भाड़ से दूर अरुणाचल प्रदेश के चौखाम गाँव में पहली बार साङकेन का त्योहार मनाने और वहाँ के शांत वातावरण को देखने के बाद आपके मन में क्या विचार आए? इस पूरे अनुभव को व्यक्त करते हुए एक डायरी लिखिए।

5. आपके विद्यालय में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृतियों और त्योहारों से परिचित कराने के लिए एक 'सांस्कृतिक सप्ताह' का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन के लिए विद्यार्थियों को आमंत्रित करते हुए और कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओं, जैसे– साङकेन उत्सव की झाँकी, पारंपरिक भोजन, नृत्य आदि को बताते हुए एक आकर्षक पोस्टर तैयार कीजिए। आप अपने राज्य/गाँव से संबंधित किसी त्योहार पर भी पोस्टर बना सकते हैं।

खोजबीन

पुस्तकालय एवं अन्य स्रोतों से—

1. साङकेन त्योहार अरुणाचल प्रदेश में नए साल के आरंभ में मनाया जाता है। यह अप्रैल महीने में आता है। भारत के अन्य राज्यों में अप्रैल महीने में मनाए जाने वाले फसलों से जुड़े त्योहारों (जैसे– बैसाखी, बिहू आदि) की सूची बनाइए और पता कीजिए कि वे किस तरह फसलों से जुड़े हैं और कैसे मनाए जाते हैं।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 30 25-06-2026 16:38:02

2. साङकेन त्योहार में पानी का विशेष महत्व है, वैसे ही भारत के अन्य भागों में भी पानी से जुड़े कई त्योहार मनाए जाते हैं। ऐसे कुछ त्योहारों (जैसे– ओणम में नौका दौड़ या छठ पूजा में नदी में प्रवेश कर सूर्य की आराधना) के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए और उसे अपने सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।
3. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।

   https://youtu.be/oCNQ4XQFSJE?si=jchpVhzHxEeoqt1X

   https://youtu.be/MtTM9gRJIKc?si=mcVgYoGZZS89-CvP

   https://www.youtube.com/live/RodT8g09uTU?si=uWPzdzSAV33LZRjP (भाग-1)

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
कार्यालय	जहाँ प्रबंधकीय और लेखा-जोखा संबंधी काम किया जाता है	
परिवार	कुटुंब, घराना	
कतार	पंक्ति, शृंखला	
स्वागत	किसी व्यक्ति/आगंतुक के आने पर सम्मान, प्रेम और प्रसन्नता से अभिवादन करना	
दंडवत प्रणाम	दंड के समान सीधे धरती पर लेटकर किया जाने वाला प्रणाम	

not to be republished © NCERT

शोभायात्रा	जुलूस, उत्सव के रूप में लोगों का समूह बनाकर आगे बढ़ना	
खपच्ची	लकड़ी या बाँस का पतला और लंबा टुकड़ा	
अतिथि	मेहमान या आगंतुक	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 32 25-06-2026 16:38:03

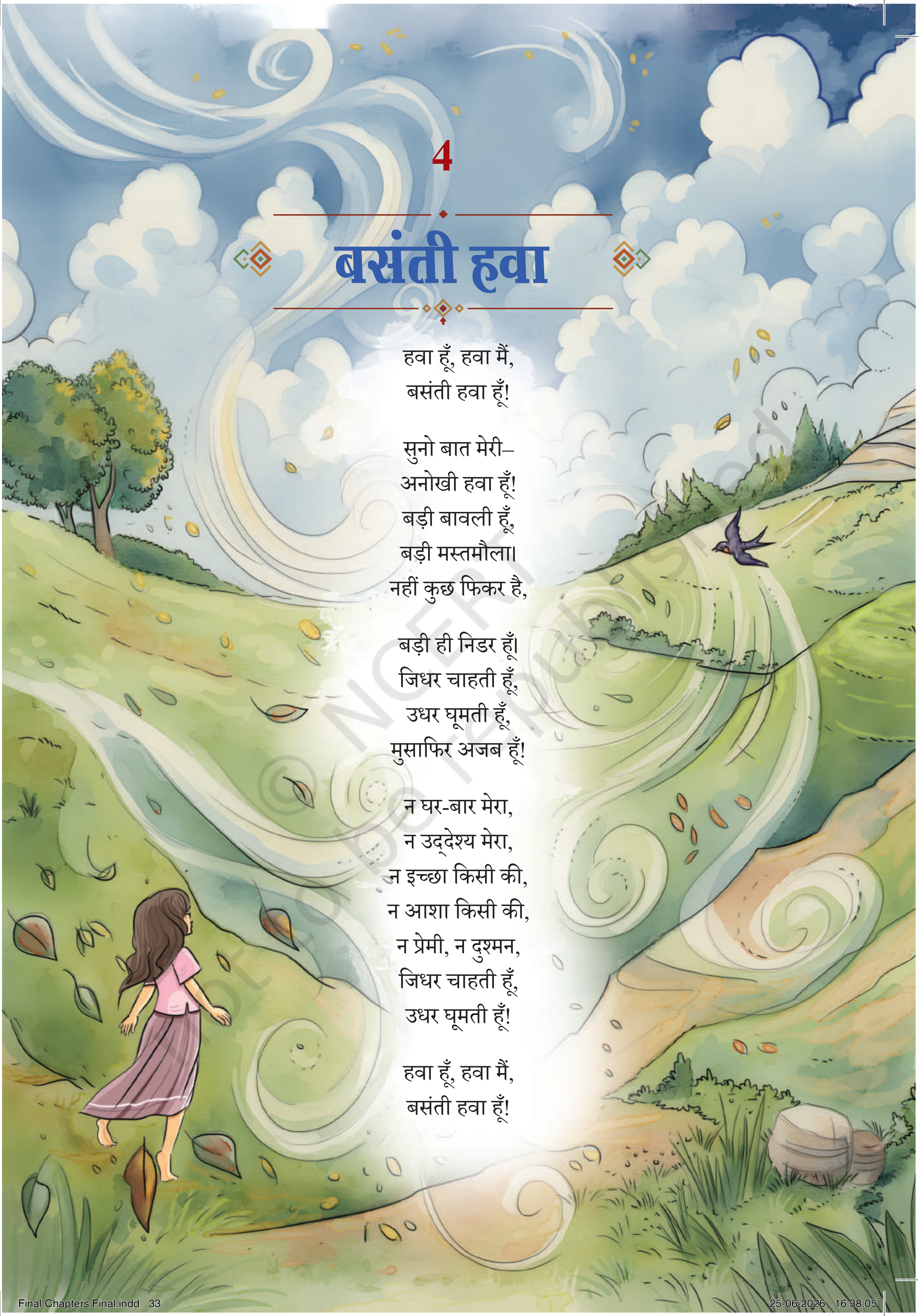

4

बसंती हवा

हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ!

सुनो बात मेरी–
अनोखी हवा हूँ!
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,

बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ!

न घर-बार मेरा,
न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,
न आशा किसी की,
न प्रेमी, न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ!

हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ!

© NCERT not to be republished

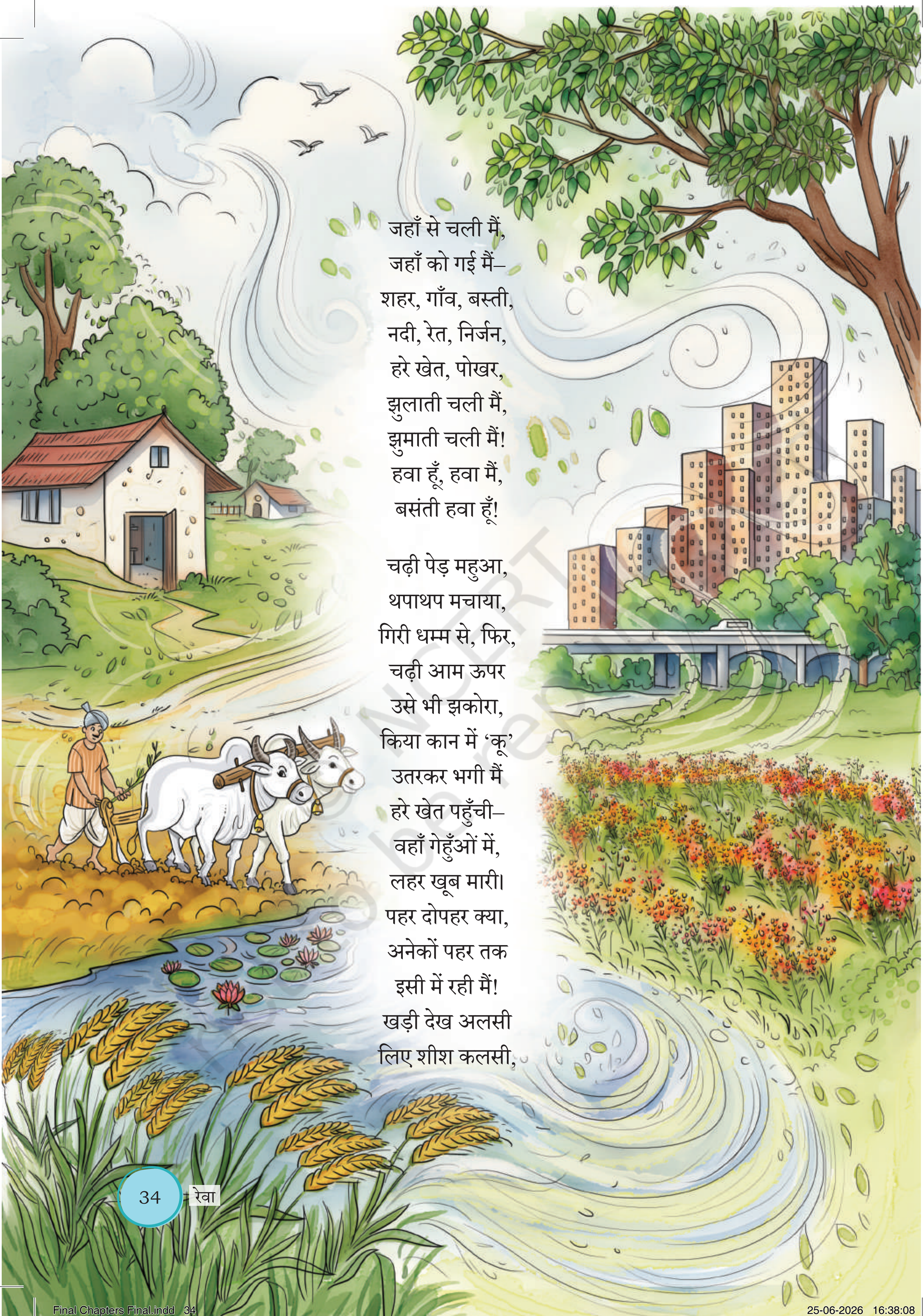

जहाँ से चली मैं,
जहाँ को गई मैं–
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर,
झुलाती चली मैं,
झुमाती चली मैं!
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ!

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया,
गिरी धम्म से, फिर,
चढ़ी आम ऊपर
उसे भी झकोरा,
किया कान में 'कू'
उतरकर भगी मैं
हरे खेत पहुँची–
वहाँ गेहुँओं में,
लहर खूब मारी।
पहर दोपहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!
खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 34 25-06-2026 16:38:08

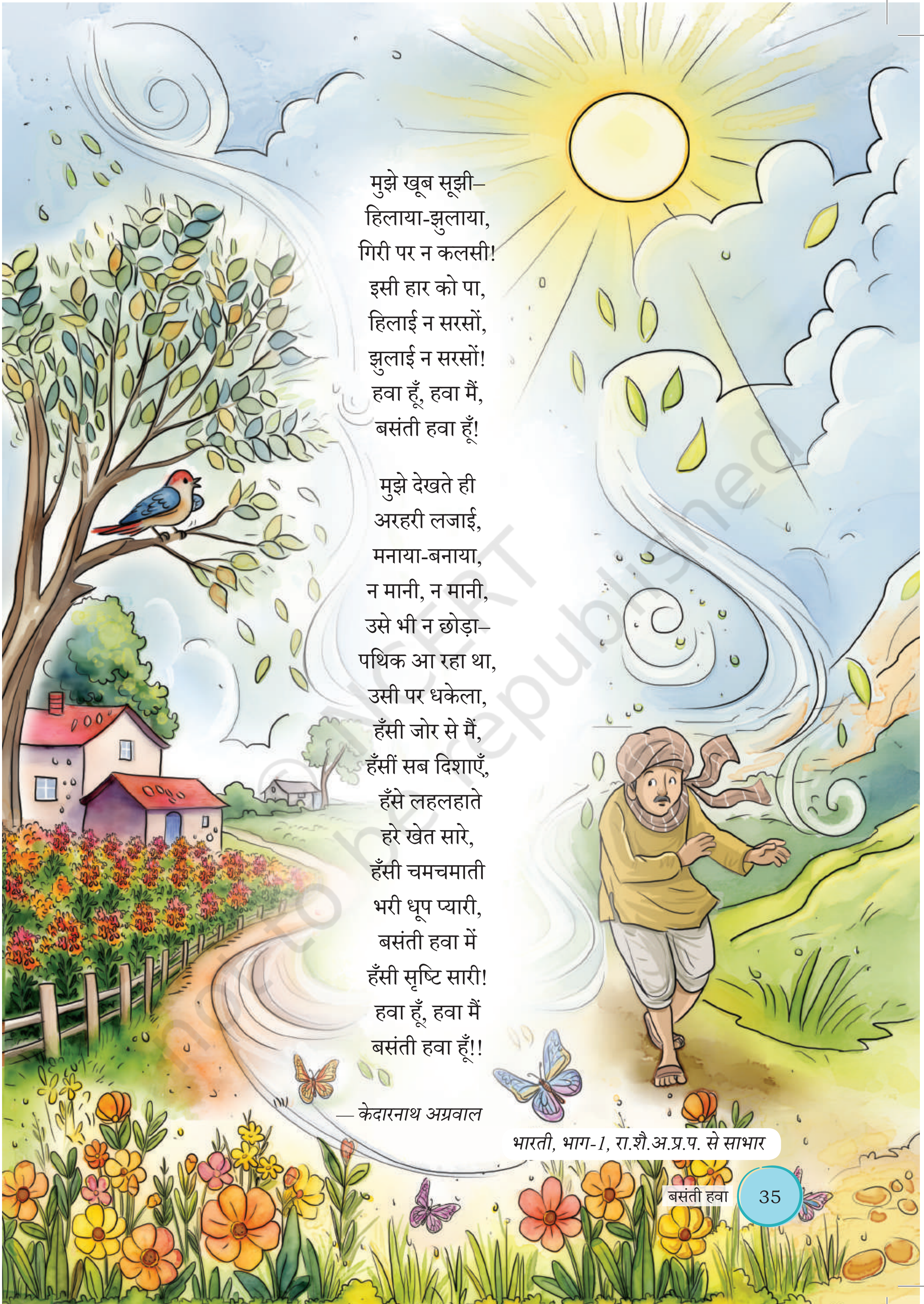

मुझे खूब सूझी–
हिलाया-झुलाया,
गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों!
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ!

मुझे देखते ही
अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया,
न मानी, न मानी,
उसे भी न छोड़ा–
पथिक आ रहा था,
उसी पर धकेला,
हँसी जोर से मैं,
हँसीं सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी,
बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!!

— केदारनाथ अग्रवाल

भारती, भाग-1, रा.शै.अ.प्र.प. से साभार

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 35 25-06-2026 16:38:10

कवि परिचय

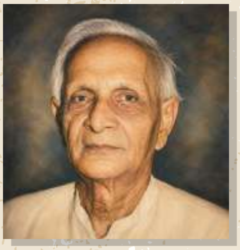

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के कमासिन गाँव में सन् 1911 में हुआ। *नींद के बादल*, *युग की गंगा*, *फूल नहीं रंग बोलते हैं*, *आग का आईना*, *पंख और पतवार* और *कहे केदार खरी-खरी* उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं। उनकी कई रचनाएँ बच्चों के बीच भी बेहद लोकप्रिय हैं। उनकी बाल कविताओं में प्रकृति, पशु-पक्षी और बाल-सुलभ कल्पनाओं का अद्भुत चित्रण है।

बातचीत के लिए

1. इस कविता में कौन अपना परिचय दे रहा है?
2. जब आप अपना परिचय किसी को देते हैं तो अपनी किन विशेषताओं को बताते हैं?
3. आपकी ये विशेषताएँ सामने वाले पर क्या प्रभाव डालती हैं?
4. कविता में बसंती हवा ने अपनी किन-किन खूबियों की बात की है?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. बसंती हवा का मुख्य गुण क्या है?

   (क) गंभीरता   (ख) चंचलता

   (ग) क्रोध   (घ) आलस्य

2. बसंती हवा ने अपने आपको किससे अलग बताया है?

   (क) पक्षियों से   (ख) पेड़ों से

   (ग) अन्य मुसाफिरों से   (घ) फूलों से

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 36 25-06-2026 16:38:11

3. बसंती हवा के कारण मनुष्य के मन में कौन-सा भाव उत्पन्न होता है?

(क) भय (ख) क्रोध

(ग) प्रसन्नता (घ) ईर्ष्या

4. बसंती हवा ने अपने आप को अजब मुसाफिर क्यों कहा है?

(क) वह बहुत धीमे चलती है।

(ख) वह केवल रात में चलती है।

(ग) उसके पास बहुत सारा सामान है।

(घ) वह निडर और स्वतंत्र रूप से हर जगह घूमती है।

5. कविता में बसंती हवा का प्रभाव किस पर पड़ता है?

(क) केवल फूलों पर (ख) केवल खेतों पर

(ग) संपूर्ण प्रकृति पर (घ) केवल पक्षियों पर

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

सोचिए और लिखिए

1. बसंती हवा अपना परिचय कैसे देती है?
2. कविता में बसंती हवा का कौन-सा गुण आपको सबसे अधिक प्रभावित करता है?
3. कविता में एक जगह बसंती हवा हार मान लेती है। उन पंक्तियों को खोजकर लिखिए।
4. 'बसंती हवा' कविता क्या संदेश देती है?
5. बसंती हवा सरसों को क्यों नहीं हिला-झुला पाई?

© NCERT not to be republished

भाषा की ओर

1. जब किसी नाम को बार-बार दोहराने से बचने के लिए उसके स्थान पर दूसरे शब्दों की आवश्यकता होती है, तब सर्वनाम का उपयोग होता है। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य अधिक सुंदर और प्रभावशाली बनते हैं।

"हवा हूँ, हवा मैं, बसंती हवा हूँ!"

- पंक्ति में 'मैं' शब्द किसके लिए आया है? ....
- आप अपने मित्र के नाम के बदले किस शब्द का प्रयोग करेंगे? ....
- आप अपने से बड़ों के नाम के बदले किन शब्दों का प्रयोग करेंगे? ....

2. नीचे वाक्यों में दिए गए रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

भयभीत, मित्र, जीत, बड़ा

- मेरी सहेली निडर है परंतु शेर को देखकर .... हो गई।
- चूहा बहुत छोटा होता है लेकिन हाथी बहुत .... होता है।
- शेखर के सरल स्वभाव के कारण उसका कोई शत्रु नहीं था, सभी उसके .... थे।
- मैच में हार जाने वाली टीम ने .... जाने वाली टीम को बधाई दी।

कविता की इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,

ऐसे शब्द जिनके अंत में एक जैसी या मिलती-जुलती ध्वनि हो, उन्हें **तुकांत शब्द** कहते हैं।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 38 25-06-2026 16:38:12

3. नीचे दिए गए एक जैसी या मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्दों पर गोला बनाइए—

- जिधर – उधर, मगन, कमरा
- हिलाई – चलाना, झुलाई, सिकाई
- मनाया – पकाया, चलाया, बनाना

हवा हूँ, हवा मैं, बसंती हवा हूँ!

'हवा' के लिए हम पवन, समीर, वात, बयार, अनिल, मारुत जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। मिलते-जुलते या समान अर्थ वाले ऐसे शब्दों को समानार्थी शब्द कहते हैं।

4. नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्दों पर घेरा बनाइए—

- नदी – सरिता, तटिनी, नहर
- पोखर – तालाब, प्रपात, सरोवर
- घर – आवास, सदन, मंजिल
- पेड़ – तरु, पौधा, वृक्ष

बसंती हवा हूँ

5. 'बसंती' शब्द में अनुस्वार (ं) का प्रयोग हुआ है और 'हूँ' शब्द में अनुनासिक (ँ) का प्रयोग हुआ है। आप इन शब्दों में अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (ँ) लगाकर शब्द लिखिए —

नही	
वहा	
पहुची	
सरसो	
हसे	

not to be republished © NCERT

Final Chapters Final.indd 39 25-06-2026 16:38:12

पाठ से आगे

- जिस तरह बसंती हवा अपना परिचय कविता में दे रही है, आप कक्षा में अपना परिचय दीजिए।
- भारत की ऋतुओं में बसंत ऋतु के महत्व पर एक अनुच्छेद लिखिए।
- आज हवा भी प्रदूषित हो रही है। वायु प्रदूषण के कारणों पर चर्चा कीजिए और उसकी रोकथाम के लिए उपाय बताइए।
- कल्पना कीजिए यदि प्रकृति में सुंदर-सुंदर रंग नहीं होते तो कैसा लगता?

खोजबीन

नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ी (लिंक) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।

https://www.youtube.com/watch?v=-ScgMMY5DYk&list=RD-ScgMMY5DYk&start_radio=

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
बसंती हवा	वसंत ऋतु में चलने वाली हवा	
बावली	पगली, सनकी	
मस्तमौला	आजाद तबीयत का, सदा मस्त रहने वाला	
मुसाफिर	यात्री	
अजब	अनोखा, विचित्र	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 40 25-06-2026 16:38:12

पोखर	तालाब	
महुआ	एक प्रकार का पेड़, जिसके फल-फूल खाने के काम आते हैं	
झकोरा	जोर से हिलाया	
अलसी	तीसी, सरसों की तरह तेल के काम आने वाली	
कलसी	छोटा घड़ा, गगरी	
अरहरी	अरहर का पौधा, दाल के रूप में प्रयुक्त एक अनाज	
लहलहाते	प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित, खुशी से भरे हुए	

केवल पठन हेतु

वह चली हवा

वह चली हवा,
वह चली हवा।

ना तू देखे
ना मैं देखूँ

पर पत्तों ने तो देख लिया
वरना वे खुशी मनाते क्यों?

वह चली हवा,
वह चली हवा।

— सुदर्शन

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 41 25-06-2026 16:38:14

5

न्याय की कुर्सी

उज्जैन की प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी के बाहर एक लंबा-चौड़ा मैदान था। यहाँ-वहाँ टीले थे। एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था। एक लड़का कूदता-भागता एक टीले पर चढ़ गया। अचानक वह ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसने इधर-उधर देखा कि किस चीज से ठोकर लगी है। उसको एक बड़े चिकने पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखा। वह उठकर गया और अपने मित्रों को बुलाकर वह शिला दिखाई। फिर शान से उस पर बैठकर बोला, "यह सिंहासन है मेरा। मैं राजा हूँ और तुम सब मेरे दरबारी।

तुम अपनी-अपनी फरियाद लेकर आओ। फिर मैं उनका फैसला करूँगा।"

दूसरे लड़कों को यह खेल पसंद आया। वे एक-एक करके आते और कोई काल्पनिक फरियाद सुनाते। फिर गवाह बुलाए जाते। उनकी गवाही ली जाती। उसके बाद राजा बना हुआ लड़का उनसे सवाल करता और अपना फैसला सुनाता।

इस खेल में उनको इतना मजा आया कि वे रोज ही यह खेल खेलने लगे। शिकायतें सुनी जातीं, अपराधी पेश किए जाते, बयान लिए जाते, फिर शिला पर बैठा हुआ लड़का अपना फैसला सुनाता।

बात इधर-उधर फैलने लगी। लोग लड़के की न्याय-बुद्धि की चर्चा करने लगे और कहने लगे कि अवश्य ही उस लड़के में कोई दैवी शक्ति है।

Final Chapters Final.indd 42 25-06-2026 16:38:16

एक दिन दो किसानों के बीच जमीन को लेकर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मामला गंभीर था। टीलेवाले लड़के की इतनी चर्चा थी कि वे राजा के दरबार में जाने की बजाय उसी के पास गए और उसको अपने झगड़े के बारे में बताया। लड़के ने बड़ी गंभीरता से दोनों किसानों के बयान सुने। उसके बाद उसने जो फैसला दिया, उसे सुनकर वे दंग रह गए।

उस दिन के बाद से तो नगर के सभी लोग अपनी फरियाद लेकर यहीं आने लगे। राजा के दरबार में कोई न जाता। और ऐसा कभी नहीं हुआ कि लड़के के फैसले से उन्हें संतोष न हुआ हो।

धीरे-धीरे यह बात राजा के कानों तक पहुँची। उसको बहुत क्रोध आया। उसने गरजकर कहा, "उस छोकरे की यह मजाल कि अपने को मुझसे अच्छा न्यायकर्ता समझे? मैं इन किस्सों में विश्वास नहीं करता। मैं खुद जाकर देखूँगा।"

ऐसा कहकर राजा अपने लाव-लश्कर के साथ उस मैदान में पहुँचा जहाँ लड़के अपना प्रिय खेल खेल रहे थे। बड़ी देर तक राजा उनका खेल देखता रहा। वह स्तंभित रह गया। उसने अपने मंत्री से कहा, "लड़का सचमुच बहुत बुद्धिमान है! इतनी छोटी उम्र में इतनी बुद्धि का होना आश्चर्य की बात है। इसकी न्याय-बुद्धि के आगे तो बड़े-बड़ों को लोहा मानना पड़ेगा।"

उसी समय किसी ने राजा को बताया, "लेकिन महाराज, यह तो रोज वाला लड़का नहीं है। वह बीमार हो गया है, इस कारण कोई नया ही लड़का टीले पर बैठा है।"

"यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा।"

राजा का इशारा पाते ही उस स्थान को खोदकर पत्थर को बाहर निकाला गया। राजा ने देखा कि वह पत्थर नहीं, बहुत ही सुंदर सिंहासन था। उस पर बहुत बारीक और खूबसूरत मूर्तियाँ खुदी हुई थीं। उसके चारों पायों पर चार देवदूतों की मूर्तियाँ बनी हुई थीं। चारों ओर खबर फैल गई। बात ही बात में वहाँ अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई। विद्वान पंडितों ने बताया कि वह कोई ऐसा-वैसा सिंहासन नहीं था— सदियों पुराना, राजा विक्रमादित्य का सिंहासन

© NCERT not to be republished

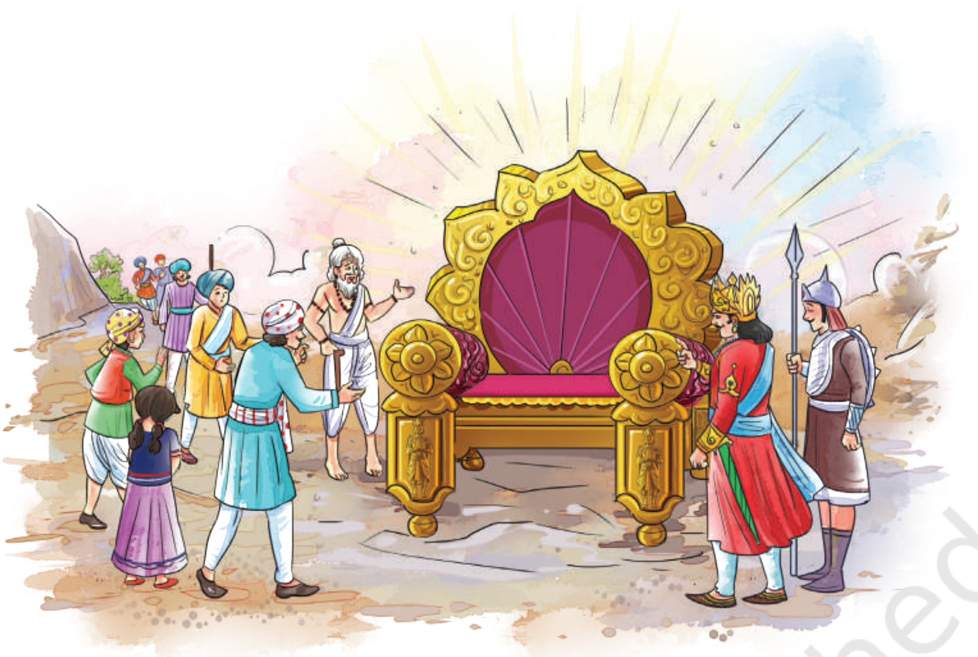

था। राजा विक्रमादित्य अपने न्याय और विवेक के लिए बहुत प्रसिद्ध थे।

राजा ने आज्ञा दी कि सिंहासन को ले जाकर राज दरबार में रख दिया जाए। "मैं इस पर बैठकर अपनी प्रजा की फरियाद सुनूँगा और उनका फैसला करूँगा," उसने कहा।

अगले दिन राजा दरबार में आया और सीधे उस सिंहासन की ओर बढ़ा। वह उस पर बैठने ही वाला था कि किसी की आवाज सुनाई दी, "ठहरो!"

राजा ने रुककर चारों ओर देखा। कोई नजर नहीं आया। उसने फिर सिंहासन पर बैठना चाहा। फिर इसी प्रकार आवाज आई, "ठहरो!" इस बार राजा ने आश्चर्य से देखा कि सिंहासन के एक पाये पर बनी मूर्ति बोल रही है।

मूर्ति ने कहा, "क्या तुम इस सिंहासन पर बैठने योग्य हो? क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुमने कभी चोरी नहीं की है?"

राजा ने लज्जा से सर झुका लिया। "यह सच है कि हाल में ही मैंने अपने एक दरबारी की जमीन पर कब्जा कर लिया था क्योंकि मैं उससे नाराज हो गया था।"

"तब तो तुम इसके योग्य नहीं हो," मूर्ति ने कहा। "तुमको तीन दिन तक प्रायश्चित करना होगा।" यह कहकर मूर्ति अपने पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

राजा ने तीन दिन तक उपवास किया और प्रार्थना की। चौथे दिन वह फिर दरबार में आया। ज्योंही सिंहासन पर बैठने लगा, दूसरी मूर्ति ने कहा, "ठहरो! तुम विश्वास के साथ कह सकते हो कि तुमने कभी झूठ नहीं बोला?"

not to be republished © NCERT
Final Chapters Final.indd 44 25-06-2026 16:38:20

राजा सकपकाया। झूठ तो उसने किसी न किसी मुसीबत से बचने के लिए कई बार बोला था। राजा पीछे हट गया। दूसरी मूर्ति भी पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

राजा ने तीन दिन तक फिर उपवास और पूजा-पाठ किया। तीसरी बार वह फिर सिंहासन पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। हिचकिचाते हुए वह आगे बढ़ा। बैठने ही वाला था कि तीसरी मूर्ति ने पूछा, "बैठने के पहले यह बताओ कि क्या तुमने कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाई है?"

राजा पीछे हट गया। तीसरी मूर्ति भी अपने पंख फैलाकर उड़ गई। फिर तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करने के बाद राजा सिंहासन की ओर बढ़ा। उसके पैर लड़खड़ा गए। चौथी मूर्ति ने कहा, "ठहरो! जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे, वे भोले-भाले थे। उनके मन में कलुष नहीं था। अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो।"

राजा बड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने मन ही मन कहा, "अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ? मैं राजा हूँ। मुझसे ज्यादा धनवान, बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा? मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ।"

यह कहकर राजा सिंहासन की ओर दृढ़ कदमों से बढ़ा। लेकिन उसी समय चौथी मूर्ति पंख फैलाकर सिंहासन समेत आकाश में उड़ गई।

– लीलावती भागवत

Final Chapters Final.indd 45 25-06-2026 16:38:22

बातचीत के लिए

1. कहानी में बच्चे न्याय करने का खेल खेल रहे थे। आप कौन-कौन से खेल खेलते हैं और किनके साथ खेलते हैं?
2. आपके खेलों में भी किसी न्याय या निर्णय करने वाले की आवश्यकता होती होगी। क्या आपने भी किसी खेल में यह भूमिका निभाई है? अपने अनुभव को साझा कीजिए।
3. जब कोई आपसे सलाह माँगता है या झगड़ा सुलझाने को कहता है, तो आप कैसे निर्णय लेते हैं कि सही क्या है और गलत क्या है?
4. क्या आपके विद्यालय, परिवार या मोहल्ले में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे लोग उसकी समझदारी और न्यायप्रियता के लिए बहुत मानते हैं? वे किस तरह दूसरों की सहायता करते हैं?
5. अगर आपको कहानी वाला यह सिंहासन मिल जाए, तो आप उसका उपयोग कैसे करेंगे?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. राजा सिंहासन पर क्यों नहीं बैठ पाया?

   (क) सिंहासन की मूर्तियाँ आसमान में उड़ गई थीं।

   (ख) सिंहासन की मूर्तियों ने उसे योग्य नहीं माना था।

   (ग) राजा स्वयं को उस पर बैठने योग्य नहीं मानता था।

   (घ) राजा ने मूर्तियों की शर्तें पूरी करने से मना कर दिया।

2. लड़के के न्याय करने के तरीके से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

   (क) वह अपराधी को कठोर दंड देता था।

   (ख) वह किसी का पक्ष नहीं लेता था।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 46 25-06-2026 16:38:22

(ग) वह न्याय करने को खेल समझता था।

(घ) वह राजा के आदेशों का पालन करता था।

3. "बात इधर-उधर फैलने लगी"— यहाँ 'बात' का क्या अर्थ है?

(क) लड़कों के अनोखे खेल की चर्चा

(ख) लड़के के बीमार पड़ने की चर्चा

(ग) लड़के की न्याय-बुद्धि की चर्चा

(घ) टीले पर मिले पत्थर की चर्चा

4. "राजा सिंहासन की ओर दृढ़ कदमों से बढ़ा।" कहानी के अंत में राजा चौथी मूर्ति की बात अनसुनी करके सिंहासन पर बैठने के लिए आगे क्यों बढ़ा?

(क) वह स्वयं को सिंहासन पर बैठने योग्य मानता था।

(ख) वह सिंहासन के जादू को परखना चाहता था।

(ग) वह मूर्तियों के बार-बार टोकने से ऊब गया था।

(घ) उसे मूर्तियों की बातों पर भरोसा नहीं रह गया था।

5. कहानी के अनुसार न्याय के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

(क) टीले पर बच्चों का खेल

(ख) विक्रमादित्य का सिंहासन

(ग) सच्चाई और पवित्र मन

(घ) योग्य शक्तिशाली राजा

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 47 25-06-2026 16:38:22

सोचिए और लिखिए

1. कहानी में बच्चों का प्रिय खेल क्या था? यह खेल लोगों के बीच प्रसिद्ध क्यों हो गया?
2. लड़के और राजा में से कौन अच्छा न्याय करता था? आपको ऐसा क्यों लगता है?
3. चौथी मूर्ति सिंहासन के साथ आकाश में क्यों उड़ गई?
4. इस कहानी में दो राजाओं के संबंध में बताया गया है। इन दोनों राजाओं में कौन-कौन से अंतर थे?
5. राजा को जब लड़के के न्याय के बारे में पता चला तो उसे क्रोध क्यों आया?
6. मूर्तियों ने राजा को बार-बार सिंहासन पर बैठने से क्यों रोका?

भाषा की ओर

आपके शब्द

1. नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों को आपकी भाषा में क्या कहते हैं? लिखिए —

पाठ से शब्द	आपकी भाषा में शब्द	इसके लिए कोई अन्य शब्द
मैं <u>राजा</u> हूँ और तुम सब मेरे दरबारी।		
उसको बहुत <u>क्रोध</u> आया।		
तुमने कभी <u>झूठ</u> नहीं बोला?		
अवश्य ही उस लड़के में कोई दैवी <u>शक्ति</u> है।		
अपने मित्रों को बुलाकर वह <u>शिला</u> दिखाई।		

© NCERT not to be republished

काल

"पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है।"

"मैं इसकी जाँच करूँगा।"

"यहाँ-वहाँ टीले थे।"

ये तीनों वाक्य अलग-अलग कालों को व्यक्त कर रहे हैं— वर्तमान काल, भूत काल और भविष्यत काल।

2. नीचे दिए गए वाक्यों के काल पहचानिए। उनका काल बदलकर लिखिए—

लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था। (भूतकाल)

लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा है। (वर्तमान काल)

लड़कों का एक झुंड वहाँ खेलेगा। (भविष्यत काल)

(क) वे रोज ही यह खेल खेलने लगे। (..................)

.... (..................)

.... (..................)

(ख) मैं खुद जाकर देखूँगा। (..................)

.... (..................)

.... (..................)

फिर से लिखें वाक्य

3. (क) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों का लिंग बदलकर वाक्य पुनः लिखिए। वाक्य में अन्य आवश्यक परिवर्तन भी कीजिए।

- <u>लड़कों</u> को यह खेल पसंद आया।

  <u>लड़कियों</u> को यह खेल पसंद आया।

- एक <u>लड़का</u> कूदता-भागता एक टीले पर चढ़ गया।

  ....

© NCERT not to be republished

- राजा पीछे हट गया।

  ....

- राजा सिंहासन की ओर दृढ़ कदमों से बढ़ा।

  ....

(ख) कहानी के निम्नलिखित भाग को इस प्रकार लिखिए जिसमें सभी पात्र स्त्रीलिंग में हों—

एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था। एक लड़का कूदता-भागता एक टीले पर चढ़ गया। वह ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसको एक बड़े चिकने पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखा। वह उठकर गया और अपने मित्रों को बुलाकर वह शिला दिखाई।

....

....

....

....

विराम चिह्न

यह तो और भी आश्चर्य की बात है हो न हो पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है मैं इसकी जाँच करूँगा

ऊपर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। आपको इसका अर्थ समझने में कुछ कठिनाई हो रही है न? अब इसी वाक्य को एक बार फिर पढ़िए—

"यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा।"

अब आपको इन वाक्यों का अर्थ और भाव ठीक-ठीक समझ में आ रहा होगा। इसका कारण है कुछ विशेष चिह्न जैसे– " " , । !

इस प्रकार के चिह्नों को 'विराम चिह्न' कहते हैं। विराम चिह्नों से पता चलता है कि लिखे हुए वाक्यों में कहाँ ठहराव है और उनका उपयुक्त भाव क्या है।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 50 25-06-2026 16:38:22

4. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए—

- चौथी मूर्ति ने कहा ठहरो जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे वे भोले-भाले थे उनके मन में कलुष नहीं था अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो
- राजा बड़ी देर तक सोचता रहा फिर उसने मन ही मन कहा अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ मैं राजा हूँ मुझसे ज्यादा धनवान बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ

5. कल्पना कीजिए कि कहानी का लड़का आपसे बातचीत कर रहा है। उसकी और अपनी बातचीत को नीचे दिए गए विराम-चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखिए—

“ ” , । ! ?

“आपका नाम क्या है?”

“मेरा नाम .... ।”

....

....

विशेषता बताने वाले शब्द

“उसको एक बड़े चिकने पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखा।”

इस वाक्य में ‘बड़े’ और चिकने’ शब्द ‘पत्थर’ शब्द की विशेषता बता रहे हैं। आप जानते ही होंगे कि संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने वाले ऐसे शब्दों को ‘विशेषण’ कहते हैं।

6. (क) नीचे दिए गए वाक्यों में नए-नए विशेषण जोड़कर वाक्यों को बढ़ाइए—

- उसको .... एक बड़े चिकने पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखा।
- उसी समय चौथी .... मूर्ति पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

© NCERT not to be republished

- भोले-भाले .... लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे।
- .... राजा सकपकाया।

संकेत– आप जितने अधिक विशेषण जोड़ सकते हैं, उतने जोड़ने का प्रयास कीजिए।

(ख) कहानी में आए व्यक्तियों/वस्तुओं के लिए उपयुक्त विशेषण शब्द लिखिए—

- .... सिंहासन
- .... राजा
- .... मूर्तियाँ
- .... लड़का
- .... मंत्री

संकेत– आप जितने अधिक विशेषण जोड़ सकते हैं, उतने जोड़ने का प्रयास कीजिए।

कहानी से मुहावरे

7. कहानी में आए निम्नलिखित मुहावरों को पहचानिए। उनके अर्थ समझिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

क्र.सं.	कहानी से वाक्य	मुहावरा	अर्थ
1.	अचानक वह ठोकर खाकर गिर पड़ा।	ठोकर खाना	चलने में किसी वस्तु की रुकावट के कारण पैर का चोट खाना और लड़खड़ाना, अड़चन आना, गलती होना, असफल होना
2.	बात इधर-उधर फैलने लगी।	बात फैलना	चर्चा फैलना, बात लोगों के मुँह से चारों ओर सुनाई पड़ना

© NCERT not to be republished

3.	जमीन को लेकर झगड़ा उठ खड़ा हुआ।	झगड़ा खड़ा होना	झगड़ा होना
4.	यह बात राजा के कानों तक पहुँची।	कानों तक पहुँचना	सुनाई देना, जानकारी में आना
5.	इसकी न्याय-बुद्धि के आगे बड़े-बड़ों को लोहा मानना पड़ेगा।	लोहा मानना	सामर्थ्य स्वीकार करना
6.	चारों ओर खबर फैल गई।	खबर फैलना	खबर उड़ना
7.	राजा ने लज्जा से सिर झुका लिया।	सिर झुकाना	सिर नवाना, नमस्कार करना, लज्जा से गरदन नीची करना, सादर स्वीकार करना, शर्मिंदा होना, हार मानना, अपनी गलती स्वीकार करना
8.	कोई नजर नहीं आया।	नजर आना	दिखाई देना, दिखना, दिखाई पड़ना, दृष्टिगोचर होना

पाठ से आगे

अनुमान और कल्पना

1. यदि आज के समय में ऐसा कोई सिंहासन मिल जाए तो क्या लोग उसे न्याय करने के लिए उपयोग करेंगे? क्यों या क्यों नहीं?
2. कल्पना कीजिए कि मूर्तियाँ राजा से प्रश्न पूछने के बजाय उसे सुझाव देतीं। वे उसे कौन-कौन से सुझाव देतीं?
3. यदि आप राजा होते तो मूर्तियों के प्रश्नों का क्या उत्तर देते?
4. कहानी के अंत में राजा सिंहासन पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। क्या राजा ने सही निर्णय लिया? वह और क्या-क्या कर सकता था? (*संकेत– सिंहासन को वापस*

© NCERT not to be republished
Final Chapters Final.indd 53 25-06-2026 16:38:23

कर देना, भूमि में गाड़ देना, उसे खाली छोड़ देना, स्वयं को उसपर बैठने के योग्य बनाना आदि)

5. कल्पना कीजिए कि नीचे दिए गए व्यक्तियों को राजा विक्रमादित्य का सिंहासन मिला है। सिंहासन की मूर्तियाँ इनसे कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगी? उन प्रश्नों को लिखिए—
   - आप से
   - आपके माता-पिता या अन्य किसी परिजन से
   - आपके शिक्षक/शिक्षिका से

सृजन

1. मान लीजिए कि इस कहानी के अंत में राजा सिंहासन पर बैठने में सफल हो जाता है। अब कहानी को आगे बढ़ाइए।
2. कहानी में राजा ने मूर्तियों के सवालों के जवाब सच्चाई से दिए थे। अगर वह झूठ बोलता तो कहानी कैसे बदल जाती? अपने मन से इस बदली हुई कहानी को बढ़ाइए।

परियोजना

(क) **शांति-योजना**– मान लीजिए कि आपको अपने स्कूल में किसी समस्या का हल निकालना है (उदाहरण के लिए– अनुशासन से जुड़ी कोई बात या दो दोस्तों के बीच झगड़े/विवाद सुलझाना)। अपने समूह में मिलकर उस समस्या पर सोच-विचार कीजिए। उसका समाधान कैसे किया जा सकता है, इसकी एक योजना बनाइए। उस योजना को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) **सुनो ध्यान से**– आपने कहानी में पढ़ा कि राजा को पहले पुतलियों की आवाज सुनाई दी, इसके बाद उसका ध्यान उन पर गया। क्या आप अपने आस-पास की आवाजों पर ध्यान देते हैं? अपने आस-पास की आवाजों को ध्यान से सुनिए और उन वस्तुओं/प्राणियों की सूची बनाइए जिनकी आवाज आपको सुनाई दी। अपने साथियों की सूची से अपनी सूची की तुलना कीजिए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 54 25-06-2026 16:38:23

आज की पहेली

(क) आज हम आपके लिए लाए हैं भारत के अलग-अलग राज्यों की पारंपरिक पहेलियाँ। तो आइए, बूझते हैं ये रंग-बिरंगी पहेलियाँ—

1. एक डिब्बी में बत्तीस बाबा
2. एक थाल औंधा पड़ा, नदी के तल पर रहे धरा
3. खाओ तो हड्डी नहीं, बोओ तो बीज नहीं
4. एक घर में सात द्वार
5. बचपन में हरी रही, बड़ी हुई तो लाल
   जिसने मुझको काट लिया, उसका बिगड़ा हाल
6. कौन-से फल में बीज नहीं?
7. गोबर का उपला, नदी पर तैरे

(ख) अपने राज्य में प्रचलित पहेलियाँ लिखिए और अपने साथियों से बूझिए।

खोजबीन

1. 'न्याय की कुर्सी' कहानी हमारे देश की सैकड़ों साल पुरानी एक पुस्तक पर आधारित है। उस पुस्तक का नाम है *सिंहासन बत्तीसी*। इस पुस्तक में राजा भोज को राजा विक्रमादित्य का सिंहासन मिलता है जो भूमि में गड़ा था। इसमें बत्तीस मूर्तियाँ जड़ी होती हैं। प्रत्येक मूर्ति राजा भोज को राजा विक्रमादित्य की एक कहानी सुनाती है। इस पुस्तक की प्रत्येक कहानी बहुत रोचक है। पुस्तकालय या किसी अन्य स्रोत से यह पुस्तक खोजकर पढ़िए और अपनी मनपसंद कहानी कक्षा में सुनाइए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 55 25-06-2026 16:38:24

2. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।

न्याय की कुर्सी

https://www.youtube.com/watch?v=SNa4FM6JqxQ

माँ कह एक कहानी

https://www.youtube.com/watch?v=nQUltEEDx4s

राजा बड़ा या विक्रमादित्य

https://www.youtube.com/watch?v=wHbS0ttloo4

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
फरियाद	शिकायत, निवेदन, विनती, प्रार्थना	
शिला	पत्थर, चट्टान, पाषाण, पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा	
लाव-लश्कर	सेना, सैनिकों का समूह, दल-बल	
प्रजा	जनता, राज्य के निवासी	
प्रायश्चित	पश्चाताप, अपनी गलती सुधारने का कार्य	
कलुष	पाप, गंदगी, मैल, पाप, दोष, कलंक	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 56 25-06-2026 16:38:24

स्तंभित	जो जड़ या अचल हो गया हो, अचंभित, हक्का-बक्का, निश्चल, निस्तब्ध, सुन्न, ठहरा हुआ	
सकपकाना	घबरा जाना, डर जाना, हिचकिचाना, चकपकाना, आश्चर्ययुक्त होना, आगा-पीछा करना, शरमाना	
दैवी	देवताओं की दी हुई, अलौकिक	
न्याय-बुद्धि	न्याय करने की क्षमता, सही-गलत का विवेक	
मजाल	साहस, हिम्मत, सामर्थ्य, शक्ति, ताकत	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 57 25-06-2026 16:38:24

6

हमारे ये कलामंदिर

इस बार निशा की मौसी ने दशहरे की छुट्टियों में निशा को अजंता और एलोरा दिखाने का वादा किया था। निशा ने पुस्तकों में अजंता, एलोरा के बारे में पढ़ा था। तभी से उसके मन में उत्सुकता थी कि ये गुफाएँ देखने में कैसी होंगी।

दशहरे की छुट्टियाँ आईं तो उनका अजंता और एलोरा जाने का कार्यक्रम बन गया। रेलगाड़ी में आरक्षण छत्रपति संभाजीनगर तक था। संभाजीनगर महाराष्ट्र राज्य का एक नगर है। संभाजीनगर पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी। निशा और मौसी ने स्टेशन पर ही विश्रामगृह में रात बिताई। दूसरे दिन बड़े सवेरे ही उठकर वे बस से अजंता की ओर चल पड़े। वहाँ से अजंता लगभग सौ किलोमीटर दूर था।

अजंता पहुँचकर जो दृश्य निशा ने देखा, वह बड़ा ही मनोरम था। एक ओर छोटी-सी नदी बह रही थी। नदी में बड़े-बड़े शिलाखंड पड़े थे। नदी के दक्षिण में एक पहाड़ी पर एक पंक्ति में उनतीस गुफाएँ थीं। इन गुफाओं का मुँह पूर्व दिशा की ओर होने के कारण प्रातःकाल के सूर्य की किरणें इनमें पड़ रही थीं। गुफा के ठीक नीचे एक कुंड बना था, जिसमें पानी भरा हुआ था। घाटी में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।

निशा, मौसी के साथ गुफाओं को देखने के लिए अंदर गई। उसने देखा कि गुफाओं के अंदर दीवारों पर अत्यंत सुंदर चित्र बने हैं। गौतम बुद्ध का घर छोड़ना, भिक्षुओं को उपदेश देना, साधु के रूप में अपनी पत्नी से भिक्षा माँगने जाना आदि के चित्र अत्यंत सजीव थे। इनके अतिरिक्त पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, स्त्रियों आदि के भी चित्र थे। उन्हें देखते ही निशा के मुँह

Final Chapters Final.indd 58 25-06-2026 16:38:31

से निकला, "वाह!" उन सभी चित्रों में अत्यंत सुंदर रंग भरे थे। सैकड़ों साल बीत जाने पर भी ये रंग फीके नहीं पड़े थे। मौसी ने कहा, "निशा, ये गुफाएँ दो हजार वर्ष पुरानी हैं।"

निशा ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "दो हजार वर्ष! पर आज भी इनके रंग ज्यों के त्यों कैसे हैं?"

मौसी ने कहा, "उस समय रंग बनाने का काम बहुत अलग था। ये रंग पत्तों, जड़ी-बूटियों, फूलों आदि से बनाए जाते थे।"

निशा टकटकी लगाए चित्रों को देखती रही। चित्रों में हाथों की मुद्रा, आँखों के भाव, अंगों की लोच, चेहरे पर सुख-दुख के भाव, चेहरे पर झुर्रियाँ सभी कुछ अत्यंत अद्भुत था। ऐसे सजीव चित्र थे कि लगता था अभी बोल पड़ेंगे।

कुछ गुफाएँ अत्यंत लंबी-चौड़ी थीं, कुछ छोटी। निशा को सबसे अधिक आश्चर्य यह देखकर हुआ कि ये गुफाएँ पहाड़ों को ही काटकर बनाई गई थीं। इन गुफाओं में बनी मूर्तियाँ भी पत्थरों को तराश कर बनाई गई थीं।

अजंता की गुफाएँ देखकर निशा और मौसी वापस संभाजीनगर आए। वहाँ से वे दूसरे दिन बस में बैठकर एलोरा की गुफाएँ देखने चल पड़े। संभाजीनगर से एलोरा लगभग चालीस किलोमीटर दूर है।

एलोरा पहुँचकर निशा ने देखा कि पहाड़ों को ही काटकर लगभग तीस मंदिर बनाए गए हैं। इन मंदिरों में बहुत ही सुंदर मूर्तियाँ देखने को मिलीं। ये मूर्तियाँ केवल बौद्ध धर्म से ही संबंधित नहीं थीं, बल्कि इनमें कुछ हिंदू और जैन धर्म से भी संबंधित थीं।

Final Chapters Final.indd 59 25-06-2026 16:38:37

इन मूर्तियों की कारीगरी देखते ही बनती थी। बड़ी-बड़ी विशाल शिलाओं को तराश कर इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें तथा मूर्तियाँ गढ़ी गई थीं। निशा उन्हें देख-देखकर चकित हो रही थी। कैलाश मंदिर दिखाते हुए मौसी ने कहा, "निशा, यह अत्यंत प्रसिद्ध मंदिर है। पूरा मंदिर एक ऊँचे पहाड़ को ऊपर की ओर से तराश कर बनाया गया है। देखो, एक ही चट्टान से बनी इतनी बड़ी और सुंदर इमारत कितनी अद्भुत है।"

निशा—"अद्भुत! यह विश्वास करना भी कठिन है कि सैकड़ों वर्ष पहले भी हमारे देश में कला का इतना विकास हो चुका था।"

अजंता और एलोरा देखकर निशा और मौसी वापस लौट आए पर निशा का मन अभी भी उन बेजोड़ कलाकृतियों की ओर लगा था।

बातचीत के लिए

1. आप अपनी छुट्टियों में क्या-क्या करते हैं?
2. यदि आपको अपने मनपसंद स्थान पर घूमने का अवसर मिले तो आप कहाँ जाना चाहेंगे और क्यों?
3. आप जहाँ जाना चाहते हैं, आपके घर से वहाँ तक कैसे पहुँचा जा सकता है?
4. यदि आपने किसी प्राचीन मूर्ति अथवा कलाकृति को देखा हो तो आपने क्या महसूस किया? अपना अनुभव साझा कीजिए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 60 25-06-2026 16:38:51

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. निशा अजंता और एलोरा जाने को उत्सुक क्यों थी?

   (क) वहाँ तक पहुँचना रोमांचकारी होगा। (ख) मौसी के साथ जाना सुखद होगा।

   (ग) उसने गुफाओं के बारे में पढ़ा था। (घ) छुट्टियों में घूमना मनोरंजक होगा।

2. संभाजीनगर में निशा और मौसी ने विश्रामगृह में रात क्यों बिताई?

   (क) सुबह से निकले हुए वे दोनों थक गए थे।

   (ख) उनका आरक्षण संभाजीनगर तक ही था।

   (ग) वे विश्रामगृह का अनुभव करना चाहते थे।

   (घ) आगे जाने से पूर्व विश्रामगृह में रुकना अनिवार्य था।

3. गुफाओं के अंदर दीवारों पर किसके सुंदर चित्र बने थे?

   (क) इंद्र, बारिश, नदी, पहाड़ और सूरज के चित्र

   (ख) गौतम बुद्ध, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और स्त्रियों के चित्र

   (ग) किसान, मजदूर और बढ़ई के चित्र

   (घ) आधुनिक कल-कारखानों के चित्र

4. गुफाओं के चित्रों के रंग इतने वर्षों बाद भी फीके क्यों नहीं पड़े थे?

   (क) रासायनिक रंगों को मिलाकर बनाए गए थे।

   (ख) वहाँ की जलवायु के कारण सुरक्षित थे।

   (ग) पत्तों, जड़ी-बूटियों, फूलों आदि से बनाए गए थे।

   (घ) इन्हें फीके न पड़ने का वरदान प्राप्त था।

5. अजंता की गुफाएँ देखकर निशा को सबसे अधिक आश्चर्य क्या हुआ?

   (क) इतनी पुरानी होकर भी नई लगती थीं। (ख) इनके चित्र बहुत सुंदर और रंगीन थे।

   (ग) पहाड़ों को काटकर बनाई गई थीं। (घ) गुफाओं के अंदर पानी बह रहा था।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 61 25-06-2026 16:38:52

संकेत– आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।

सोचिए और लिखिए

1. चित्रों में कौन-सी विशेषताएँ थीं जिनके कारण निशा को लगा कि चित्र अभी बोल पड़ेंगे?
2. एलोरा की गुफाओं को देखकर निशा चकित क्यों हो रही थी?
3. अजंता की गुफाओं का मुँह पूर्व दिशा में क्यों बनाया गया होगा?
4. आपको अजंता और एलोरा की गुफाओं में सबसे बड़ी विशेषता कौन-सी लगी?
5. अजंता की गुफाओं के अंदर गौतम बुद्ध के कौन-कौन से चित्र दिखाई दिए?

भाषा की ओर

मिलान करें

1. पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन्हें उपयुक्त अर्थों के साथ रेखाएँ खींचकर मिलाइए—

शब्द	अर्थ
विश्रामगृह	जमीन या पहाड़ के नीचे या अंदर की विस्तृत और खाली जगह जो नीचे दूर तक चली गई हो, कंदरा, गुहा
गुफा	तालाब, जलाशय
कुंड	संन्यासी, याचक
भिक्षु	आराम करने की जगह, आरामगृह, विश्राम भवन, विश्राम स्थल, विश्रामागार

© NCERT not to be republished

2. नीचे वाक्यों में दिए गए रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

उनतीस तीस चालीस सौ

(क) संभाजीनगर से अजंता .... किलोमीटर दूर है।

(ख) नदी के दक्षिण में एक पहाड़ी पर एक पंक्ति में .... गुफाएँ थीं।

(ग) संभाजीनगर से एलोरा .... किलोमीटर दूर है।

(घ) एलोरा में पहाड़ों को काटकर लगभग .... मंदिर बनाए गए हैं।

विशेषण

रंग-बिरंगे फूल *सुंदर चित्र*

पहले उदाहरण में फूल की विशेषता रंग-बिरंगे है जिससे फूल के गुण का पता चल रहा है।
दूसरे उदाहरण में चित्र की विशेषता सुंदर है जिससे चित्र के गुण का पता चल रहा है।

उनतीस गुफाएँ *सैकड़ों साल*

पहले उदाहरण में गुफा (संज्ञा) की विशेषता उनतीस है जिससे गुफाओं की संख्या का पता चल रहा है।
दूसरे उदाहरण में साल (संज्ञा) की विशेषता सैकड़ों (कई सौ) है जिससे सालों की संख्या का पता चल रहा है।
जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की किसी विशेषता का पता चलता है, उन्हें विशेषण कहते हैं।

3. दी गई संख्याओं के साथ संज्ञा अथवा सर्वनाम जोड़कर वाक्य बनाइए—

- बीस ....
- सफेद ....

Final Chapters Final.indd 63 25-06-2026 16:38:53

- एक दर्जन ....
- पतला ....

पत्र

4. निशा अजंता और एलोरा देखकर वापस आ चुकी है। वह अपनी सहपाठी विजया को पत्र लिखकर बताना चाहती है कि अजंता और एलोरा की गुफाएँ उसे कैसी लगीं। स्वयं को निशा मानकर पत्र के प्रारूप में विजया को पत्र लिखिए—

निशा का पता ....

दिनांक ....

प्रिय मित्र ....

बहुत प्यार

पत्र का आरंभ ....
....
....
....
....
....
....
....
....

तुम्हारी मित्र
....

© NCERT not to be republished

पाठ से आगे

समझ और अनुभव

1. अजंता और एलोरा की गुफाएँ देखकर निशा के मन में कई प्रश्न उठे। आप जब नई जगहों पर जाते हैं, तो कौन-कौन से प्रश्न आपके मन में उठते हैं?

2. निशा का मन अभी भी उन बेजोड़ कलाकृतियों की ओर लगा था।

निशा को उन कलाकृतियों की कौन-कौन सी बातें याद आ रही होंगी। अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कर लिखिए।

- पत्थर को तराश कर बनाई गई गुफाएँ
- ....
- ....
- ....
- ....
- ....

परियोजना

निशा दशहरे की छुट्टियों में अपनी मौसीजी के साथ अजंता-एलोरा घूमने गई। आप जब कभी छुट्टियों में घूमने जाते हैं तो आपको बहुत-सी तैयारियाँ करनी पड़ती हैं। यात्रा पर जाने से पहले, यात्रा के दौरान एवं यात्रा के बाद आप क्या-क्या तैयारी करते हैं? अपने समूह में चर्चा कर लिखिए—

उदाहरण के लिए–

यात्रा से पहले	यात्रा के दौरान	यात्रा से आने के बाद
• उस स्थान से संबंधित जानकारी जुटाना • टिकट खरीदना	• उस स्थान से संबंधित बातें करना • खाने-पीने का प्रबंध करना	• यात्रा के अनुभव अपने मित्रों के साथ साझा करना • यात्रा में प्रयोग हुए कपड़े धोने के लिए निकालना
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

© NCERT not to be republished

खोजबीन

1. आपने अजंता-एलोरा के बारे में एक पाठ पढ़ा है। अब भारत के अन्य दर्शनीय स्थानों के बारे में अपने पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोतों से खोजबीन कीजिए और पढ़िए। कक्षा में उसके बारे में बताइए।

2. "इन मूर्तियों की कारीगरी देखते ही बनती थी। बड़ी-बड़ी विशाल शिलाओं को तराश कर इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें तथा मूर्तियाँ गढ़ी गई थीं।"

आप जिस प्रांत में रहते हैं, वहाँ पर कोई न कोई ऐसा स्मारक अथवा मंदिर अवश्य होगा जो बहुत प्राचीन होगा। अवश्य ही आपने अपने या किसी दूसरे प्रांत में कोई ऐसा स्मारक या मंदिर देखा होगा। पता लगाइए कि—

- सैकड़ों साल पहले आज की तरह बिजली और उससे चलने वाली मशीनें नहीं थी। बिजली एवं मशीनों के बिना मूर्तियाँ बनाने के पत्थर कैसे काटे जाते होंगे?
- ये मंदिर अथवा स्मारक बहुत ऊँचाई पर भी बने हैं। पता लगाइए कि इतनी ऊँचाई पर चढ़कर कार्य कैसे किया जाता होगा?

3. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।

https://www.youtube.com/live/vHjykYvqeRA?si=8cbAa0kYFBoc3S66

https://www.youtube.com/live/vHjykYvqeRA?si=8cbAa0kYFBoc3S66

https://youtu.be/3TgJnu_7m0Y?si=fPhtweUhYmbVTmKj

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 66 25-06-2026 16:38:54

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
उत्सुकता	किसी विशेष कार्य, वस्तु या घटना के प्रति मन की तीव्र अभिलाषा, उत्कंठा या जानने की इच्छा	
कार्यक्रम	किसी कार्य की सूची, किए जाने वाले या होने वाले कामों का क्रम, व्यवस्था या रूपरेखा	
आरक्षण	किसी वस्तु अथवा स्थान को विशेष उपयोग या व्यक्ति के लिए अलग से सुरक्षित रखना	
विश्रामगृह	आराम करने या ठहरने का स्थान	
मनोरम	मन को भाने वाला, मन को रमाने वाला, सुंदर या आकर्षक	
शिलाखंड	पत्थर का बड़ा टुकड़ा या चट्टान	
कारीगरी	किसी वस्तु को बनाने या सँवारने का कौशल, हुनर या शिल्पकला	
अद्भुत	आश्चर्यजनक, विलक्षण, अनोखा या विचित्र	
प्रसिद्ध	विख्यात या मशहूर	
बेजोड़	जिसके जोड़ या बराबरी का और कोई न हो, अद्वितीय, अनुपम और बेमिसाल	
कलाकृति	कला की कोई सुंदर वस्तु, कलात्मक रचना या शिल्प की वस्तु	

© NCERT not to be republished

7

चंद्रशेखर वेंकटरमन

29 मई, 1957! ... बंगलौर के सांध्य आकाश में श्यामल मेघ घिर आए हैं। घूमते-घूमते सहसा हमारे आतिथेय धनजी भाई बोल उठते हैं, "रमन इंस्टीच्यूट देखोगे?" और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना गाड़ी को एक विशाल और भव्य भवन के अहाते की ओर मोड़ देते हैं। द्वार पर लिखा है, "यह आम रास्ता नहीं है। बिना आज्ञा प्रवेश वर्जित है।" मैं हठात उस ओर संकेत करता हूँ तो धनजी भाई कहते हैं, "यह तो विदेशियों के लिए लिखा है। संस्था हमारी है। हमें कौन रोक सकता है?" और बरामदे के पास गाड़ी रोककर वह चपरासी को पुकारते हैं, "रमन साहब हैं? उनको बोलो कि हम आए हैं।"

कुछ कहूँ कि इससे पूर्व ही देखता हूँ कि अंदर से आकर एक व्यक्ति तेजी से अंग्रेजी में कह रहा है, "मैं जानता हूँ तुम बिना आज्ञा अंदर आए हो, पर कोई बात नहीं। किसी से कहना मत। मेरे पास पंद्रह मिनट हैं....।"

हम लोग सँभलें कि वे तीव्र गति से आगे बढ़ जाते हैं। हम विश्वास ही नहीं कर पाते कि नोबेल पुरस्कार प्राप्त, प्रकाश एवं नाद विज्ञान के विशेषज्ञ, विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन ये ही हैं। कोट, पतलून, जूता, दक्षिण भारतीय शैली की पगड़ी, नाक कुछ लंबी, बाईं ओर का दाँत टूटा हुआ, बाँह और गले पर से कोट भी फटा हुआ। ये हैं— रमन! यह व्यक्तित्व है इनका!

विचार तीव्र गति से उमड़ते-घुमड़ते हैं। उतनी ही तीव्र गति से वे बोलते चले जाते हैं। सहसा गंभीर होकर वे मेरी ओर मुड़ आते हैं और पूछते हैं, "जानते हो, मेरा मतलब क्या है?"

मैं अचकचाकर कहता हूँ, "जी... जी"

तभी यशपाल जी हँसते हुए मेरा हाथ दबाते हैं, "क्या खाक जानते हो। यह तो उनका तकियाकलाम है।"

सचमुच उस एक घंटे में वे अनेक बार इस वाक्य का प्रयोग करते हैं। आरंभ में उन्होंने कहा था, "मेरे पास तो पंद्रह मिनट हैं।" लेकिन जब हम उनसे विदा लेते हैं तो पता लगता

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 68 25-06-2026 16:38:55

है कि एक घंटा कभी का बीत चुका है। जल-प्रलय के सिद्धांत की व्यर्थता से लेकर पत्तों के कोयले के नाना रूपों में रूपांतरण, हीरे के निर्माण, नाना धातुओं, ग्रेनाइट, न जाने इन सबके बारे में वे हम अवैज्ञानिकों को क्या-क्या बता देते हैं। तीव्रता से बोलते रहते हैं, "देखो, यह है ऑयल डायमंड। यह इंडस्ट्रियल डायमंड है, ये मोती हैं, चमकते हैं न? ना-ना, इन्हें छूना मत। हीरे कोयले की खानों में ही पैदा होते हैं, पर उनको चमकदार बनाने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। तुम तो जानते ही हो कि भारत में नोबेल प्राइज पाने वाले दो व्यक्ति थे। अब एक मैं ही जीवित हूँ इसीलिए मेरी मुसीबत है।"

बीच-बीच में वे ऐसी बातें कह जाते हैं जिनका कोई पूर्वापर संबंध नहीं होता, लेकिन अर्थ अवश्य होता है। उनके संग्रहालय में नाना प्रकार के शंख, सीपियाँ, तितलियों का भंडार, समुद्र के नाना रूप जीव-जंतु हैं। आग्रहपूर्वक वे एक-एक वस्तु को दिखाते हैं। दिखाते ही नहीं, समझाते हैं। घूम-घूमकर पूरा भवन दिखाते हैं, बाग दिखाते हैं, कहाँ क्या बनाने की उनकी कल्पना है, यह सब बड़ी आत्मीयता से समझाते हैं और बीच-बीच में सहसा हमारी ओर मुड़कर कह उठते हैं, "क्या तुम इस बारे में कुछ लिखोगे? मैं जानता हूँ, तुम कुछ नहीं लिखोगे।"

फिर एक क्षण बाद कहते हैं, "यदि लिखो तो यह अवश्य लिखना कि ऊपर की मंजिल की खिड़की से चारों ओर का दृश्य बहुत मनोरम दिखाई देता है।"

और फिर सांध्य मेघों की तरल छाया में दूर तक फैली हुई हरितवसना पहाड़ियों और ऊँचे वृक्षों को स्निग्ध दृष्टि से देखते हुए कहते हैं, "है न बंगलौर सुंदर !"

मैं कभी उनकी ओर देखता हूँ, कभी चारों ओर के सौंदर्य पर दृष्टि डालता हूँ। इंस्टीच्यूट के भीतर भी तो सब कुछ सुंदर ही सुंदर है। अचानक दृष्टि ब्लैकबोर्ड पर अटक कर रह जाती है। उस पर विज्ञान के किसी सिद्धांत के बारे में कुछ लिखा है। कह उठता हूँ, "कितने सुंदर अक्षर हैं, मोती जैसे!"

वैज्ञानिक रमन मुसकराकर कहते हैं, "विज्ञान आदमी को सौंदर्य की ही प्रेरणा देता है।"

इसी प्रसंग में सुधीर कहता है, "मेरी पुस्तक में आपका चित्र है।"

वे तुरंत उसके कंधे पर हाथ रखकर बोल उठते हैं, "तो तुम विद्यार्थी हो! मैं तुमको कुछ ऐसी वस्तुएँ दिखाऊँगा जो किसी को दिखाना पसंद नहीं करता। मेरे साथ आओ।" और वे हमको अपने छोटे-से कमरे में ले जाते हैं, जिसमें कई अलमारियाँ हैं। वे उन्हें खोलते हैं और देखते-देखते हमारे सामने नाना रंग के अनेक मैडल और अनेक प्रमाणपत्रों का ढेर लग जाता

© NCERT not to be republished

है। अनेक मैडलों के बीच में प्रकाश फेंकते हुए नोबेल पुरस्कार के उस भव्य पदक को हम बड़ी उत्सुकता से देखते हैं, जो उन्हें 1930 में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने के लिए मिला था। श्री रमन ने अपना जीवन भारतीय अर्थ विभाग में असिस्टेंट एकाउंटेंट जनरल के पद से आरंभ किया था, लेकिन शीघ्र ही वे विज्ञान के क्षेत्र में आ गए और फिर तो विश्व के सर्वोच्च कोटि के वैज्ञानिकों की श्रेणी में पहुँचकर ही रुके। उन्होंने विज्ञान की शिक्षा विदेशों में नहीं प्राप्त की। इसी देश की मिट्टी में अपनी महानता को खोजा। समुद्र को देखकर उन्होंने कल्पना की कि स्वच्छ जल में होकर जब प्रकाश चलता है, तब प्रकाश के फैलने की प्रक्रिया में नाना रंग उत्पन्न होते हैं।

उनकी इस खोज के बारे में सोचते-सोचते न जाने मैं कहाँ चला जाता हूँ कि सहसा सुनता हूँ, वे कह रहे हैं, "इस पदक को देखो, कितना असुंदर है।"

सहसा झटका लगता है, लेकिन जब उस बोर्ड पर लगे हुए पदकों को देखता हूँ तो सचमुच ही उनमें 'भारत रत्न' का पदक असुंदर ही दिखाई देता है। उससे असुंदर एक और पदक है 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' का। गलतफहमी न हो, यहाँ भौतिक सौंदर्य की चर्चा है और मैं जानता हूँ, उन्होंने इस शब्द का प्रयोग इसीलिए किया कि कुछ क्षण पहले मैंने अक्षरों के सौंदर्य की प्रशंसा की थी।

एकाएक वे बोल उठते हैं, "आओ, आओ, आप लोगों को कुछ और सुंदर वस्तुएँ दिखाऊँ।"

और वे तीव्र गति से आगे बढ़ जाते हैं। पीछे-पीछे हम भी एक छोटे-से कमरे में पहुँचते हैं। विज्ञान के नाना उपकरणों से सजा यह कमरा कुछ ही क्षणों में इंद्रधनुष के प्रकाश से जगमगा उठता है। आश्चर्य से हम एक-दूसरे को देखते हैं। जैसे हम सब रंगों के सागर में तैर रहे हों। वैसे ही, जैसे नाना रूप-रंग की परियाँ बच्चों के स्वप्न संसार में तैरा करती हैं और प्रकाश तथा रंग के जादूगर रमन हैं कि कभी यह स्विच दबाते हैं तो कभी वह, और फिर कोट की जेब में हाथ डालकर स्रष्टा की तरह निःसंग भाव से मुसकराने लगते हैं और वह पराबैंगनी प्रकाश हमको अलौकिक रूप देता रहता है।

काफी कुछ देख चुके हैं। अंत में सोने और हीरे के नाना रूपों को देखते हैं, इस बार हिंदी में कहते हैं, "सब देखा, हो गया।"

और फिर बोल उठते हैं, "मैंने तुम्हें इतना समय दिया। मेरा भी एक काम करना। तुम लोगों को कहीं से हीरे मिलें तो मेरे पास भेज देना, अच्छा!"

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 70 25-06-2026 16:38:55

और फिर वही शिशु-सुलभ शरारत भरी मुसकान। हम भी मुसकराते हुए कह देते हैं, “अवश्य भेजेंगे।”

हम सब छत पर आ गए हैं। विदा लें, इससे पूर्व यशपाल जी उनसे प्रार्थना करते हैं, “आपका एक चित्र खींचने की इच्छा है।”

वे जैसे एकदम तड़प उठते हैं, “इस फटे कोट में चित्र खींचोगे? यानी आप दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि मैं फटा कोट पहनता हूँ? खैर, कोई बात नहीं, खींच लो।”

यशपाल भाई फोटो खींचते हैं और फिर हम इस आकस्मिक अद्‌भुत प्रसंग से अभिभूत कई क्षण मौन चलते रहते हैं।

वे उसी निःसंग भाव से हाथ मिलाते हैं, नमस्कार करते हैं और मुसकराते हुए धूमकेतु की तरह जैसे आए थे, वैसे ही भीतर चले जाते हैं। जब चले जाते हैं, तब हमें उनकी उपस्थिति का भान होता है।

छह वर्ष बाद आज (1963) मैं सोचता हूँ कि अनुसंधानकर्ता की लगन, वृद्ध की सनक और शिशु की सरलता— इनकी सीमा-रेखा कितनी पतली है। इस चित्र में क्या वे एक साथ सरल स्वभाव, कल्पनाप्रिय, सद्‌भावी और आत्म-प्रदर्शन प्रिय, महत्वाकांक्षी नहीं जान पड़ते? परंतु सच यह है कि जो जितना ऊँचा उठता है, वह उतना ही सरल और सहज रहता है।

– *विष्णु प्रभाकर*

लेखक परिचय

विष्णु प्रभाकर हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं। उनका जन्म सन् 1912 को हुआ था। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक और जीवनी जैसी अनेक विधाओं में लेखन किया है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना *आवारा मसीहा* है, जो शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए हैं।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 71 25-06-2026 16:38:56

बातचीत के लिए

1. चंद्रशेखर वेंकटरमन की कौन-सी बात आपको सबसे अधिक प्रेरित करती है?
2. यदि आपको चंद्रशेखर वेंकटरमन से मिलने का अवसर मिलता तो आप उनसे कौन-सा प्रश्न पूछते और क्यों?
3. हीरे के उदाहरण के माध्यम से चंद्रशेखर वेंकटरमन ने क्या संदेश दिया है?
4. वैज्ञानिक बनने के लिए विद्यार्थियों को क्या करना होगा?
5. क्या विज्ञान की शिक्षा विदेशों में प्राप्त कर ही सफल वैज्ञानिक बना जा सकता है?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. चंद्रशेखर वेंकटरमन अपनी उपलब्धियों के बावजूद भी .... बने रहे।

   (क) जिद्दी (ख) विनम्र (ग) अहंकारी (घ) संकोची

2. चंद्रशेखर वेंकटरमन द्वारा बंगलौर (बेंगलुरु) की सुंदरता की प्रशंसा करना किस बात को दर्शाता है?

   (क) वे केवल अपने शहर की प्रसिद्धि बढ़ाना चाहते थे।

   (ख) उन्हें प्रकृति और सौंदर्य के प्रति विशेष लगाव था।

   (ग) वे अतिथियों को प्रभावित करना चाहते थे।

   (घ) उन्हें वैज्ञानिक कार्यों में रुचि नहीं थी।

3. एक आदर्श वैज्ञानिक में कौन-से गुण होने चाहिए?

   (क) ज्ञान और प्रसिद्धि

   (ख) चंचलता और जिद्दी

   (ग) जिज्ञासा और परिश्रम

   (घ) पुरस्कार और सम्मान की लालसा

© NCERT not to be republished

4. कथन : चंद्रशेखर वेंकटरमन को विज्ञान के साथ-साथ सौंदर्य में भी रुचि थी।

कारण : उन्होंने कहा था कि विज्ञान आदमी को सौंदर्य की प्रेरणा देता है।

(क) कथन सही है किंतु कारण गलत है।

(ख) कथन गलत है किंतु कारण सही है।

(ग) कथन और कारण, दोनों गलत हैं।

(घ) कथन और कारण, दोनों सही हैं।

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए—

i चंद्रशेखर वेंकटरमन ने अपनी महानता इसी देश की मिट्टी में खोजी।

ii चंद्रशेखर वेंकटरमन बाहरी दिखावे को बहुत महत्व देते थे।

iii चंद्रशेखर वेंकटरमन अपने ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करना पसंद करते थे।

विकल्प—

(क) i और ii सही हैं।

(ख) i और iii सही हैं।

(ग) ii और iii सही हैं।

(घ) i, ii और iii सभी सही हैं।

***संकेत*– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

सोचिए और लिखिए

1. चंद्रशेखर वेंकटरमन की वेशभूषा देखकर लेखक को क्यों आश्चर्य हुआ?
2. लेखक ने चंद्रशेखर वेंकटरमन को 'प्रकाश तथा रंग के जादूगर' क्यों कहा है?
3. पाठ के आधार पर बताइए कि एक वैज्ञानिक में ज्ञान के साथ-साथ कौन-कौन से मानवीय गुण होने चाहिए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 73 25-06-2026 16:38:57

4. लेखक ने चंद्रशेखर वेंकटरमन के स्वभाव को शिशु-सुलभ क्यों कहा है?

5. "इसी देश की मिट्टी में उन्होंने अपनी महानता को खोजा"— आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा की ओर

उच्चारण

निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए—

(क) रुकना, रुपया, गुरु, रूप, रूपांतरण, शुरू

(ख) संग्रहालय, तीव्र, प्रलय, चित्र, परिश्रम, इंडस्ट्रियल, राष्ट्र, ड्रामा

(ग) पूर्व, प्रार्थना, अर्थ, सर्वोच्च, निर्माण, विद्यार्थी, वर्जित

आप अनुभव करेंगे कि इनके बोलने और लिखने में 'र' विभिन्न रूपों में प्रयुक्त हुआ है।

1. निम्नलिखित तालिका को पाठ में आए 'र' के विभिन्न रूपों वाले शब्दों से पूरा कीजिए—

गुरु	चित्र	प्रार्थना

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 74 25-06-2026 16:38:57

अनेकार्थी शब्द

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए—

*चंद्रशेखर वेंकटरमन ने **प्रकाश** के क्षेत्र में महत्वपूर्ण खोज की।*

*चंद्रशेखर वेंकटरमन की खोज से उनका **प्रकाश** पूरे विश्व में फैल गया।*

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में **'प्रकाश'** शब्द का प्रयोग हुआ है। पहले वाक्य में 'प्रकाश' शब्द 'रोशनी' के अर्थ में प्रयुक्त है, वहीं दूसरे वाक्य में वह शब्द 'यश' और 'प्रसिद्धि' के अर्थ में प्रयुक्त है। इस प्रकार **'प्रकाश'** शब्द से **एक से अधिक अर्थों** का बोध होता है। व्याकरण में ऐसे शब्दों को **अनेकार्थी** शब्द कहा जाता है।

2. निम्नलिखित शब्दों के विभिन्न अर्थों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाइए—

शब्द	वाक्य
आम	1.
	2.
उत्तर	1.
	2.
नाना	1.
	2.
पूर्व	1.
	2.
छाया	1.
	2.

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 75 25-06-2026 16:38:57

मिलान करें

3. पाठ की कुछ पंक्तियों में गहरे भाव छुपे हुए हैं। आप निम्नलिखित पंक्तियों को उनके सही भाव से मिलाइए—

	पंक्ति	भाव
(क)	"विज्ञान आदमी को सौंदर्य की ही प्रेरणा देता है।"	व्यक्तित्व में जिज्ञासा, दृढ़ता और सरलता का अद्भुत मेल
(ख)	'शिशु-सुलभ शरारत भरी मुसकान'	प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य-बोध
(ग)	"जो जितना ऊँचा उठता है, वह उतना ही सरल और सहज रहता है।"	बालक जैसी सरलता
(घ)	"है न बंगलौर सुंदर!"	महानता के साथ विनम्रता भी आवश्यक
(ङ)	'अनुसंधानकर्ता की लगन, वृद्ध की सनक और शिशु की सरलता'	विज्ञान और सौंदर्य का संबंध

© NCERT not to be republished

श्रुतिसमभिन्नार्थक

किसी भी भाषा में अनेक शब्द ऐसे होते हैं जो **सुनने में एक जैसे लगते हैं**, किंतु उनके **अर्थ और वर्तनी अलग-अलग होते हैं**। ऐसे शब्दों को **श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द** कहा जाता है। जैसे– ग्रह और गृह, कुल और कूल

Final Chapters Final.indd 76 25-06-2026 16:38:57

4. तालिका में दिए गए शब्दों का उचित वाक्य प्रयोग कीजिए—

ग्रह– ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।	गृह– मेरा गृह विद्यालय के पास है।
ओर–	और– ....
शौक–	शोक– ....
अन्य–	अन्न– ....
मेल–	मेला– ....
उत्तर–	उतर– ....

आपकी भाषा में भी कुछ ऐसे शब्द होंगे। अपने सहपाठियों से चर्चा कर ऐसे शब्दों की सूची बनाइए।

पाठ से आगे

समझ और अनुभव

1. चंद्रशेखर वेंकटरमन ने विज्ञान को सौंदर्य से जोड़ा। अपने आस-पास की किसी ऐसी वस्तु का उदाहरण दीजिए जिसमें आपको विज्ञान और सौंदर्य दोनों दिखाई देते हों।
2. चंद्रशेखर वेंकटरमन ने विद्यार्थी सुधीर को विशेष वस्तुएँ दिखाने का निर्णय क्यों लिया होगा?
3. क्या जिज्ञासा केवल वैज्ञानिकों के लिए आवश्यक है या हर व्यक्ति के लिए? पाठ के आधार पर अपने विचार लिखिए।

सृजन

1. कल्पना कीजिए कि आप रमन इंस्टीच्यूट गए हैं। वहाँ के अपने अनुभव के बारे में अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 77 25-06-2026 16:38:57

2. “जो जितना ऊँचा उठता है, वह उतना ही सरल और सहज रहता है।” इस विचार पर आधारित एक लघुकथा लिखिए।

परियोजना

विभिन्न क्षेत्रों में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले अन्य भारतीय महापुरुषों के योगदान के बारे में एक भित्ति-पत्रिका तैयार कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

खोजबीन

1. पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोतों से चंद्रशेखर वेंकटरमन तथा उनके योगदान के बारे में और अधिक जानकारी एकत्र कीजिए तथा कक्षा में साझा कीजिए।
2. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस कब मनाया जाता है? इस दिवस का चंद्रशेखर वेंकटरमन से क्या संबंध है? पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोतों से पता लगाइए।
3. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ी (लिंक) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।
https://youtu.be/PRpLSdofkko?si=UnG3aiWtjRnw9de9

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
सांध्य	संध्या का	
आतिथेय	अतिथि सत्कार करने वाले	
इंस्टीच्यूट	संस्था	
वर्जित	निषिद्ध, मना	
हठात	सहसा, अचानक	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 78 25-06-2026 16:38:57

सँभलना	सावधान होना, सतर्क होना	
नाद	ध्वनि	
अचकचाकर	चौंककर, भौचक्का होकर	
तकियाकलाम	बोलते समय किसी एक शब्द या वाक्य को बार-बार प्रयोग करने की आदत	
व्यर्थता	निरर्थकता, अनुपयोगिता	
ग्रेनाइट	पत्थर का एक प्रकार	
इंडस्ट्रियल डायमंड	उद्योग-धंधों में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का हीरा	
पूर्वापर संबंध	आगे-पीछे का संबंध	
आत्मीयता	अपनापन, मैत्री	
मनोरम	मन को लुभाने वाला, सुंदर	
तरल छाया	हलकी छाया	
हरितवसना	हरी-भरी	
स्निग्ध	मृदुल, दयालु	
सर्वोच्च	सबसे बड़ा, सर्वोपरि	
गलतफहमी	कुछ का कुछ समझना, भ्रम होना	
उपकरण	औजार, यंत्र	
स्रष्टा	सृष्टि को रचने वाला, सृजन करने वाला	
निःसंग भाव	बिना किसी लगाव के, निर्लिप्त	
धूमकेतु	पुच्छल तारा	
अलौकिक	लोकोत्तर, अद्‌भुत, असाधारण	

© NCERT not to be republished

शिशु-सुलभ	बच्चों जैसा सरल	
महत्वाकांक्षी	बड़ा बनने की अभिलाषा रखने वाला	
आकस्मिक	अचानक होने वाला	
अभिभूत होना	अत्यधिक प्रभावित होना	
अनुसंधानकर्ता	शोध करने वाला, खोज करने वाला	
सनक	धुन, पागलपन, दीवानगी	

केवल पठन हेतु

मुरलीकांत राजाराम पेटकर

सन् 1944 में महाराष्ट्र में जन्मे मुरलीकांत राजाराम पेटकर भारत के एक प्रसिद्ध पैरालंपिक तैराक के रूप में जाने जाते हैं। पैरालंपिक खेल दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए समय-समय पर आयोजित होने वाला ओलंपिक खेलों का कार्यक्रम है। पेटकर भारतीय सेना के एक जवान थे। सन् 1965 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय कई गोलियाँ लगने के कारण वे लकवाग्रस्त हो गए। चिकित्सकों की सलाह पर उन्होंने तैराकी शुरू कर दी। कुश्ती, हॉकी आदि खेलों में बचपन से ही रुचि रखने वाले मुरलीकांत पेटकर ने अपनी लगन और परिश्रम से कुछ ही समय में तैराकी में प्रवीणता प्राप्त कर ली। वे 1972 के हाइडिलबर्ग पैरालंपिक खेलों में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाने वाले दिव्यांग तैराक बने। तत्पश्चात सन् 2018 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 80 25-06-2026 16:38:58

8

कबीर के दोहे

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥

काल्ह करै सो आज कर आज करै सो अब्ब।
पल मैं परलै होयगी बहुरि करैगा कब्ब॥

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय॥

—*कबीर*

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 81 25-06-2026 16:39:00

कवि परिचय

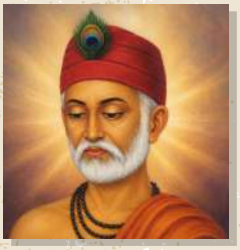

माना जाता है कि कबीर का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था। कबीर गुरु रामानंद के शिष्य थे। कबीर एक ऐसे संत थे जो करघे पर कपड़ा और मन में कविता बुनते-बुनते इतने प्रसिद्ध हो गए कि उनकी कविताएँ आज भी लोग भजनों की तरह सुनते और गुनगुनाते हैं। आज भी उनकी रचनाएँ हमें जीवन की सच्चाई को समझने और अच्छा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं। भाषा पर उनकी गहरी पकड़ थी। उनकी भाषा को 'पंचमेल' या 'सधुक्कड़ी' कहा जाता है।

बातचीत के लिए

1. जब कोई हमसे कठोर वाणी में बात करता है, उस समय हम कैसा अनुभव करते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि कैसी वाणी का प्रयोग हम सबके लिए सही है?
2. क्या आपने कभी क्रोध में किसी से कठोर शब्द कहे हैं? क्रोध शांत होने के बाद आपको कैसा अनुभव हुआ?
3. आपके विचार में अधिक बोलना अच्छा है या चुप रहना? क्यों?
4. कुछ लोग काम को कल पर क्यों टाल देते हैं? क्या कभी आपने भी किसी काम को कल पर टाला है? इसका क्या परिणाम हुआ?
5. कबीर के इन दोहों में आपको कौन-सा दोहा सबसे अच्छा लगा और क्यों?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. "ऐसी बानी बोलिए" दोहे में 'आपा खोय' का अर्थ है—

(क) मन से लोभ हटा देना   (ख) मन से अहंकार हटा देना

(ग) मन से क्रोध को हटा देना   (घ) मन से आलस्य को हटा देना

© NCERT not to be republished

2. "बड़ा हुआ तो क्या हुआ..." कहकर कबीर क्या समझाना चाहते हैं?

(क) ऊँचे पद का सब सदैव सम्मान करते हैं।

(ख) सेवा-भावना से ही व्यक्ति महान बनता है।

(ग) पढ़-लिखकर हमें ऊँचा पद प्राप्त करना चाहिए।

(घ) हमें पर्यावरण को बचाने के लिए प्रयास करने चाहिए।

3. किसी भी कार्य की अति (अधिकता) के बारे में कबीर का क्या विचार है?

(क) यह सदैव हानिकारक होती है।

(ख) यह सदैव लाभदायक होती है।

(ग) अति से ही हम कुशल बनते हैं।

(घ) यह कभी लाभदायक और कभी हानिकारक होती है।

4. "काल्ह करै सो आज कर आज करै सो अब्ब" पंक्ति का आशय है—

(क) समय के महत्व को समझना

(ख) परिश्रम के महत्व को समझना

(ग) अनुशासन के महत्व को समझना

(घ) विद्यार्थी जीवन के महत्व को समझना

5. कबीर के अनुसार प्रभु का स्मरण (सुमिरन) कब करना चाहिए?

(क) सुख के दिनों में

(ख) दुख के दिनों में

(ग) सुख और दुख दोनों ही पलों में

(घ) जब मन की कोई इच्छा पूरी करवानी हो

संकेत– आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

सोचिए और लिखिए

1. कबीर ने गुरु को अधिक महत्वपूर्ण क्यों माना है?
2. कबीर ने खजूर के पेड़ का उदाहरण क्यों दिया है?
3. "किसी भी कार्य की अति अच्छी नहीं होती।" उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
4. "औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय" पंक्ति के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

भाषा की ओर

मिलान करें

1. निम्नलिखित पंक्तियों को उनके भावों से जोड़िए—

पंक्तियाँ	भाव
"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।"	गुरु का महत्व ईश्वर से भी बड़ा है।
"औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।"	पद बड़ा होने के साथ व्यक्ति में सेवा-भाव भी होना चाहिए। इसी में उसकी महानता है।
"अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।"	मीठी वाणी स्वयं और सुनने वाले दोनों के मन को आनंदित करती है।
"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।"	किसी भी कार्य की अधिकता अच्छी नहीं होती है।

© NCERT not to be republished

तुकांत शब्द

जिन शब्दों के अंत की ध्वनि मिलती-जुलती होती है, उन्हें 'तुकांत शब्द' कहते हैं। जैसे—

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।
पाँय – बताय (तुकांत शब्द)
इनसे मिलते-जुलते अन्य शब्द— हँसाय, सुनाय आदि

2. इसी प्रकार अन्य दोहों के तुकांत शब्द छाँटकर उनसे मिलते-जुलते दो अन्य शब्द भी लिखिए।

"काल्ह करै सो आज कर आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी बहुरि करेगा कब्ब।।"

इस दोहे में प्रयोग किए गए 'अब्ब' और 'कब्ब' शब्दों के लिए सामान्य रूप में 'अब' और 'कब' का प्रयोग किया जाता है।

3. आपकी भाषा में निम्नलिखित शब्दों को क्या कहा जाता है? इन शब्दों के साथ-साथ कुछ अन्य शब्दों को भी अपनी भाषा में लिखिए—

शब्द	आपकी भाषा में शब्द
गुरु	
पेड़	
छाया	
सुख	

© NCERT not to be republished

"*गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।*" पंक्ति में 'गुरु' शब्द में 'र' पर 'उ' की मात्रा लगी है। इसमें लगी मात्रा के आकार को ध्यान से देखिए। अब इसमें 'ऊ' की मात्रा लगाकर देखिए। आपने देखा कि दोनों के आकार में थोड़ा अंतर है— रु – रू

4. आइए, इनसे दो-दो शब्द बनाइए—

रु – रुकावट, ..., ...

रू – रूप, ..., ...

इन वाक्यों को पढ़कर देखिए—

अपने गुरुजनों का करना चाहिए आदर हमें।

हमें अपने गुरुजनों का आदर करना चाहिए।

वाक्य में सामान्यतः कर्ता (कार्य करने वाला) पहले आता है और सबसे बाद में क्रिया आती है। इनके बीच में भी शब्दों का विशेष क्रम होता है।

5. आइए, इन वाक्यों के शब्दों को उपयुक्त क्रम में लगाएँ—

(क) बोलनी चाहिए मीठी बोली हमें।

....

(ख) बुरी होती है अति किसी भी कार्य की।

....

(ग) हमें करना चाहिए नहीं अधिक प्रयोग मोबाइल का।

....

(घ) कल पर नहीं टालना चाहिए कोई भी कार्य हमें।

....

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 86 25-06-2026 16:39:02

पाठ से आगे

अनुमान एवं कल्पना

1. *ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।*

   औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥

   अगर सभी मनुष्य अपनी वाणी को मीठी और शांति देने वाली बना लें तो उससे समाज में क्या बदलाव दिखाई देगा?

2. *अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।*

   अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥

   दोहे के आधार पर बताइए कि अगर हम आवश्यकता से अधिक मोबाइल या सोशल मीडिया का प्रयोग करेंगे तो उसके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं।

सृजन

1. यदि आपको कभी कबीर मिल जाएँ तो आप उनसे क्या-क्या बातें करेंगे? अपनी कल्पना से आपके और कबीर के बीच संवाद लिखिए।

   आप : कबीर जी आप इतने अच्छे दोहे कैसे बना लेते हैं?

   कबीर : क्या सचमुच आपको ये दोहे अच्छे लगते हैं?

   आप : ....

   ....

   ....

   कबीर : ....

   ....

   ....

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 87 25-06-2026 16:39:02

आप : ....

....

....

कबीर : ....

....

....

2. "काल्ह करै सो आज कर आज करै सो अब्ब।" (हमें कल पर कोई कार्य नहीं टालना चाहिए।) इस विषय पर आपने भी कुछ न कुछ अनुभव अवश्य किया होगा। उन्हीं अनुभवों के आधार पर लगभग 60–70 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।

....

....

....

....

....

परियोजना

1. अपने परिजनों, मित्रों, शिक्षकों, पुस्तकालय या अन्य स्रोतों की सहायता से कबीर के दोहों, भजनों, गीतों को खोजिए और सुनिए। किसी एक गीत को अपनी लेखन-पुस्तिका में भी लिखिए। कक्षा के सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को जोड़कर एक हस्तलिखित पुस्तिका बनाइए और कक्षा के पुस्तकालय में उसे सम्मिलित कीजिए।
2. कबीर के इन दोहों का सस्वर अथवा संगीतबद्ध वाचन कीजिए। इसमें आप अपने शिक्षकों और अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 88 25-06-2026 16:39:02

खोजबीन

नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान-समझ सकते हैं।

संत कबीर
https://www.youtube.com/watch?v=FGMEpPJJQmk&t=259s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

कबीर वाणी
https://www.youtube.com/watch?v=UNEIIugmwV0&t=13s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

https://www.youtube.com/watch?v=3QsynIvp62Y&t=8s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

https://www.youtube.com/watch?v=gnU7w-RHhyU&t=14s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

दोहे— कबीर, रहीम, तुलसी
https://www.youtube.com/watch?v=cnrjLCkggr4&t=12s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

© NCERT not to be republished

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
दोऊ	दोनों	
काके	किसके	
लागौं	स्पर्श करना, छूना	
पाँय	पैर, चरण	
बलिहारी	न्योछावर होना	
गोविंद	आराध्य, भगवान	

Final Chapters Final.indd 89 25-06-2026 16:39:02

बानी	वाणी, बोली, वचन	
आपा खोय	अहंकार भाव त्याग देना	
औरन को	दूसरों को	
सीतल	शीतल, शांत	
आपहुँ	स्वयं को, अपने आप को	
अति	अधिकता	
चूप	चुप रहना, मौन	
धूप	सूर्य का प्रकाश और ताप	
खजूर	एक वृक्ष, जो बहुत ऊँचा होता है	
पंथी	राहगीर, मुसाफ़िर, यात्री	
छाया	छाँव	
अति दूर	बहुत ऊँचाई पर, बहुत दूर	
काल्ह	कल (आने वाला समय/कल)	
करै	करना है	
सो	वह, उसे	
अब्ब/अब	इसी समय, तुरंत	
परलै/प्रलय	विनाश/अंत	
बहुरि	फिर से/दुबारा	
कब्ब/कब	किस समय	
सुमिरन	स्मरण, याद करना	
कोय	कोई	
काहे को	क्यों, किसलिए	

© NCERT
not to be republished

Final Chapters Final.indd 90 25-06-2026 16:39:02

9

टिकट-अलबम

अब राजप्पा को कोई नहीं पूछता। आजकल सब के सब नागराजन को घेरे रहते। “नागराजन घमंडी हो गया है”, राजप्पा सारे लड़कों में कहता फिरता। पर लड़के भला कहाँ उसकी बातों पर ध्यान देते! नागराजन के मामा जी ने सिंगापुर से एक अलबम भिजवाया था। वह लड़कों को दिखाया करता। सुबह पहली घंटी के बजने तक सभी लड़के नागराजन को घेरकर अलबम देखा करते। आधी छुट्टी के वक्त भी उसके आस-पास लड़कों का जमघट लगा रहता। कई लोग टोलियों में उसके घर तक हो आए। नागराजन शांतिपूर्वक सभी को अपना अलबम दिखाता, पर किसी को हाथ नहीं लगाने देता। अलबम को गोद में रख लेता और एक-एक पन्ना पलटता, लड़के बस देखकर खुश होते।

और तो और कक्षा की लड़कियाँ भी उस अलबम को देखने के लिए उत्सुक थीं। पार्वती लड़कियों की अगुवा बनी और अलबम माँगने आई। लड़कियों में वही तेज-तर्रार मानी जाती थी। नागराजन ने कवर चढ़ाकर अलबम उसे दिया। शाम तक लड़कियाँ अलबम देखती रहीं फिर उसे वापस कर दिया।

अब राजप्पा के अलबम को कोई पूछने वाला नहीं था। वाकई उसकी शान अब घट गई थी। राजप्पा के अलबम की, लड़कों में काफी तारीफ रही थी। मधुमक्खी की तरह उसने एक-एक करके टिकट जमा किए थे। उसे तो बस एक यही धुन सवार थी। सुबह आठ बजे वह घर से निकल पड़ता। टिकट जमा करने वाले सारे लड़कों के चक्कर लगाता। दो ऑस्ट्रेलिया के टिकटों के बदले एक फिनलैंड का टिकट लेता। दो पाकिस्तान के बदले एक रूस का। बस शाम, जैसे ही घर लौटता, बस्ता कोने में पटककर अम्मा से चबेना लेकर निकर की जेब में भर

not to be republished © NCERT

Final Chapters Final.indd 91 25-06-2026 16:39:04

लेता और खड़े-खड़े कॉफी पीकर निकल जाता। चार मील दूर अपने दोस्त के घर से कनाडा का टिकट लेने पगडंडियों में होकर भागता। स्कूल भर में उसका अलबम सबसे बड़ा था। सरपंच के लड़के ने उसके अलबम को पच्चीस रुपए में खरीदना चाहा था, पर राजप्पा नहीं माना। 'घमंडी कहीं का', राजप्पा बड़बड़ाया था। फिर उसने पलटकर तीखा जवाब दिया।

पर अब? कोई उसके अलबम की बात तक नहीं करता। और तो और अब सब उसके अलबम की तुलना नागराजन के अलबम से करने लगे हैं। सब कहते हैं राजप्पा का अलबम फिसड्डी है।

पर राजप्पा ने नागराजन के अलबम को देखने की इच्छा कभी नहीं प्रकट की। लेकिन जब दूसरे लड़के उसे देख रहे होते तो वह नीची आँखों से देख लेता। सचमुच नागराजन का अलबम बेहद प्यारा था। पर राजप्पा के पास जितने टिकट थे, उतने नागराजन के अलबम में नहीं थे। पर खुद उसका अलबम ही कितना प्यारा था। उसे छू लेना ही कोई बड़ी बात थी। इस तरह का अलबम यहाँ थोड़ी मिलेगा। अलबम के पहले पृष्ठ पर मोती जैसे अक्षरों में उसके मामा ने लिख भेजा था

ए. एम. नागराजन

'इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज जब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा।'

लड़कों ने इसे अपने अलबम में उतार लिया। लड़कियों ने झट कापियों और किताबों में टीप लिया।

"तुम लोग यह नकल क्यों करते हो? नकलची कहीं के", राजप्पा ने लड़कों को घुड़की दी। सब चुप रहे पर कृष्णन से नहीं रहा गया।

"जा, जा। जलता है, ईर्ष्यालु कहीं का।"

"मैं काहे को जलूँ? मेरा अलबम उसके अलबम से कहीं बड़ा है।" राजप्पा ने शान बघारी।

"अरे, उसके पास जो टिकटें हैं, वह हैं कहीं तेरे पास? सब क्यों? बस एक इंडोनेशिया का टिकट दिखा दो। अरे, पानी भरोगे, हाँ।" कृष्णन ने छेड़ा।

"पर मेरे पास जो टिकट है, वह कहाँ है उसके पास?" राजप्पा ने फिर ललकारा।

"उसके पास जो टिकट है, वही दिखा दो।" कृष्णन भी कम नहीं था।

"ठीक है, दस रुपए की शर्त। मेरे वाले टिकट दिखा दो।"

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 92 25-06-2026 16:39:04

"तुम्हारा अलबम कूड़ा है।" कृष्णन चीखा, "हाँ, हाँ कूड़ा।" लड़के जैसे कोरस गाने लगे।

राजप्पा को लगा, अपने अलबम के बारे में बातें करना फालतू है। उसने कितनी मेहनत और लगन से टिकट बटोरे हैं। सिंगापुर से आए इस एक पार्सल ने नागराजन को एक ही दिन में मशहूर कर दिया। पर दोनों में कितना अंतर है! ये लड़के क्या समझेंगे!

राजप्पा मन-ही-मन कुढ़ रहा था। स्कूल जाना अब खलने लगा था और लड़कों के सामने जाने में शर्म आने लगी। आमतौर पर शनिवार और रविवार को टिकट की खोज में लगा रहता, परंतु अब घर-घुसा हो गया था। दिन में कई बार अलबम को पलटता रहता। रात को लेट जाता। सहसा जाने क्या सोचकर उठता, ट्रंक खोलकर अलबम निकालता और एक बार पूरा देख जाता। उसे अलबम से चिढ़ होने लगी थी। उसे लगा, अलबम वाकई कूड़ा हो गया है।

उस दिन शाम उसने जैसे तय कर लिया था, वह नागराजन के घर गया। अब कोई कितना अपमान सहे! नागराजन के हाथ अचानक एक अलबम लगा है, बस यही ना। वह क्या जाने टिकट कैसे जमा किए जाते हैं। एक-एक टिकट की क्या कीमत होती है, वह भला क्या समझे! सोचता होगा टिकट जितना बड़ा होगा, वह उतना ही कीमती होगा। या फिर सोचता होगा, बड़े देश का टिकट कीमती होगा। वह भला क्या समझे!

उसके पास जितने भी फालतू टिकट हैं, उन्हें टरका कर, उससे अच्छे टिकट झाड़ लेगा। कितनों को तो उसने यूँ ही उल्लू बनाया है। कितनी चालबाजी करनी पड़ती है। नागराजन भला किस खेत की मूली है?

राजप्पा नागराजन के घर पहुँचकर ऊपर गया। चूँकि वह अक्सर आया-जाया करता था, सो किसी ने नहीं टोका। ऊपर पहुँचकर वह नागराजन की मेज के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। कुछ देर बाद नागराजन की बहन कामाक्षी ऊपर आई।

"भैया शहर गया है। अरे हाँ, तुमने भैया का अलबम देखा?" उसने पूछा।

"हूँ", राजप्पा को हाँ कहने में हेकड़ी हो रही थी।

"बहुत सुंदर अलबम है ना? सुना है स्कूल भर में किसी के भी पास इतना बड़ा अलबम नहीं है।"

"तुमसे किसने कहा?"

"भैया ने।"

वह कुढ़ गया।

"बड़े से क्या मतलब हुआ? आकार में बड़ा हुआ तो अलबम बड़ा हो गया?" उसकी चिड़चिड़ाहट साफ थी।

Final Chapters Final.indd 93 25-06-2026 16:39:04

कामाक्षी कुछ देर तक वहीं रही। फिर नीचे चली गई। राजप्पा मेज पर बिखरी किताबों को टटोलने लगा। अचानक उसका हाथ दराज के ताले से टकरा गया। उसने ताले को खींचकर देखा। बंद था, क्यों न उसे खोलकर देख लिया जाए। मेज पर से उसने चाबी ढूँढ़ निकाली।

सीढ़ियों के पास जाकर उसने एक बार झाँककर देखा। फिर जल्दी में दराज खोली। अलबम ऊपर ही रखा हुआ था। पहला पृष्ठ खोला। उन वाक्यों को उसने दुबारा पढ़ा। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। अलबम को झट कमीज के नीचे खोंस लिया और दराज बंद कर दिया। सीढ़ियाँ उतरकर घर की ओर भागा।

घर जाकर सीधा पुस्तक की अलमारी के पास गया और पीछे की ओर अलबम छिपा दिया। उसने बाहर आकर झाँका। पूरा शरीर जैसे जलने लगा था। गला सूख रहा था और चेहरा तमतमाने लगा था।

रात आठ बजे अपू आया। हाथ-पाँव हिलाकर उसने पूरी बात कह सुनाई।

"सुना तुमने, नागराजन का अलबम खो गया। हम दोनों शहर गए हुए थे। लौटकर देखा तो अलबम गायब!"

राजप्पा चुप रहा। उसने अपू को किसी तरह टाला। उसके जाते ही उसने झट कमरे का दरवाजा भेड़ लिया और अलमारी के पीछे से अलबम निकालकर देखा। उसे फिर छिपा दिया। डर था कहीं कोई देख न ले।

रात में खाना नहीं खाया। पेट जैसे भरा हुआ था। सारा घर चिंतित हो गया। उसका चेहरा भयानक हो गया था।

रात, उसने सोने की कोशिश की पर नींद नहीं आई। अलबम सिरहाने तकिए के नीचे रखकर सो गया।

सुबह अपू दुबारा आया। राजप्पा तब भी बिस्तर पर बैठा था। अपू सुबह नागराजन के घर होकर आया था। "कल तुम उसके घर गए थे?" अपू ने पूछा।

राजप्पा की साँस जैसे ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। फिर सिर हिला दिया। वह जिस तरह चाहे सोच ले।

"कामाक्षी ने कहा था कि हमारे जाने के बाद खाली तुम वहाँ आए थे।" अपू बोला। राजप्पा को समझते देर नहीं लगी कि अब सब उस पर शक करने लगे हैं।

"कल रात से नागराजन लगातार रोए जा रहा है। उसके पापा शायद पुलिस को खबर दें।" अपू ने फिर कहा।

© NCERT not to be republished

राजप्पा फिर भी चुप रहा।

"उसके पापा डी.एस.पी. के दफ्तर में ही तो काम करते हैं। बस वह पलक झपक दें और पुलिस की फौज हाजिर।" अपू जैसे आग में घी डाल रहा था। यह तो भला हुआ कि अपू का भाई उसे ढूँढ़ता हुआ आ गया और अपू चलता बना।

राजप्पा के पापा दफ्तर चले गए थे। बाहर का किवाड़ बंद था। राजप्पा अभी तक बिस्तर पर बैठा हुआ था। आधा घंटा गुजर गया और वह उसी तरह बैठा रहा।

तभी बाहर की साँकल खटकी।

'पुलिस', राजप्पा बुदबुदाया।

भीतर साँकल लगी थी। दरवाजा खटकने की आवाज तेज हो गई। राजप्पा ने तकिए के नीचे से अलबम उठाया और ऊपर भागा। अलमारी के पीछे छिपा दे? नहीं। पुलिस ने अगर तलाशी ली तो पकड़ा जाएगा। अलबम को कमीज के नीचे छिपाकर वह नीचे आ गया। बाहर का दरवाजा अब भी बज रहा था।

"कौन है? अरे दरवाजा क्यों नहीं खोलता?" अम्मा भीतर से चिल्लाईं। थोड़ी देर और हुई तो अम्मा खुद ही उठकर चली आएँगी।

राजप्पा पिछवाड़े की ओर भागा। जल्दी से बाथरूम में घुसकर दरवाजा बंद कर लिया। अम्मा ने अँगीठी पर गर्म पानी की देगची चढ़ा रखी थी। उसने अलबम को अँगीठी में डाल दिया। अलबम जलने लगा। कितने प्यारे टिकट थे। राजप्पा की आँखों में आँसू आ गए।

तभी अम्मा की आवाज आई, "जल्दी से आ तो नहाकर। नागराजन तुझे ढूँढ़ता हुआ आया है।" राजप्पा ने निकर उतार दी और गीला तौलिया लपेटकर बाहर आ गया। कपड़े बदलकर वह ऊपर गया। नागराजन कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसे देखते ही बोला, "मेरा अलबम खो गया है यार।" उसका चेहरा उतरा हुआ था। काफी रोकर आया था शायद।

"कहाँ रखा था तुमने?" राजप्पा ने पूछा।

"शायद दराज में। शहर से लौटा तो गायब।"

नागराजन की आँखों में आँसू आ गए। राजप्पा से चेहरा बचाकर उसने आँखें पोंछ लीं।

"रो मत यार।" राजप्पा ने उसे पुचकारा। वह फफक-फफक कर रो दिया।

राजप्पा झट नीचे उतरकर गया। एक मिनट में वह ऊपर नागराजन के सामने था। उसके हाथ में उसका अपना अलबम था।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 95 25-06-2026 16:39:04

"लो यह रहा मेरा अलबम। अब इसे तुम रख लो। ऐसे क्यों देख रहे हो। मजाक नहीं कर रहा। सच कहता हूँ, इसे अब तुम रख लो।"

"बहला रहे हो यार।"

नागराजन को जैसे यकीन नहीं आया।

"नहीं यार। सचमुच तुमको दे रहा हूँ। रख लो।"

राजप्पा भला अपना अलबम उसे दे दे! कैसा चमत्कार है! नागराजन को अब भी यकीन नहीं आ रहा था। पर राजप्पा अपनी बात बार-बार दोहरा रहा था। उसका गला भर आया था।

"ठीक है, मैं इसे रख लेता हूँ। पर तुम क्या करोगे?"

"मुझे नहीं चाहिए।"

"क्यों, तुम्हें एक भी टिकट नहीं चाहिए?"

"नहीं।"

"पर तुम कैसे रहोगे बगैर किसी टिकट के?"

"रोता क्यों है यार!"

"ले, इस अलबम को तू ही रख ले। इतनी मेहनत की है तूने।" नागराजन बोला।

"नहीं, तुम रख लो। लेकर चले जाओ। जाओ, चले जाओ यहाँ से।" वह चीखा और फूट-फूटकर रो दिया।

नागराजन की समझ में कुछ नहीं आया। वह अलबम लेकर नीचे उतर गया।

कमीज से आँखें पोंछता हुआ राजप्पा भी नीचे उत्तर आया। दोनों साथ-साथ दरवाजे तक आए।

"बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं घर चलूँ?" नागराजन सीढ़ियाँ उतरने लगा।

"सुनो राजू", राजप्पा ने पुकारा। नागराजन ने उसे पलटकर देखा। "अलबम दे दो। मैं आज रात जी भरकर इसे देखना चाहता हूँ। कल सुबह तुम्हें दे जाऊँगा।"

"ठीक है।" नागराजन ने उसे अलबम लौटा दी और चला गया।

राजप्पा ऊपर आया। उसने दरवाजा बंद कर लिया और अलबम को छाती से लगाकर फूट-फूटकर रो दिया।

– सुंदरा रामस्वामी

(तमिल से अनुवाद : सुमति अय्यर)

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. पाठ में बच्चे किस वस्तु को संगृहीत करने में रुचि रखते हैं?
2. राजप्पा और नागराजन की तरह क्या आप लोग भी किसी वस्तु का संग्रह करते हैं? उसके विषय में कक्षा में बताइए।
3. आपको राजप्पा और नागराजन में से किसका अलबम अच्छा लगा और क्यों?
4. जब आप अपनी प्रिय वस्तु किसी को देते हैं तो कैसा अनुभव करते हैं?

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. राजप्पा को किसका शौक था?

   (क) चित्रकारी करने का (ख) क्रिकेट खेलने का
   (ग) कहानी लिखने का (घ) डाक टिकटें जमा करने का

2. नागराजन का अलबम किस कारण प्रसिद्ध था?

   (क) वह रंग-बिरंगा था। (ख) उसमें दुर्लभ टिकटें थीं।
   (ग) वह बहुत बड़ा था। (घ) वह नया था।

3. 'टिकट-अलबम' पाठ में राजप्पा को कौन-सी धुन सवार थी?

   (क) कक्षा में प्रथम स्थान लाने की (ख) टिकट इकट्ठा करने की
   (ग) नए दोस्त बनाने की (घ) संगीत सीखने की

4. राजप्पा नागराजन का अलबम क्यों नहीं देखना चाहता था?

   (क) ईर्ष्यावश (ख) लोभवश (ग) संकोचवश (घ) क्रोधवश

5. लेखक ने राजप्पा की तुलना मधुमक्खी के छत्ते से क्यों की?

   (क) वह सबसे बहुत मीठा बोलता था।
   (ख) उसका स्वभाव डंक मारने जैसा था।

© NCERT not to be republished

(ग) उसे शहद खाना बहुत पसंद था।

(घ) उसने बहुत परिश्रम से एक-एक टिकट एकत्र किया था।

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

सोचिए और लिखिए

1. राजप्पा के स्वभाव में अचानक क्या परिवर्तन आया?
2. राजप्पा ने नागराजन का अलबम क्यों चुराया?
3. राजप्पा और नागराजन दोनों के टिकट इकट्ठा करने के तरीकों में क्या अंतर था? आप किसे सही मानते हैं और क्यों?
4. यदि अपू राजप्पा को पुलिस आने की बात न बताता तो राजप्पा क्या कदम उठा सकता था?
5. कहानी के अंत में राजप्पा ने अपना अलबम नागराजन को क्यों दे दिया? क्या उसका यह कदम सही था?

भाषा की ओर

संज्ञा और सर्वनाम

1. रेखांकित शब्द कहानी में किसके लिए प्रयोग किए गए हैं? पहचानकर लिखिए—

- पर अब? कोई उसके अलबम की बात तक नहीं करता। – ....
- हम दोनों शहर गए हुए थे। – ....
- अरे हाँ, तुमने भैया का अलबम देखा? उसने पूछा। – ....
- वह अलबम लेकर नीचे उतर गया। – ....
- ठीक है, मैं इसे रख लेता हूँ। पर तुम क्या करोगे? – ....

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 98 25-06-2026 16:39:06

संबोधन अथवा पहचान के लिए हम नाम का प्रयोग करते हैं जिसे **संज्ञा** कहा जाता है। नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे **सर्वनाम** कहलाते हैं।

मुहावरे कहानी से

2. नीचे दिए गए मुहावरों का प्रयोग कहानी में किया गया है। कहानी में इन्हें खोजकर इनका प्रयोग समझिए। अब इनका अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	अर्थ	वाक्य प्रयोग
दिल पिघलना		नागराजन को रोता देखकर राजप्पा का दिल पिघल गया।
भनक पड़ना	किसी बात का पहले ही आभास होना	
फूट-फूटकर रोना		
गला भर आना		
आग में घी डालना		
चेहरा उतरना		
शान बघारना		

विशेषण

स्कूल भर में किसी के भी पास इतना बड़ा अलबम नहीं है।

इस वाक्य में 'बड़ा' शब्द 'अलबम' की विशेषता बता रहा है अर्थात यह **विशेषण** है। 'अलबम' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है, अर्थात यह **विशेष्य** है।

© NCERT not to be republished

3. कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण शब्दों को पहचानकर उन्हें रेखांकित कीजिए—

- नागराजन घमंडी हो गया है।
- लड़कियों में वही तेज-तर्रार मानी जाती थी।
- बहुत सुंदर अलबम है ना?
- अम्मा ने अँगीठी पर गर्म पानी की देगची चढ़ा रखी थी।
- राजप्पा का चेहरा भयानक हो गया था।

एक से अनेक

नागराजन अलबम को गोद में रख लेता और एक-एक पन्ना पलटता, लड़के बस देखकर खुश होते।

4. जब एक हो तो 'लड़का' शब्द का प्रयोग किया जाता है और अनेक हों तो 'लड़के'। नीचे दिए गए एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के
लड़की	
टिकट	
पगडंडी	
किताब	
सीढ़ी	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 100 25-06-2026 16:39:06

बात पर बल देना

कक्षा की लड़कियाँ उस अलबम को देखने के लिए उत्सुक थीं।

कक्षा की लड़कियाँ भी उस अलबम को देखने के लिए उत्सुक थीं।

इन दोनों वाक्यों में क्या अंतर है? ध्यान दीजिए और बताइए। पहले वाक्य में एक शब्द कम है। उस एक शब्द के न होने से वाक्य के अर्थ में भी थोड़ा अंतर आ गया है।

हम अपनी बात पर बल देने के लिए कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे– ही, भी, तो आदि।

5. कहानी के इन वाक्यों में नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए और वाक्य में इनके प्रभाव को समझिए—

तो तक भी ही

- आधी छुट्टी के वक्त ……………… उसके आस-पास लड़कों का जमघट लगा रहता।
- कामाक्षी कुछ देर ……………… वहीं रही।
- उसका अलबम ……………… कितना प्यारा था।
- जैसे ……………… वह घर लौटता, बस्ता कोने में पटककर निकल जाता।

शब्दों की बात

थोड़ी देर और हुई तो अम्मा खुद ही उठकर चली आएँगी।

(क) आप अपनी माँ को क्या कहकर संबोधित करते हैं?

(ख) अन्य भाषाओं में माँ के लिए प्रयुक्त संबोधन/शब्द ढूँढ़िए।

© NCERT not to be republished

सृजन

किसी विशेष जानकारी को सार्वजनिक करना सूचना लेखन कहलाता है।

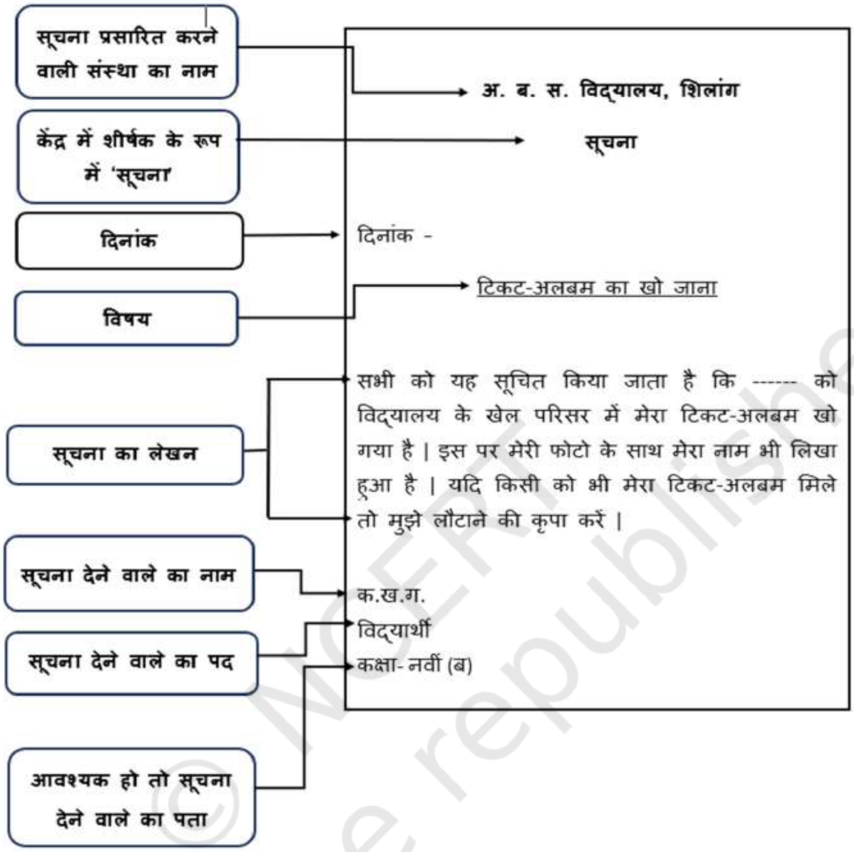

विद्यालय में आयोजित की जाने वाली दोहा गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को आमंत्रित करते हुए एक सूचना पत्र तैयार कीजिए।

पाठ से आगे

- राजप्पा ने ईर्ष्या में आकर नागराजन का अलबम चुरा लिया था। आपके विचार से ईर्ष्या मनुष्य को किस ओर ले जाती है? इससे बचने के लिए क्या करना चाहिए?
- "पछतावा ही सबसे बड़ा प्रायश्चित है।" राजप्पा के संदर्भ में इस कथन पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 102 25-06-2026 16:39:06

- यदि आप राजप्पा के स्थान पर होते और नागराजन का अलबम देखकर आपको ईर्ष्या होती तो आप अपनी इस भावना पर कैसे काबू पाते?
- इस कहानी को कक्षा में नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
- अगर कक्षा के विद्यार्थी नागराजन के अलबम के आते ही उसकी ओर न चले जाते तो भी क्या वही स्थिति होती? चर्चा कीजिए।

खोजबीन

नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान समझ सकते हैं—

पाठ का ऑडियो लिंक

https://www.youtube.com/watch?v=Xj4MaUwqnQI

'कंचा' कहानी का ऑडियो लिंक

https://www.youtube.com/watch?v=zoZTyuYtJAk

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 103 25-06-2026 16:39:06

10

हमारा आदित्य

(कक्षा में अध्यापक का आगमन और सभी विद्यार्थियों द्वारा अभिवादन)

सभी विद्यार्थी : सुप्रभात अध्यापक जी!

अध्यापक : सुप्रभात बच्चो! सूर्य को तो आप प्रतिदिन देखते होंगे पर क्या आपको पता है कि सूर्य तक पहुँचना कितना कठिन है? तो आज हम कक्षा में सूरज के बारे में कुछ अलग तरह की बातचीत करेंगे।

वाणी : अध्यापक जी! मैंने सुना है कि सूर्य सात घोड़ों के रथ पर आकाश में यात्रा करने वाला एक राजा है।

गौरव : हाँ, मैंने भी कुछ ऐसा ही सुना है

राहुल : नहीं, सूर्य तो आग का एक गोला है!

सुमन : अध्यापक जी! सूरज एक ग्रह है।

रवि : नहीं, यह तो एक तारा है।

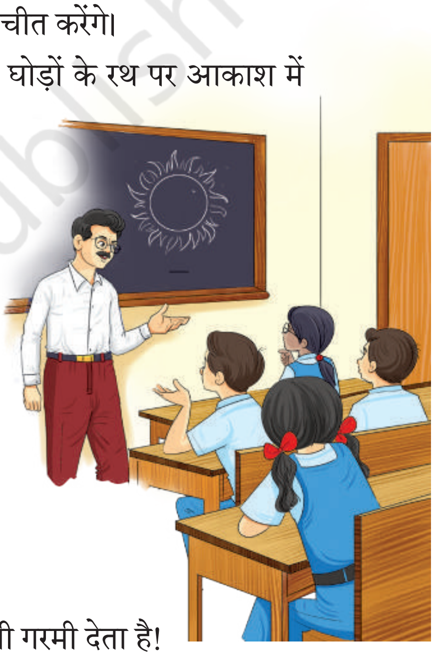

अध्यापक : उत्तम! सूर्य एक तारा है। यह बहुत अधिक गरम भी है, इसलिए इसे लोग आग का गोला भी कहते हैं।

सभी विद्यार्थी : (आश्चर्य से) जी अध्यापक जी, यह बहुत गरम होगा!

ज्योति : सूरज पृथ्वी से बहुत दूर है, फिर भी कितनी गरमी देता है!

भास्कर : मुझे गरमी के मौसम में सूर्य बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता।

सुमन : मुझे भी। पर सर्दियों में तो धूप से उठने का मन ही नहीं करता। मेरी नानी तो पूरे दिन धूप में रहती हैं। उन्हें बहुत सर्दी लगती है न, इसलिए!

अध्यापक : सूर्य इतना गरम क्यों है? क्या आप सबने कभी यह सोचा है?

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 104 25-06-2026 16:39:08

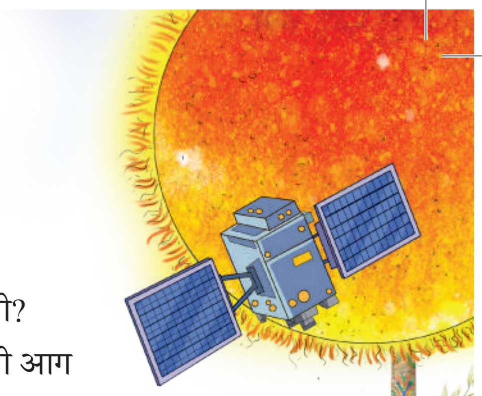

दिनेश : सूर्य पर हमेशा आग जलती रहती है, इसलिए।

रवि : अगर ऐसा है तो वहाँ आग किसने जलाई होगी?

धरा : आप दोनों ठीक नहीं सोच रहे हैं। सूर्य पर गरमी आग के जलने से नहीं होती बल्कि सूर्य ऐसी गैसों से बना है जो बहुत गरम होती हैं। मुझे मेरी मौसी ने एक बार बताया था।

अध्यापक : सही कहा! सूर्य मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम नाम की गैसों का एक विशाल गोला है।

साहिल : कितने बड़े नाम हैं! बोलने में भी कठिनाई हो रही है। हाई... ड्रजन... हेलम... (कुछ विद्यार्थी हँसते हैं)

रवि : तो क्या हम चाँद की तरह सूर्य पर भी जा सकते हैं? (अध्यापक की ओर अचरज से देखते हुए)

सुमन : वहाँ कैसे जाएँगे? जो जाएगा, वह जल नहीं जाएगा!

दिनेश : सूर्य तो बहुत गरम होगा, बहुत अधिक! तभी तो वह चमकता रहता है। (आँखें बड़ी करके कहते हुए)

अध्यापक : हाँ, सूर्य तक पहुँचना आसान नहीं है। वह चंद्रमा की तरह हमारी पृथ्वी से पास नहीं है बल्कि बहुत दूर है। उसके भीतर हर समय आग जल रही है। वह कभी बुझती ही नहीं। जैसे चंद्रमा के रहस्य हैं, ठीक उसी प्रकार सूर्य के भी रहस्य हैं। इन्हीं रहस्यों का उद्‌घाटन करने के लिए हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य-एल 1 का निर्माण किया है।

कुछ विद्यार्थी : (एक साथ कौतूहल से) आदित्य-एल 1!

भास्कर : यह क्या है अध्यापक जी?

अध्यापक : आदित्य तुम ही तो हो। (मुस्कुराते हुए)

भास्कर : मैं कुछ समझा नहीं, अध्यापक जी।

अध्यापक : समझाता हूँ। आदित्य का अर्थ है— सूर्य। क्या आपको पता है, इसका एक अन्य नाम 'भास्कर' भी है। इसी तरह इस कक्षा में दो और आदित्य हैं। क्या आप लोग बता सकते हैं, मैं किनकी बात कर रहा हूँ?

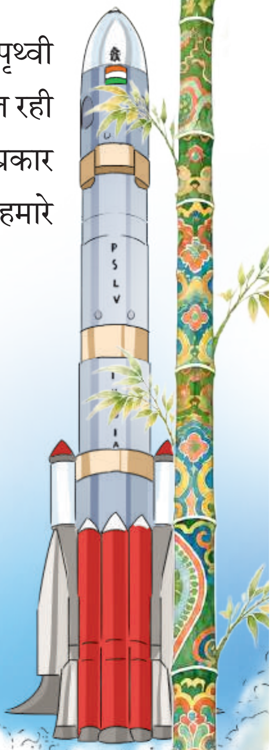

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 105 25-06-2026 16:39:11

राहुल : जी 'दिनेश' और 'रवि'।

अध्यापक : बहुत अच्छा! आइए, आज हम लोग आदित्य-एल 1 से मिलते हैं।

वाणी : अध्यापक जी! क्या यह चंद्रयान के प्रकार का ही तो नहीं है?

अध्यापक : हाँ, आदित्य-एल 1 चंद्रयान के प्रकार का ही एक यान है। इसका कार्य सूर्य के बारे में जानकारी जुटाना है, जैसे– यह किस समय कैसा होता है, इसके भीतर जलने वाली आग का ताप कितना है, इस ताप का प्रभाव आस-पास कैसा होता है या इसका प्रभाव हमारी पृथ्वी पर भी पड़ता है अथवा नहीं...।

पूर्वा : क्या यह सूर्य पर पहुँच गया है?

अध्यापक : सूर्य पर तो नहीं किंतु सूर्य से पर्याप्त दूरी पर रुककर इसने सूर्य के कुछ अद्भुत चित्र भेजे हैं जिन्हें यदि आप लोग देखेंगे तो देखते ही रह जाएँगे।

सुमन : अध्यापक जी, फिर भी यह सूर्य के पर्याप्त पास पहुँचकर चित्र कैसे भेज रहा है? उसकी इतनी गरमी से जल नहीं रहा?

अध्यापक : नहीं, सूर्य से आदित्य-एल 1 को कोई हानि नहीं पहुँच सकती क्योंकि यह एक सुरक्षित दूरी पर स्थित है और वह अपने स्थान से समय-समय पर उसके विभिन्न चित्र लेता रहता है।

भास्कर : यह तो एक अनन्य प्रकार का यंत्र है जो अपने को जलने भी नहीं दे रहा और इतने गरम सूर्य के चित्र भी ले रहा है!

ज्योति : आदित्य-एल 1 में 'एल 1' का क्या अर्थ है?

अध्यापक : एल 1 का अर्थ है— लगरांज 1...।

रवि : अध्यापक जी! लगरांज 1 क्या होता है?

अध्यापक : एल 1 अर्थात लगरांज 1 बिंदु अंतरिक्ष का एक विशिष्ट स्थान होता है जो सूर्य और पृथ्वी के केंद्रों को जोड़ने वाली रेखा पर होता है। इस बिंदु पर सूर्य और पृथ्वी की आकर्षण शक्तियाँ इस प्रकार संतुलित होती हैं कि इस स्थान पर प्रक्षिप्त कोई भी वस्तु पृथ्वी के साथ-साथ ही सूर्य की परिक्रमा करती जाती है। हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य अंतरिक्ष यान को

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 106 25-06-2026 16:39:11

इसी बिंदु पर प्रक्षिप्त कर दिया है जहाँ से वह सूर्य के चारों ओर घूमता हुआ सूर्य के चित्र खींचता रहता है।

दीपक : अध्यापक जी, यह तो आपने बहुत ही रोचक बात बताई परंतु इस 'लगरांज' शब्द का क्या अर्थ है?

अध्यापक : वास्तव में 'लगरांज' 18वीं सदी में इटली के एक गणितज्ञ थे जिन्होंने इस विशिष्ट बिंदु के विषय में बताया था। इसीलिए इस बिंदु को उनके नाम से जाना जाता है। उन्होंने इस प्रकार के चार और बिंदुओं का पता लगाया था, इसलिए इन पाँच बिंदुओं को एल 1, 2, 3, 4, 5 — इन पाँच नामों से जाना जाता है।

सुमन : अच्छा, अब मैं समझ गई कि क्यों 'आदित्य' के नाम के अंत में एल 1 लगाया गया है। पर यह अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में कब भेजा गया था?

अध्यापक : आदित्य-एल 1 का प्रक्षेपण 2 सितंबर 2023 को हमारे देश के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने किया था। लगरांज बिंदु पर स्थित यह अंतरिक्ष यान लगभग 5 वर्ष तक सूर्य के चारों ओर घूमता हुआ उसके विभिन्न चित्र खींचता रहेगा जिसका अध्ययन करके हमारे वैज्ञानिक सूर्य के रहस्यों का पता लगाएँगे।

दीपक : बहुत अच्छा अध्यापक जी, इतनी मनोरंजक बातें सुनकर मुझे बहुत कौतूहल हो रहा है कि सूर्य कैसा दिखता होगा। आदित्य-एल 1 ने जो चित्र खींचे हैं, वे बहुत अच्छे होंगे। मैंने आज तक सूर्य का चित्र नहीं देखा।

अन्य विद्यार्थी : हमने भी नहीं देखा।

रफ़त : चाँद का देखा है... पृथ्वी का देखा है... चंद्रयान का देखा है... अपने बचपन का चित्र देखा है पर सूरज का तो मैंने कभी नहीं देखा।

दिनेश : मैंने तो अपने माता-पिता के बचपन के चित्र भी देखे हैं पर सूर्य का भी चित्र होता है, मुझे तो पता ही नहीं था। पिताजी ने सूर्य की ओर देखने के लिए मना किया है।

अध्यापक : (अध्यापक कक्षा में टैब/मोबाइल पर भिन्न-भिन्न समय पर लिए गए सूर्य के ग्यारह रंगों वाले चित्र दिखाते हैं।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 107 25-06-2026 16:39:11

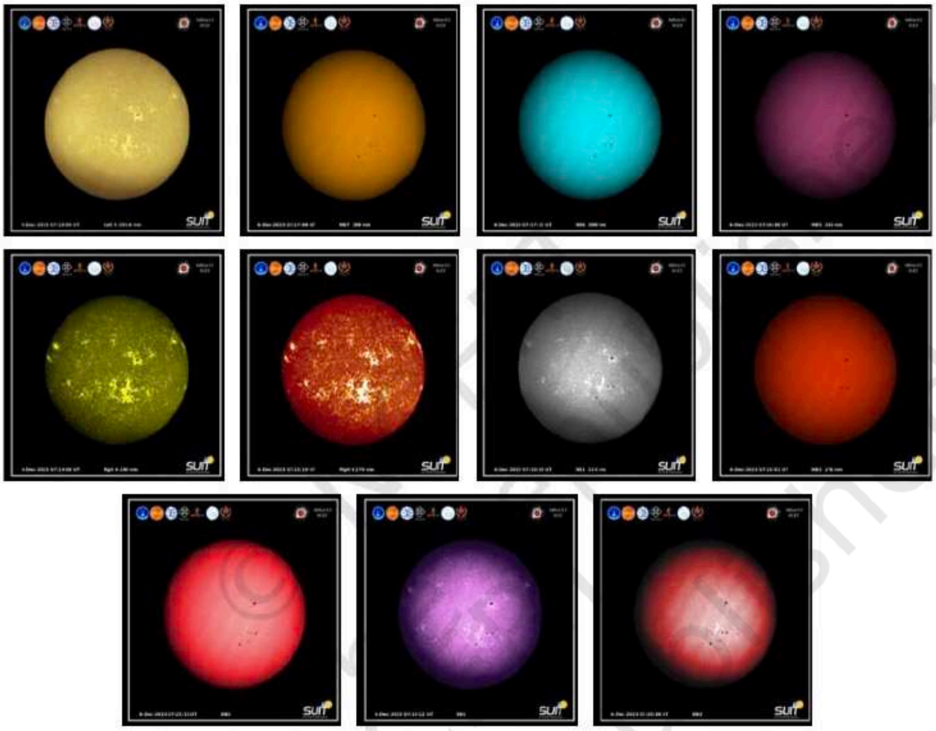

आदित्य-एल 1 द्वारा भेजे गए सूर्य के ग्यारह रंगों वाले चित्र (इसरो से साभार)

सिल्विया : ये तो सचमुच बहुत अद्भुत चित्र हैं। आदित्य यान इतने अच्छे चित्र लेता है, यह एक चमत्कार-सा लगता है। अध्यापक जी, चित्र लेने के अतिरिक्त आदित्य-एल 1 और क्या-क्या करेगा?

अध्यापक : बहुत अच्छा प्रश्न पूछा। सूर्य पर गैसों की टकराहट से बहुत विशाल विस्फोट होते हैं। इनसे बहुत सारी ऊर्जा निकलती है। जैसे धरती पर आँधियाँ आती रहती हैं, वैसे ही सूर्य की ऊर्जा से भी आती रहती हैं। सूर्य पर आने वाली आँधियों और उससे पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों के विषय में आदित्य-एल 1 में लगे उपकरणों द्वारा हमें जानकारी मिलेगी।

कुछ विद्यार्थी : यह तो सचमुच बहुत अच्छा यंत्र है। (कक्षा में बातचीत होने लगती है।)

दीपक : अध्यापक जी, मुझे तो ये सब अद्भुत बातें जानकर बहुत आनंद आ रहा है। मैं तो बड़ा होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगा और दूर-दूर के तारों के विषय में पढ़ूँगा और वहाँ अंतरिक्ष यान भेजूँगा।

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 108 25-06-2026 16:39:11

सुमन : अध्यापक जी, मैं भी बड़ी होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगी। मुझे आज के पाठ में बहुत आनंद आया। मैं तो ऐसा अंतरिक्ष यान बनाऊँगी जिसमें बैठकर मैं एल 1 बिंदु से सूर्य को स्वयं जाकर देख सकूँ।

अन्य विद्यार्थी : हम भी ऐसा ही अंतरिक्ष यान बनाएँगे!

अध्यापक : आप सब लोग बड़े मेधावी हैं। आप बहुत अच्छे वैज्ञानिक बनेंगे, मुझे पूरा विश्वास है। पर बच्चो, अपने अंतरिक्ष यान में मुझे ले जाना मत भूलना।

बातचीत के लिए

1. अगर एक दिन के लिए धरती तक सूर्य का प्रकाश और ऊष्मा न पहुँचे, तो क्या होगा?
2. पाठ में हमने पढ़ा कि सूर्य एक तारा है। आकाश में अनगिनत तारों के बीच यह तारा हमारी धरती के लिए विशेष क्यों है?
3. भारत में मनाए जाने वाले ऐसे त्योहारों और मेलों के बारे में बताइए जिनका संबंध सूर्य एवं चंद्रमा से है।

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए।

1. आदित्य-एल 1 ने इनमें से कौन-सा कार्य किया है?
   (क) सूर्य की सतह पर उतरा है।
   (ख) पृथ्वी जैसे किसी अन्य ग्रह की खोज की है।
   (ग) सूर्य के ग्यारह रंगों के आकर्षक चित्र भेजे हैं।
   (घ) ग्रहों और नक्षत्रों के प्रभाव का अध्ययन किया है।

© NCERT not to be republished

2. हमारे देश के लिए 2 सितंबर 2023 का दिन विशेष क्यों है?
   (क) इसरो की स्थापना की गई थी।
   (ख) गगनयान का सफल प्रक्षेपण किया गया था।
   (ग) चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण किया गया था।
   (घ) आदित्य-एल 1 का सफल प्रक्षेपण किया गया था।

3. दिनेश के पिताजी ने सूर्य की ओर देखने के लिए मना क्यों किया?
   (क) इससे मन में घबराहट बढ़ सकती है।
   (ख) इससे आँखों को नुकसान हो सकता है।
   (ग) इससे एकाएक बहुत पसीना आ सकता है।
   (घ) इससे चेहरे की चमक फीकी पड़ सकती है।

4. 18वीं सदी में इटली के एक महान गणितज्ञ 'लगरांज' की एक बड़ी उपलब्धि क्या थी?
   (क) पृथ्वी से सूर्य के बीच की सही दूरी बताई थी।
   (ख) सूर्य के बारे में कई सटीक जानकारियाँ दी थीं।
   (ग) हाइड्रोजन और हीलियम गैसों के बारे में बताया था।
   (घ) सूर्य और पृथ्वी के केंद्रों को जोड़ने वाली रेखा खोजी थी।

5. सूर्य पर गैसों की टकराहट का क्या परिणाम होता है?
   (क) समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठती हैं।
   (ख) पूरा आकाश बादलों से भर जाता है।
   (ग) धरती पर धूल भरी तेज आँधियाँ चलती हैं।
   (घ) इस विशाल विस्फोट से बहुत सारी ऊर्जा निकलती है।

संकेत– *आपके अनुसार जो सबसे उपयुक्त उत्तर है, उसे चुनिए। फिर अपने साथियों के साथ उसे साझा कीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या उन्होंने भी वही उत्तर चुना है। एक-दूसरे से अपने उत्तर चुनने के कारणों की चर्चा कीजिए।*

not to be republished © NCERT

Final Chapters Final.indd 110 25-06-2026 16:39:12

सोचिए और लिखिए

1. सूर्य को आग का गोला क्यों कहा जाता है?
2. "सूर्य पर गैसों की टकराहट से बहुत विशाल विस्फोट होते हैं।" इन विस्फोटों का क्या परिणाम होता है?
3. आदित्य-एल 1 के द्वारा भेजे गए सूर्य के सुंदर, रंगीन चित्रों से वैज्ञानिकों को क्या लाभ हुआ है?
4. यदि आप बड़े होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बने तो कौन-कौन से कार्य करना चाहेंगे?

मिलान करें

निम्नलिखित पंक्तियों को उनके भावों से जोड़िए —

पंक्तियाँ	स्तंभ-दो
लगरांज	हाइड्रोजन और हीलियम नामक गैसों का एक विशाल गोला
आदित्य-एल 1	भास्कर, दिनेश, सूरज, रवि आदि
सूर्य	सूर्य पर आने वाली आँधियों और उससे पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन
आदित्य के अन्य नाम	इटली के एक महान गणितज्ञ

भाषा की ओर

उच्चारण की बात

"मैं तो बड़ा होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगा और दूर-दूर के तारों के विषय में पढ़ूँगा और वहाँ अंतरिक्ष यान भेजूँगा।"

पाठ के इस वाक्य में बड़ा और पढ़ूँगा शब्दों को रेखांकित किया गया है। इनका उच्चारण कीजिए।

© NCERT not to be republished

‘ड़’ और ‘ढ़’ वर्ण ‘उत्क्षिप्त वर्ण’ कहलाते हैं। ‘उत्क्षिप्त’ का अर्थ होता है— फेंकना। उच्चारण करते समय ये वर्ण जीभ द्वारा बाहर की ओर फेंके जाते हैं। आगे के दाँतों के निकट मुँह के ऊपरी खुरदरे भाग से ‘ड़’ तथा मुँह की छत यानी बिल्कुल ऊपर की ओर जीभ का स्पर्श करवाकर ‘ढ़’ का उच्चारण किया जाता है। इन दोनों के उच्चारण में थोड़ा अंतर होता है। आइए, इस अंतर को खेल-खेल में गाकर समझें—

ड़ और ढ़ में अंतर

ड़ व ढ़ वर्णों में बच्चो, अंतर क्या है जानें हम।
ये दोनों हैं जुड़वाँ-से पर, कुछ अंतर पहचानें हम।।
किसी शब्द में सबसे पहले कभी नहीं आते हैं ये।
बाकी किसी जगह भी आकर झट घुल-मिल जाते हैं ये।।
दाँत से ऊपर मुँह का हिस्सा ड़ को इससे प्यार है जी।
मुँह की छत पर ढ़ का अपना पूरा ही अधिकार है जी।।
बादल गड़-गड़, बिजली कड़-कड़, गड़-गड़, कड़-कड़ शोर हुआ।
बोला ‘ड़’ उस घड़ी जीभ ने बोलो मुँह किस जगह छुआ।।
चढ़ें चढ़ाई, करें पढ़ाई, कढ़ी बनेगी, चढ़ी कड़ाही।
ढ़ में जीभ खेलती देखो, मुँह की छत संग छुअम-छुआई।।
कड़वा काढ़ा, काढ़ा कड़वा, कड़वा काढ़ा, कौन पिए?
गाते-गाते देखो बच्चो, ड़-ढ़ दोनों सीख लिए।।

1. नीचे दोनों वर्णों से बने कुछ शब्द दिए गए हैं। उन्हीं के आगे बने रिक्त स्थानों में अपने शब्द भरिए—

‘ड़’ के प्रयोग वाले शब्द—

सड़क, कड़वा, मकड़ी, ..., ..., ...

© NCERT not to be republished

'ढ़' के प्रयोग वाले शब्द—

पढ़ना, चढ़ाई, काढ़ा ...., ..., ...

विशेष : यदि इन वर्णों से बने शब्द आपकी मातृभाषा में भी हैं, तो उनके बारे में भी बताइए।

निपात

"मैंने तो अपने माता-पिता के बचपन के चित्र भी देखे हैं पर सूर्य का भी चित्र होता है, मुझे तो पता ही नहीं था।"

वाक्य में प्रयुक्त इन रेखांकित शब्दों को देखिए। ये वाक्य के अर्थ को बल दे रहे हैं। इन छोटे-छोटे शब्दों को 'निपात' कहा जाता है। एक उदाहरण देखिए—

मैं बड़ी होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगी। (सामान्य वाक्य)

मैं भी बड़ी होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगी। (अर्थ– कुछ अन्य भी अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनेंगे)

मैं बड़ी होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक ही बनूँगी। (अर्थ– कुछ अन्य नहीं बनूँगी)

© NCERT not to be republished

2. आइए, नीचे दिए गए वाक्यों में ही, भी, तक, तो, मात्र आदि का प्रयोग करके अर्थ को मिले बल पर विचार करें—

(क) बहुत .... अच्छा प्रश्न पूछा।

(ख) मुझे .... ये सब अद्भुत बातें जानकर बहुत आनंद आ रहा है।

(ग) आदित्य-एल 1 ने सूर्य के कुछ अद्भुत चित्र भेजे हैं, उन्हें यदि आप लोग देखेंगे तो देखते .... रह जाएँगे।

(घ) हमें .... यह पाठ पढ़ना .... नहीं है बल्कि इसे अच्छी तरह समझना .... है।

(ङ) पत्र लिखना तो दूर तुमने मुझे फोन .... नहीं किया।

Final Chapters Final.indd 113 25-06-2026 16:39:12

विराम चिह्न

हमें जानें —

भाषा की गाड़ी में अपना, ब्रेक सरीखा होता काम।
छोटे-छोटे चिह्नों वाला, भाषा का मैं मित्र 'विराम'।।

3. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए —

(,) (!) (?) (।)

(क) यह अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में कब भेजा गया था......

(ख) क्या तुम्हें बोलने में भी कठिनाई हो रही है......

(ग) वाह...... हमें इस पाठ को पढ़ने में बहुत आनंद आया......

(घ) धरा......वसुधा......पृथ्वी आदि धरती के ही अन्य नाम हैं......

शब्द पहचान

4. नीचे दिए गए पाठ के अंश से दो-दो संज्ञा (नाम वाले शब्द), सर्वनाम (संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द), विशेषण (संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द) और क्रिया (कार्य के होने या करने का बोध कराने वाले शब्द) शब्द छाँटकर लिखिए —

बहुत अच्छा प्रश्न पूछा। सूर्य पर गैसों की टकराहट से बहुत विशाल विस्फोट होते हैं। इनसे बहुत सारी ऊर्जा निकलती है। जैसे धरती पर आँधियाँ आती रहती हैं, वैसे ही सूर्य की ऊर्जा से भी आती रहती हैं। सूर्य पर आने वाली आँधियों और उससे पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों के विषय में आदित्य-एल 1 में लगे उपकरणों द्वारा हमें जानकारी मिलेगी।

संज्ञा – ....

सर्वनाम – ....

विशेषण – ....

क्रिया – ....

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 114 25-06-2026 16:39:12

पाठ से आगे

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना कीजिए कि आप वैज्ञानिक बन गए हैं और आपको सूर्य के रहस्य जानने के लिए भेजा जा रहा है, तब आप—

   (क) सूर्य की गर्मी से बचने के लिए किस तरह की व्यवस्था करेंगे?

   (ख) सूर्य से जुड़े कौन-से रहस्यों को खोजने का प्रयास करेंगे?

   (ग) क्या सूर्य से एक न एक दिन हाइड्रोजन और हीलियम गैसें समाप्त हो जाएँगी? ऐसी स्थिति में हमारी धरती का क्या होगा?

सृजन

यदि आपको विद्यालय में आदित्य-एल 1 के वैज्ञानिकों से मिलने का एक अवसर मिलता है तो आप उनसे कौन-से प्रश्न पूछना चाहेंगे?

उदाहरण— आपसे मिलकर मुझे और मेरे साथियों को बहुत अच्छा लग रहा है। क्या आप हमें बताएँगे कि वैज्ञानिक बनने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है?

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

आदित्य-एल 1 और सूर्य की भेंट

यहाँ पर आदित्य-एल 1 और सूर्य के बीच बातचीत हो रही है। आप इस बातचीत को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाइए—

सूर्य : अरे, आप कौन हैं? आपको पहले कभी नहीं देखा!

आदित्य-एल 1 : मैं आदित्य-एल 1 हूँ। मैं आपको जानने और समझने आया हूँ।

सूर्य : ....

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 115 25-06-2026 16:39:12

आदित्य-एल 1 : ....

सूर्य : ....

आदित्य-एल 1 : ....

परियोजना

यह पाठ संवाद शैली में लिखा गया है। आप अभिनय के साथ इसे कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। इस संवाद में आप अपनी कल्पना से बदलाव भी कर सकते हैं और कोई नया पात्र भी जोड़ सकते हैं। इसमें आप अपने शिक्षक की भी सहायता ले सकते हैं।

खोजबीन

1. हमारी पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा आदि की आयु के बारे में वैज्ञानिकों का क्या मानना है? क्या इनकी भी आयु निश्चित है या ये कभी नष्ट नहीं होंगे? पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोतों से इनका पता लगाइए। आप इसमें अपने विज्ञान, भूगोल शिक्षक या अभिभावक की सहायता ले सकते हैं।
2. नीचे दी गई एनसीईआरटी की आधिकारिक यू-ट्यूब इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का प्रयोग करके आप इस पाठ के बारे में और अधिक जान समझ सकते हैं।

   (i) हमारा आदित्य — वीडियो, सीआईईटी–
   https://www.youtube.com/watch?v=lKgkhYBVB9Y&t=1s

   (ii) हमारा आदित्य— पी.एम., ई-विद्या चैनल की प्रस्तुति
   https://www.youtube.com/live/Nj8LepkcufY?feature=shared

not to be republished © NCERT

Final Chapters Final.indd 116 25-06-2026 16:39:12

शब्द-संपदा

शब्द	अर्थ	आपकी भाषा में शब्द
अभिवादन	आदर के साथ प्रणाम या नमस्कार	
उत्तम	अच्छा, श्रेष्ठ	
आश्चर्य	हैरानी, अचरज	
धरा	पृथ्वी, धरती	
विशाल	बहुत बड़ा	
कठिनाई	मुश्किल, दिक्कत, बाधा	
रहस्य	छिपी हुई बात, भेद	
उद्घाटन	किसी बात को सामने लाना या प्रकट करना	
कौतूहल	कुछ नया जानने की तीव्र इच्छा, उत्सुकता	
पर्याप्त	जितनी जरूरत हो, आवश्यकता के अनुरूप	
अद्भुत	अनोखा, निराला	
अनन्य	जिसके जैसा कोई दूसरा न हो, एकमात्र, अद्वितीय	
विशिष्ट	विशेष, सबसे अलग	
संतुलित	बराबर, न कम न ज्यादा	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 117 25-06-2026 16:39:13

प्रक्षिप्त	अंतरिक्ष में सही स्थान पर स्थापित करना, जोड़ा हुआ	
परिक्रमा	चारों ओर चक्कर लगाना	
प्रक्षेपण	रॉकेट अथवा यान को अंतरिक्ष में छोड़ना/भेजना	
प्रत्यक्ष	जो ठीक आँखों के सामने हो, साक्षात	
उपकरण	यंत्र, साधन, औजार	
मेधावी	बहुत बुद्धिमान या होनहार	

© NCERT not to be republished

Final Chapters Final.indd 118 25-06-2026 16:39:13